बाई के भजन

●●●●●●●●●●●●

रचियित्री

श्रीमति विजय बाई तारण

शोभापुर (होशंगाबाद.म.प्र)

आशीर्वाद,शुध्दिकरण

अध्यात्मरत्न बाल ब्र. पूज्य श्री बसन्त जी महाराज

संशोधन सहयोग

श्री राजेन्द्र जी सुमन

संपादक-संत श्री तारण ज्योति- सिंगोड़ी (म.प्र.)

प्रकाशन सौभाग्य

गुरूतार ग्रुप

गुरूतार आश्रम शोभापुर (म.प्र.)

: बाई के भजन :

गुरूतार ग्रुप प्रकाशन

प्रकाशन वर्ष	–	संत श्री तारण तरण जयंति
तारण संवत्	–	५६५
विक्रम संवत्	–	२०७०
ईस्वी सन	–	२०१३
प्रथम संस्करण	–	१००० प्रति

मूल्य – शुध्दात्म भक्ति

प्राप्ति स्थल –
गुरूतार आश्रम शोभापुर
सम्पर्क – ९४२५६६९६६६
९९८१६९८२८२

ब्रह्मानन्द आश्रम
संत तारण तरण मार्ग पिपरिया (म.प्र)
चलितवार्ता – ९९८१२६३४४९

मुद्रक –एम. के. ऑफसेट, ए–१२१, कस्तूरबा नगर,
एम पी नगर भोपाल (म.प्र.)
मो. ९३२९४९४३८२

ॐ

वन्दे श्री गुरू तारणम्

तारण पंथ, तारण संत, तारण ग्रंथ, तारण मंत्र, तारण ध्वज, तारण मंच में पूर्ण आस्थावान तारण समाज की आदर्श विदूषी साधिका मातुश्री विजय बाई जी तारण हैं।

आपने अपनी अध्यात्म साधना में भजनों को सृजित किया है। जो आगम और अगम का मंथन है, आगम में तत्व चर्चा है, और अगम तत्व चर्या है, आगम में भजनों की लाईन हैं, शब्द हैं, पर अगम में भजन की अध्यात्म की गहराई है।

यह भजनों का अध्यात्म संग्रह समस्त विश्व वासियों को तारणहार बने, भजनों को पढ़कर अपने अगम स्वरूप में डूबें, यही मंगल भावना है, इस कार्य में ब्र. भैया आलोक जी तारण का योगदान भी सराहनीय है।

साधुवाद के साथ––––––

ब्र. आत्मानन्द
वर्षावास चौरइ (छिंदवाड़ा)म.प्र.
२९/०७/२०१३

प्रेरणा

अंतर के पट खोल

भक्ति पुष्प जब हृदय सरारेवर में पुलकित हो खिलते हैं।
वहीं स्वानुभव अमूल्य मोती ज्ञान सिंधु में मिलते हैं ॥
देव धर्म सदगुरू की महिमा समकित को उपजाति है।
शुध्द परिणति राम वाण सी, मोक्ष महल पहुंचाती है ॥
भव तन भोगों से विरक्त मन, निज का चिंतन करता है।
ज्ञान ध्यान साधन आराधन, रत हो मुक्ति वरता है ॥
चिंता मणी सा दुर्लभ जीवन, संयम तप में हेतु है।
चतुर्गति के दु:ख निवारण, मोक्ष प्राप्ति में सेतु है ॥
उक्त सभी शाश्वत रहस्य से, भरे हुए हैं सभी भजन।
त्याग भक्ति वैराग्य धर्म अध्यात्म, साधना के दर्पण ॥
माताजी विजय बाई जी तारण, शोभापुर के हैं ये बोल।
प्रेरित करते सदा सभी को, रे मन अंतर के पट खोल ॥
मुक्ति विजय भजनों की माला, देती है पावन संदेश।
राग रहित हो निज में देखो, अपने में अपना परमेश ॥
विस्तृत है आलोक लोक में, शुध्द ज्ञानमय परम पवित्र।
बांध सकें नहीं शब्दों में निज स्वानुभूति के पावन चित्र ॥
हो सर्वत्र सदा ही मंगल पूर्ण विश्व, सब मंगलमय हो।
भजनो में अबगाहन कर हर जीव दु:ख रहित और निर्भयहो
मंगलमय प्रकाशन हेतु शुभकामना– ब्र. बसंत
पिपरिया ०४/०७/२०१३

ॐ

"मेरी भावना"

आदरणीय बुआजी द्वारा सहज अन्तर्मन से निकले शब्द गीत बन गये, इन रचनाओं में स्व–पर कल्याणार्थ की ही आद्योपान्त प्रेरणा है। और उनके मधुर स्वर से सुनकर मन आनन्द विभोर हो जाता है।

वाल्यकाल से ही सुसंस्कारों के साथ गुरू जनों का सानिध्य उनका मार्ग दर्शक बना, इन अध्यात्मिक रचनाओं से स्वयं तो लाभान्वित हैं ही, और हम सभी के लिये भी आत्म कल्याण में प्रेरक हैं।

इन भजनों में शुध्दात्मा की अर्चना और वीतराग की वन्दना है, सभी इस कृति का सद उपयोग कर आत्मिक आनन्द लाभ लें। ऐसी "मेरी भावना" है।

वीर शासन जयंति
२३/०७/२०१३
मंगलवार

पं. नीलेश कुमार जैन
सोहागपुर
(म.प्र.)

शब्द-शब्द में अमृत सिंधु

अपने चिन्मय की सत्ता का, बन जाता जो अधिकारी ।
उसका चिंतन,मनन,अनुभवन हो जाता है सुख कारी ॥
श्रीमति विजय बहिन जी की, अनुभूति जिसमें है प्रत्यक्ष ।
गीतों में लयबध्द निरूपित, व्यक्त हुआ बस एक लक्ष्य ॥
स्वान्त: सुखाय आत्म गुण माला, जिसने ध्याया उसने पाया ।
होता वही सुशोभित इससे, जिसने इसमें ध्यान लगाया ॥
शब्द-शब्द है - अमृत सिंन्धु, बिन्दु-बिन्दु में है रस धार ।
जो भी पान करेगा इसका, निश्चित होगा वह भव पार ॥
शुभ मंगल है साथ उसी के, जो रहता चिन्मय के साथ ।
जिसने छोड़ा साथ वही तो, रहता जग में सदा अनाथ ॥
श्री जिन तारण तरण देव की, परम कृपा का यह विस्तार ।
सहज सुलभ यह अद्‌भुत संग्रह, बतला रहा मोक्ष का द्वार ॥
सदगुरू की सुन्दर बगिया में, ऐसे खिलें सुमन हजार ।
ऐसी दिव्य सुरभि की ही, रहे प्रतीक्षा बारम्बार ॥

शुभाकांक्षी

राजेन्द्र सुमन
संपादक-संत श्री तारण ज्योति
सिंगोड़ी (छिन्दवाड़ा) म.प्र.

कन्छेदीलाल जैन
।। सत्यमेव जयते ।।
पूर्व अध्यक्ष - नगर पालिका परिषद
अध्यक्ष - बासौदा व्यापार महासंघ
गंजबासौदा, जिला विदिशा (म.प्र.)

कार्यालय -
मे. देशना आभूषण भंडार
मेन रोड, गंजबासौदा (विदिशा)
फो. : 221027, मो. : 98276 10110

क्रमांक .... दिनांक 09/8/2012

प्रिय भाई ब्र. श्री आलोक जी,

सादर जय तारण तरण

श्रद्धेय मातुश्री 'बाई' द्वारा रचित आध्यात्मिक भजनों का संग्रह प्रकाशित होने जा रहा है, यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। परम पूज्य सद्गुरु तारण तरण स्वामी जी के स्वानुभव से प्रस्फुटित आध्यात्मिक भावनाओं के रहस्यों को आत्मसात कर गुरुवाणी को शब्दों में संजोकर श्रद्धेय 'बाई' अध्यात्म प्रेमी समाजिक बन्धुओं को भजनों के माध्यम से अनुपम सौगात दे रही हैं। श्रद्धेय बाई को समर्पित है -

गुरु तारण की भावना, राग, रागिनी की प्रतिध्वनि है "बाई"।
भजन लिखने, गुनगुनाने और गवाने की, प्रेरणा भी उन्हीं से है पाई ॥
कुशल गृहणी, पत्नि, माँ और गृहस्थ जीवन की परिभाषा है "बाई"।
ज्ञान को आलोकित करने आलोक दिया, वह भी बाई की है सच्ची पुण्याई ॥

आदरणीय बाई की लेखनी अनवरत चलती रहे, वह दीर्घायु हों। इसी मंगल भावना के साथ श्रद्धेय बाई को सादर प्रणाम। आपके सुदीर्घ जीवन एवं उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना के साथ -

आपका ही
कन्छेदीलाल

"वन्दे श्री गुरु तारणम्"

'हृदयोदगार'

आत्मानुभूति से अनूदित, आनन्दामृत भजन की स्वर लहरियों के माध्यम से, प्रस्फुटित हो, स्वान्त: सुखाय सुख सागर में निमग्न हो जाना स्वाभाविक है। जिससे अध्यात्म का रसास्वादन होता है, भजनों का प्रयोजन भी यही है, कि अपनी बात को कम शब्दों में अधिक अर्थ लेकर सहजता से आत्मसात हो, भजन का शाब्दिक अर्थ भी यही है ...

भ---भक्त ज---ज्योति न---निमग्नता

अर्थात्-भक्त ज्योतिर्मय आत्म स्वरुप में निमग्न होता है, तो आत्मानुभूति भजनों के रूप में बह उठती है, और संगीत के माध्यम से तल्लीनता प्रगाढ़ हो जाती है, श्री गुरु महाराज की फूलनाएँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

श्री गुरु महाराज के अनन्य भक्त *'पं.श्री चम्पालाल जी'* की नातिन *'श्रीमति विजय बाई'* में बचपन से ही धर्म के सुसंस्कार थे और *'श्री खूब चन्द जी'* जैसे ज्ञानी-ध्यानी अध्यात्म प्रेमी पति के सानिध्य में वे सुसंस्कार प्रस्फुटित हुए और उनके विछोह को अध्यात्म ने संबल प्रदान किया और अपने आपको गुरुदेव और अपनी आत्म भक्ति में समर्पित कर दिया तथा उनकी आत्मा में प्रीति उनके गीत बन गई......... और ***स्वान्त: सुखाय भजनों की श्रृंखला*** शुरु हो गई-

' बेटी '

रानी-राजेन्द्र देवनगर(देहगांव)

"नमामि गुरु तारणम्"

'भजनों की सरिता का नीर, किया मन प्रक्षालित'
क्योंकि उसमें अर्थ है, आत्मा का अर्ध्य है।
जो प्रेरणा को कर रहा संचालित॥

मेरी माँ के द्वारा स्वतः निकले आत्मानुभूति युत शब्द भजनों की माला के पुष्प बन गये,

पूज्या माता जी द्वारा रचित सरलता-सरसता और मधुरता की त्रिवेणी में, अध्यात्म के अमृत का संगम, भावान्जलि से प्रवाहित होकर वीतरागत्व की स्तुति-चिंतन-मनन-दोहन में परिणमित होकर भजनों में समाया है।

भजन सबको ही प्रिय होते हैं, अधिक बातको कम शब्दो में कहना पद्य की अपनी विशेषता है, चाहे संकीर्तन कीजिये या अकेले ही गुनगुनायें, आनन्द ही आनन्द है। स्वाध्याय वत संपूर्ण, एकबार अवश्य पढ़िये, हम डूबते हुए भी, उतराते नजर आयेंगे, सबसे हटकर.....

पूर्व के संस्कार, श्रीसंघ का सानिध्य पाकर, ज्ञान के अंकुरण के रूप में उदित हुआ और भजन माला की अमृत धारा बन गया। बनाये नही, बनते गये साढ़े चार हजार भजन और उन अमृत तुल्य भजनों की श्रृंखला में से कुछ पुष्पों की माला अपने कर कमलों में है

आत्मा की अर्चना-भक्ति लिखते-पढ़ते-गाते हुए, माताजी अपने स्वाध्याय की पूर्ति भी कर लेतीं हैं, गुरु भक्ति और धर्म की श्रध्दा से संयुक्त उनकी आत्म भावना की ज्ञान गंगा में अवगाहन कर सभी जीव लाभान्वित हों, इसी शुभाषा के साथ.....

पुत्र
आलोक

अपनी बात

ॐ नम: सिध्दम्
स्तौमि श्री जिन तारणम्

देव गुरु धर्म तीर्थ के पावन प्रतीक, त्रिकाल के अनन्त सिध्द भगवंतों को,निज शुध्दात्म देव को, मेरा मन-वचन-काय से, त्रिकाल नमन.......

वीतराग वन्दनार्थ

शब्दों की सीमा, किन्तु भावों की पूर्ण पवित्रता के साथ, ह्रदय के उदगार, आरती-प्रभाती-स्तुति-भजन के रूप में ***श्री गुरु महाराज*** के चरणों में सादर निवेदित हैं।

सविनय जय तारण तरण

सोलहवीं शताब्दी में हुए अध्यात्म के क्रान्ति कारी संत मेरे परम आराध्य गुरु, ***'श्रीमद जिन तारण तरण'*** की दिव्य देशना से अन्त:करण पावन हो गया.......

शत-शत नमन......

महान संगीतज्ञ श्री गुरू देव की कृपा का अंश मुझ में भी समाया है सौभाग्य है मेरा ।

मेरे पूज्य दादाजी-सेठ ***पं. श्री चम्पालाल जी*** सोहागपुर, सहज-सरल धर्मनिष्ठ माता पिता सेठ ***श्री हुकमचन्द जी, श्रीमति राज बाई*** के सुसंस्कार विरासत में मिले । ससुरजी ***दानपत चौधरी श्री हजारीलाल जी*** का आशीर्वाद, साहित्याचार्य पतिदेव ***श्री खूबचन्द जी*** ने मेरी साहित्य की अभिरुचि में अपने सत साहित्य का संगम प्रदान किया। अस्तु.....

पूज्य दादा जी द्वारा प्रकाशित ग्रंथ ***'तारण तत्व प्रकाश'*** से जीवन के अध्याय में एक नया मोड़ आया, ज्ञान का अभ्युदय हुआ। आत्मा की अभिरुचि की प्रशस्ति में, सतों की सुसंगति का सदैव योगदान रहा।

प्रेरणा स्रोत-पूज्य ***श्री गुलाबचन्द जी*** महाराज, पूज्य ***श्री जयसागर जी*** महाराज, पूज्या ***श्री विमला देवी जी***, पूज्य ***श्री ज्ञानानन्द जी*** महाराज, एवं वर्तमान के श्रीसंघ के समस्त साधकों के सानिध्य से, वीतराग शुध्दात्म वंदना के कुछ राग भाव प्रगट हुए।

'मेरे हाथ लगे मुझे पावन, तेरी स्तुति के लिपी गान से'

श्री सदगुरु की कृपा और सभी की स्नेह मयी प्रेरणा के आशीष से प्रेरित-

'मैं साहस आज बटोर खड़ा'

मेरे अल्प भावों की गूँज को, आपकी स्वर लहरी में पिरोने का।

भूल होना मनुष्य का स्वभाव है, मैं भी इसका अपवाद नहीं। किन्तु **'सुधी पढ़ेंगे भूल सुधार'** बस डूब जायें हम, अपने इन भावों में, क्योंकि -आपके ही अपने भाव तो हैं ये।

'मेरा नहीं कुछ भी यहाँ, सब श्री सदगुरु का आशीष है'

जीवन की व्यस्तता में पाठ-भजन कीर्तन चाहे सामूहिक हों या एकाकी। वातावरण की सरसता के साथ निश्चित ही असीम आत्म शान्ति प्रदान करते हैं। आइये हम सब आत्म स्तवन कर आत्म लाभ लें।

ये सारे ही भजन स्व संबोधन हैं, स्वात्म कल्याण हेतु ***'निकले स्वत: स्व गीत'*** क्योंकि- ***'जव भी डूवे चिंतन में कुछ लेकर ही लौटे'*** स्वरुप साधना हमें गन्तव्य तक पहुँचाये, इन्हीं सुमंगल भावों के साथ ....***जय तारण तरण***

(**अनुरोध -क्षमा कीजिये**-रचनाओं में कहीं-कहीं उन मनीषियों के शब्द भी आयें हैं, जो मुझे प्रिय लगे और मेरे मार्ग दर्शक बने हैं।)

विजय बाई तारण
शोभापुर (म.प्र.)

''न छन्द कविता-पद्य मात्रा का मुझे कोई ज्ञान है।
उठते हुये उदगार के बस, ये लिपी बध्द गान हैं''

भावों की अभिव्यक्ति, शब्दों की गागर में से
छलक पड़ीं कुछ बूदें, सागर में मोती जैसे

मुक्तक (१)
संसार के मरुस्थल में, सिध्दों के चरण मिले,
चलना है मुझे उन पर, कि मुक्ति की गैल मिले।

(२)
आत्मा का ध्यान-मनन-चिंतन, एक तीरथ का फल देता है।
इस तीरथ में स्नान करो, जो कर्म मलों को धोता है।।

(३)
दिव्य पुष्पों की वर्षा हो रही है, शब्दों के माध्यम से।
आत्मा की अर्चना है, भावों के भाने से।।
तारण-तरण वाण्डमय की महिमा को कोई शब्द नहीं।
अव्यक्त है, अवक्तव्य है, अनिर्वचनीय है जानने से।।

(४)
शब्दों के जाल में नहीं उलझना है।
भावों के बहाव में नहीं बहना है।।
मौन का आश्रय लो विजया तारण।
चिदानन्द के चिंतवन में ही रहना है।।

(१) मंगल १

वाणी मँगल छदमस्थ की, गूंज बने पावन।
सबके अन्तर आतम में, प्रगटे समकित सावन।।
स्वानुभूति का पथ प्रशस्त हो, डूबे निज आतम।
अहा-अहो उस अमिय रसायन, का सब करें रसास्वादन।।

(२) मंगल २

माँ जिनवाणी सरस्वती, जिनवर देव प्रणीत।
वीतराग वाणी नमूँ, हो जावें भव छीन।।
जिनवाणी जिन को मिली, वे हैं भवि धन्य धन्य।
जिनके मन-आचरण बसी, उनका क्या वर्णन।।
वे होंगे अरिहंत-सिध्द, तीर्थंकर गुण धाम।
शुध्दातम हैं वे स्वयं, परमातम उपनाम।।

(३) तारण वंदना

युगों-युगों तक ज्ञान तुम्हारा, देगा हमको सत पथ।
वीतराग अध्यात्म प्रणेता, तारण-तरण नमस्कृत।।
युगों-युगों तक..........

१. शुध्दातम का शंखनाद किया, आप तरे पर तारे।
तीर्थंकर भगवन्तों की, विशुध्द परम्परा के नारे।।
जग जीवों में हुआ जागरण, मिला धर्म का अर्थ।
वीतराग अध्यात्म प्रणेता, तारण-तरण नमस्कृत।।
युगों-युगों तक..........

२. मंगल मय पथ को प्रशस्त कर, आप बने आदर्श।
परमेष्ठी पद हुआ अलंकृत, आप हुए समदर्श।।
त्रिकालवर्ती जगत परिणमन, निश्चित जिनवर कथ।
वीतराग अध्यात्म प्रणेता, तारण-तरण नमस्कृत।।
युगों-युगों तक..........

(१)

भजनों की श्रंखला शुरु हो गई।
आत्मा से प्रीत मेरी गीत बन गई ।।

१. भजनों में गाया है, आत्मा का वन्दन।
आत्मा है चन्दन, कर्म का निकन्दन ।।
आत्म धर्म पाल , मेरी जीत हो गई ।
आत्मा से प्रीत मेरी गीत बन गई ।।
भजनों की श्रंखला....

२. भजनों की अंजुली, भावों की प्राँन्जलि ।
भजनों की सरिता, बन गई गीतांजलि ।।
शुभ भाव-शुध्द भाव, मीत बन गई ।
आत्मा से प्रीत मेरी गीत बन गई ।।
भजनों की श्रंखला....

३. डूब जाऊँ भावों की , शुध्दता में बीज सींच।
शुध्दता की शुभ्रता, देखी मैंने आँख मींच ।।
अब न देखूँ जग कलाप, तो बात बन गई।
आत्मा से प्रीत मेरी गीत बन गई ।।
भजनों की श्रंखला....

४. गीतों की सरिता का, निरंतर प्रवाह हो ।
अंतर में कल्मष, कषायों का अभाव हो ।।
शून्य में स्वानुभूति, सत्ता मिल गई ।
आत्मा से प्रीत मेरी गीत बन गई ।।
भजनों की श्रंखला....

(२)

१. जो कुछ भी लिखा मैंने, वो खुद को ही सुनाया है।
न दुनियाँ को बताया है, न औरों को चेताया है ।।
२. स्वयं में ही भरी भूलें, किसी को हम कहेंगे क्या।
जब सम्बोधन लगे पर का, वो आतम को चेताया है ।।
३. हुईं जो भूल लिखने में, शब्द अरु अर्थ-भावार्थ में।
सभी से हैं क्षमा प्रार्थी, यही मन गुनगुनाया है ।।
४. देव-गुरु-धर्म-आतम का, किया वन्दन मेरे दिल ने।
न छंद अरु शब्द,मात्रा है, भावों में परिपूर्ण भाया है ।।
५. यही आशीष श्री गुरु का, और ज्ञानानन्द गुरुवर का।
निजातम की ही भक्ति ने, स्वत: स्व गीत गाया है ।।
जो कुछ भी लिखा मैंने, वो खुद को ही सुनाया है।
न दुनियाँ को बताया है, न औरों को चेताया है ।।

मुक्तक

लिख लिख पुथियाँ भर गईं, हिय उपजत नहीं ज्ञान ।
निज आतम को जान लिया, पर दृढ़ता क्यों नहीं आन ।।
दृढ़ता क्यों नही आन, मोह का राज विराजा ।
उसके संगी साथी, तम सैन्य का बाजे बाजा ।।
लो मुक्ति विजय अभियान, और गुरुवाणी का आव्हान ।
हो सम्यक धन, पुरुषार्थ सबल, नित उपजत आतम ज्ञान ।।

(३)

मेरी वाणी हुई पुनीता, तेरे मंगल मय गुण गान से।
तेरी स्तुति करता हूँ मैं, शुध्द हृदय-मन प्राण से॥

१. सौ इंद्रों के इंद्र देव, करबध्द खड़े तेरे चरणों में।
मैं सोच-सोच कर मंत्र मुग्ध, अहिलौकिक दृश्य नयन-मन में॥
मेरा हृदय हुआ है पावन, तेरे नाम-मंत्र-जप-ध्यान से।
मेरी वाणी हुई पुनीता, तेरे मंगल मय गुण गान से॥

२. सूर्य ज्योति नख लिये हुए, प्रभु युगल चरण जहाँ धरते हैं।
वे देव सातिशय पुण्य शाली, वहाँ स्वर्ण कमल को रचते हैं॥
मेरे हाथ लगे मुझे पावन, तेरी स्तुति के लिपि गान से।
मेरी वाणी हुई पुनीता, तेरे मंगल मय गुण गान से॥

३. हे जिनवर आप्त जिनेश प्रभु, त्रयलोक्य जगत पति एक विभु।
हे सरस्वती माँ जिनवाणी, गुरु तारण तरण महा दानी॥
यह जन्म लगा मुझे पावन, तेरे मोक्ष मार्ग वरदान से।
मेरी वाणी हुई पुनीता, तेरे मंगल मय गुण गान से॥

४. मैं शक्ति हीन, मैं भक्ति हीन, तुम चरणों का चंचरीक दीन।
पर साहस आज बटोर खड़ा, सुख पाया जैसे जलधि मीन॥
मैंने पाया सम्यक पावन, तुम वीतराग भगवान से।
मेरी वाणी हुई पुनीता, तेरे मंगल मय गुण गान से॥

(४)

विजय अब निज मन को मोड़ी,
विजय अब निज को निज में मोड़ी....

१. आयु का है अन्त सामने, परमारथ जोड़ी।
विजय अब निज मन को मोड़ी॥

२. मोह-राग की घटा तीव्र व्रण, तिलांजलि दे तोड़ी।
विजय अब निज मन को मोड़ी॥

३. काफी अनुभव किया जगत का, पानी मथ घोरी।
विजय अब निज मन को मोड़ी॥

४. भेदज्ञान तत्व निर्णय के बल, स्वानुभव में दौड़ी।
विजय अब निज मन को मोड़ी॥

५. आकुलता ही दुख की जननी, प्रशम पलंग पौढ़ी।
विजय अब निज मन को मोड़ी॥

६. क्यों बह जाते हो तुम पर में, यही भूल छोड़ी।
विजय कब निज मन को मोड़ी॥

विजय श्री हो मुक्ति पंथ प्रवेश
विजय श्री हो पूर्ण जयति स्वदेश
विजय श्री हो सार्थक स्व-संकेत
विजय श्री प्रगटे निज परमेश

(५)
अभ्युदय

मेरे जीवन में ज्ञान की भोर,
गुरु तेरी वाणी से भई ॥

१. जन्म अनन्त बीते बहिरातम बन,
आतम की महिमा से हो गये पावन।
सद ग्रन्थ बने साधन,
गुरु तेरी वाणी से भई ॥
मेरे जीवन में ....

२. भेद-विज्ञान किया जब मैंने,
आतम अनुभूति में लिया जब मैंने।
श्री संघ सहकारी भये,
गुरु तेरी वाणी से भई ॥
मेरे जीवन में ....

३. तारण तत्व प्रकाश ग्रन्थ पाया,
जीवन में मेरे अभ्युदय आया।
धर्म की नींव डल गई,
गुरु तेरी वाणी से भई ॥
मेरे जीवन में ....

४. तारण पंथ, अपनाया मैंने,
सम्यक दर्शन,पाया मैंने।
मुक्ति टिकट मिल गई,
गुरु तेरी वाणी से भई ॥
मेरे जीवन में ....

(६)
जिनवाणी

जन-जन की वाणी बने जिनवाणी ।
आराधना का मार्ग दिया तारण वाणी ।।

१. जिनवाणी हमरे हृदय, बसे गहरी इतनी ।
मन-बुध्दि सांसों में, प्राण शक्ति जितनी ।।
दुनियां की ताकत न, बदले मन अणी ।
आराधना का मार्ग दिया तारण वाणी ।।
जन-जन की ....

२. तन-मन में मेरे , अभिन्न अंग वाणी ।
स्वाध्याय-सत्संग में, केवल जिनवाणी ।।
साहित्य-साधना में, ओत-प्रोत हो जड़ी ।
आराधना का मार्ग दिया, तारण वाणी ।।
जन-जन की ....

३. जिनवाणी आस्था, अभीष्ट प्राप्ति वात्सल्य ।
तत्व रसिक गन्तव्य, आत्मा का आलय ।।
अध्यात्म ज्योतियाँ, आलोकित हो खड़ीं ।
आराधना का मार्ग दिया, तारण वाणी ।।
जन-जन की ....

तत्व निर्णय से मिला संबल, सप्त भयों के हरने का ।
पथ जिनवाणी से मिला, तत्व निर्णय से चलने का ।।

(७) (कुछ शब्द संकलित हैं)

सुषुप्त संस्कारों को जगाने वाली जिनवाणी ।
नित्य बोधक हर समय उपलब्ध है जिनवाणी ।।

१. ज्ञान का विज्ञान का वरदान है जिनवाणी ।
कलि काल में सर्वज्ञ देव की दिव्य ध्वनि जिनवाणी ।।
स्वाधीन वृत्ति पाने को ही प्राप्त हुई जिनवाणी ।
आत्मा के दर्शन में सहकारी दुर्लभ जिनवाणी ।।
सुषुप्त संस्कारों को....

२. तीर्थंकरों की दिव्य देशना जगत पूज्य जिनवाणी ।
गणधर जी भी नतमस्तक जिनेन्द्र वाणी जिनवाणी ।।
वह पुस्तक बहुमूल्य समादर जिसमें लिखी जिनवाणी।
उनका जीवन समय धन्य जो पढ़ते हैं जिनवाणी ।।
सुषुप्त संस्कारों को....

३. स्वाध्याय और मनन चिंतवन जिनके मन में जिनवाणी।
भेद ज्ञान तत्व निर्णय लेकर आचरण में जिनवाणी ।।
आगम और जिनेन्द्र शाश्वत और रहेगी जिनवाणी ।
जिनवाणी के पथ पर चलकर बनने वाला जिन स्वामी।।
सुषुप्त संस्कारों को....

श्री संघ पर श्रध्दा अर्पित, आत्म ज्ञान के अर्चन से ।
गुरु वाणी पर रहूँ न्यौछावर, तन-मन-धन के अर्पण से ।।

(८)

आत्म तत्व

आत्म तत्व स्वयंभू , सर्वज्ञ सदा शुध्द है ।
शुध्द तत्व में लीन, सदा-सदा बुध्द है ।।

१. अमरत्व से भरी, जिसकी अनोखी प्रभा ।
जिसको पाने के लिये, योगित्व मचल-मचल रहा ।।
अलख निरंजन, भव दुख भंजन, द्रव्य दृष्टि है ।
आत्म तत्व स्वयंभू , सर्वज्ञ सदा शुध्द है ।।

२. अध्यात्म का रसिक, निर्ग्रन्थ भेष धारी ।
भेद ज्ञान ज्योति,निःश्रेय पद अधिकारी ।।
शाश्वत सुखों में लीन, त्रिकाल ध्रौव्य है ।
आत्म तत्व स्वयंभू , सर्वज्ञ सदा शुध्द है ।।

३. चिदानन्द ज्ञायक, शान्ति सुख का दायक ।
पूर्णानन्द चेतन, चिंतन मणी का नायक ।।
केवल निधान भगवन, तू स्वयं सिध्द है ।
आत्म तत्व स्वयंभू , सर्वज्ञ सदा शुध्द है ।।

जिन वाणी का ज्ञान मिला हमें
तारण गुरु की वाणी से
श्री संघ ने दिया, सहज और सरलता के माध्यम से
आज के दिन से करें प्रतिज्ञा भेद ज्ञान तत्व निर्णय की
सम्यक दर्शन पाने की और तारण पथ पर चलने की

(९)

आत्म तत्व (कविता)

ब्रह्माण्ड में अखण्ड पिंड चण्ड है सुगुण करण्ड ।
रोग-शोक-हर्ष और वियोग हो या जन्म-मरण ।।
नर्क में निगोद में, स्वर्ग और मोक्ष में ।
दीन हो दरिद्र हो, राजा हो या राम में ।।
शान्ति-प्रेम और करुणा, या कि निज के ध्यान में ।
राम हो रहीम ईसा, या कि वर्ध्दमान में ।।
जान लो, पिछान लो, देखलो और मान लो ।
बह रहा है यह समय, चाहे सेतु बाँधलो ।।
एक आत्म तत्व है, वही तो ध्रौव्य सत्य है ।
निज शुध्दात्म तत्व है, यही तो सिध्द तत्व है ।।

(१०) सावधान .

सावधानः- कर्मो के बंध में, कर्म के उदय में ।
गाफिल ना हो, सावधान ।।
सावधानः- साधु का रुप देख, मूलगुण स्वरुप देख ।
पहिले करो पहिचान, सावधान ।।
सावधानः- शुध्दातम कूल हो, अहिंसा मूल हो ।
धर्म में हो गतिमान, सावधान ।।
सावधानः- वीतराग सर्वज्ञ हो, हित उपदेशी सत्य हो ।
जिनवर प्रणीत देव जान, सावधान ।।
सावधान- सावधान- सावधान...

(११) (कुछ शब्द संकलित हैं)

आत्म तत्व

चिन्ता करो चिंतामणी रत्न आत्मा ।
चैतन्य चिन्मय चिदानन्द मा ।।

१. पूर्ण शुध्द, पूर्ण बुध्द, शुध्द आत्मा ।
सिध्द स्वरुपी है, हर आत्मा ।। चिन्ता करो............

२. काम-क्रोध, मोह, द्रोह, गर्व कोइ न ।
आत्म ज्ञान के समक्ष, ठेर(ठहर) पायें न ।।चिन्ता करो....

३. मंत्र-तंत्र-यंत्र-जंत्र, सारी शक्तियाँ ।
आत्मा की शक्ति का, पार पायें न ।। चिन्ता करो.......

४. सारे जग में एक मात्र, देखो आतमा ।
आत्मा में बसा हुआ, परमातमा ।। चिन्ता करो.........

मुक्तक

१. आत्मा एक तीर्थ है, तीर्थ वही जो तार दे ।
आत्मा एक गीत है, गीत वही जो ज्ञान दे ।
आत्मा एक मीत है, मीत वही जो साथ दे ।
आत्मा एक नीति है, नीति वही जो न्याय दे ।

२. जिनवाणी है माता मेरी, सिध्दों जैसी शान मेरी ।
रत्नत्रय का सागर हूँ मैं, सृष्टी से जब दृष्टि फेरी ।

३. तोड़ दे मन के सारे बंधन, होजा तू निर्बन्ध ।
वीतराग के मार्ग पर, मिट जाये क्रंदन ।

(१२) (कुछ शब्द संकलित हैं)

चिंतन

रे तन भिन्ना चेतन भिन्ना, फिर काहे की चिन्ता करना ॥

१. निज आतम को नित्य सुमरना, चल गुरु तारण के पद चिन्हा ॥
पहुँचाये पथ मुक्ति मिलना, मिलता सुख मिटता है मरना ॥
फिर काहे की चिन्ता करना ,
रे तन भिन्ना...........

२. पाप कर्म से कभी न जुड़ना, संत-सुसंगति नौका चढ़ना ।
मिथ्या-माया-मोह को तजना, वीतराग निज में आचरणा ॥
फिर काहे की चिन्ता करना ,
रे तन भिन्ना...........

३. आतम तीर्थ में सदा विचरना, आतम-शुध्दातम को भजना ।
धर्म सहारे पार उतरना, गुरु वाणी को हिरदय धरना ॥
फिर काहे की चिन्ता करना ,
रे तन भिन्ना...........

४. आतम के गुण हैं अविछिन्ना, पुदगल तो होता छिन्न-भिन्ना ।
पर परिणति से होजा खिन्ना, अर्क कीर्ति चिन्मय भगवन्ना ॥
फिर काहे की चिन्ता करना ,
रे तन भिन्ना...........

आनन्द का मिला छोर, सुख-शान्ति का स्रोत ।
सृष्टी के उस ओर, जहाँ निर्विकल्पता चहुँ ओर ।।

(१३) आरती

आरती शुध्द चिद्रूपो ऽहं, चिदानन्द चैतन्य ही हो तुम ।

१.मिटती है सब दुःख की ज्वाला, प्रगटती समकित उर माला ।
अतीन्द्रिय आनन्दमय हो तुम, चिदानन्द चैतन्य ही हो तुम॥
आरती शुध्द चिद्रूपोहं.....

२.आत्मन सर्व गुण सुख शाला, पिलाती मुक्ति के प्याला ।
बसे हो स्वानुभूति में तुम, चिदानन्द चैतन्य ही हो तुम ॥
आरती शुध्द चिद्रूपोहं.....

३.अकथ है वैभव की महिमा, निजानन्द स्वावलम्ब गरिमा ।
अचिंत्य हो वचनातीत निष्कम्प, चिदानन्द चैतन्य ही होतुम
आरती शुध्द चिद्रूपोहं.....

(१४) आरती

तर्ज:-(आरती कृष्ण कन्हैया की........)

आरती करुँ चिदानन्द की, आत्म के सुख सहजानन्द की ।

१.घातिया हरे चार जिनने, प्रगट भये ज्ञान नयन उनके ।
तिमिर की हरण,रवि की किरण, कि अंतर ज्योति जगी नन्द की।
आत्म के सुख सहजानन्द की.........आरती करुँ ....

२.प्रगट भयो केवल ज्ञान जिन्हें, चतुष्टय प्रगट भये हैं उन्हें ।
छूटे भव अरण,ब्रह्म में रमण, विहारी मुक्ति आनन्द की॥
आत्म के सुख सहजानन्द की.........आरती करुँ ....

३.भये जे सिध्दन अविनाशी, नमन है तुम्हे मोक्ष वासी ।
विजय निज करण,आत्म की शरण, गहूँ नित परमानन्द की ॥
आत्म के सुख सहजानन्द की.........आरती करुँ ....

(१५)

आरती

ॐ जय शुध्दातम देवा, प्रभु निज आतम देवा।
ओंकारमयी शुध्द तत्व ही-२, परमातम देवा ॥
ॐ जय शुध्दातम देवा.....

१. प्रणव मंत्र प्रणमामि, तत्वार्थ सार हेतु ।
स्वामी तत्वार्थ सार हेतु ....
न्यान मयी चारित्र मयी तुम-२, समकित चिद्रुपा।
ॐ जय शुध्दातम देवा.....

२. आद्यं अनादि शुध्दं हो तुम-२, चिन्मय गुरु देवा।
स्वामी चिन्मय गुरु देवा ....
सत पथ दर्शक निज आतम तुम-२, और नहीं दूजा।
ॐ जय शुध्दातम देवा.....

३. शुध्द बुध्द अविनाशी हो तुम, जय त्रिकाल जयी।
स्वामी जय त्रिकाल जयी ....
जय हो-जय हो-जय होवे तुम-२, भाव मोक्ष पूजा।
ॐ जय शुध्दातम देवा.....

आप की रति, गुरु आये मुझमें, जग से अ-रति होय।
तभी सफल है जीवन मेरा, यही भाव नित होय ॥

आरती उज्जवल करती मन को, जो वीतराग की होय।
राग भाव ही दूर होंय तो, मुक्ति पथ पग होय ॥

(१६)

आरती

जय गुरु बाबा करुँ आरती, निज आतम गुण पाने को।
आत्म ज्ञान में आत्म ध्यान में, हर पल सदा समाने को ॥
जय गुरु बाबा करुँ .....

१. तुमने पाया वह रत्नाकर, जो था दिया जिनेन्द्रों ने।
सबको बाँट दिया वह अमृत, अजर अमर हो जाने को ॥
जय गुरु बाबा करुँ .....

२. तुम चिंतन के मंथन से जब, निकले चौदह रत्न महान।
सबको अक्षय निधी मिली है, शुध्दातम में रमने को ॥
जय गुरु बाबा करुँ .....

३. तुमसे विधा मिली है हमको, तुमसा ही बन जाने की।
'वन्दू तद गुण लब्धये'अब तो, सम्यक दर्शन पाने को ॥
जय गुरु बाबा करुँ .....

४. सदगुरु तारण तरण गुरुवर, जय-जय-जय माँ जिनवाणी
करुँ आरती सदा आपकी, मुक्ति विजय श्री पाने को ॥
जय गुरु बाबा करुँ .....

आये रति तुम्हारी भगवन, यही तुम्हारी आरती।
हो पुरुषार्थ सबल दृढ़ मेरा, बन जाये वह सारथी ॥

०००००००००

अ-रति होवे जग से मेरी, करती हूँ नित आरती।
आत्म रति से मेरी गति भी, पंच परम पद धारती ॥

(१७)

आरती

जय श्री सदगुरु देवाय नमः, श्री सदगुरु देवाय नमः ।
जानी-अनजानी सब भूलें-२, करो गुरुदेव क्षमा ॥
जय श्री सदगुरु देवाय नमः ...

१. बार अनन्ते सुअवसर पाया, ज्ञान नहीं लीना ।
गुरु ज्ञान नही लीना , मैंने ज्ञान नहीं लीना ॥
अबके शरण आपकी आया, जिन वच मन में समा ॥
जय श्री सदगुरु देवाय नमः ...

२. भेद ज्ञान-तत्व निर्णय, श्री,गुरु आप प्रदान किया ।
गुरु आप प्रदान किया, मुझे आप प्रदान किया ॥
सम्यक दर्शन प्राप्ति की, प्रज्वलित पाई शमा ॥
जय श्री सदगुरु देवाय नमः ...

३. श्री मुख कंठ कमल की वाणी, जिन वच दरसाये ।
गुरु जिन वच दरसाये, स्वामी जिन वच दरसाये ॥
जग हित है कल्याणी, मिटे मिथ्यात्व तमा ॥
जय श्री सदगुरु देवाय नमः ...

४. तुम पद पंकज नित्य नमामि, आरति करत नमः ।
गुरु आरती करत नमः, प्रभु आरति करत नमः॥
तुमसा ही बन जाऊँ, पाऊँ मुक्ति रमा ॥
जय श्री सदगुरु देवाय नमः ...

(१८)

आत्म स्तुति

मैं ध्रुवं में खो गया हूँ, मैं त्रिकाली हो गया ॥-२॥

१. रूप मेरा है अमूर्तिक, प्राण मेरे ज्ञान मय ।
पद मेरा परमेष्ठि पावन, नाम सिध्दं हो गया ॥
मैं ध्रुवं में खो गया हूँ.......

२. ज्ञान रत्नाकर खजाना, मुक्ति मेरा गाँव है ।
शान्ति की अभिलाषा है चिर, चैतन्य वैभव पा गया ॥
मैं ध्रुवं में खो गया हूँ.......

३. स्वानुभव है तन मेरा और, निर्विकारी मन मेरा ।
शुध्दता के ढेर में यह, ममल स्वभावी हो गया ॥
मैं ध्रुवं में खो गया हूँ.......

४. ज्ञान ज्योति से है नेहा,अर्हनिश चलता रहे ।
अरिहंत बनकर यह भी छूटा, सोहं-अहं में खो गया ॥
मैं ध्रुवं में खो गया हूँ.......

*स्वानुभूति के स्मरण की सौगात मुझको मिल गई ।
वह दिव्य दिया बन कर, पथ का प्रदर्शन कर रही ॥
आनन्द अमृत पान कर, कंठ कमल में जम गई ॥
उस एक रूपता से जा मिलूँ, जो पूर्णता में थम गई ॥*

(१९)

आत्म स्तुति

तर्ज़ः-(है अपना दिल तो आवारा...............)

ये आतम ही है शुध्दातम, यही परमातमा पावन।

१. इसी की वन्दना भक्ति, इसी की आरती-पूजा।
यही भव मेटने को है, स्वयं तारण-तरण-तारण ।।
ये आतम ही है...............

२. इसी का रूप परमेष्ठि, इसी का ध्यान सिध्दाणं।
यही चिद्रूप मन भावन, इसे ध्याते सदा भगवन ।।
ये आतम ही है...............

३. इसे भूले अनादि भव, फिरे आया न दुख का अन्त।
मिला अवसर अपूरव अब, जिनेश्वर वैन में आनन्द ।।
ये आतम ही है...............

४. इसी के ध्यान चिन्तन से, करो विज्ञो सफल जीवन।
बना आराध्य, आराधक, करो आराधना-अनुपम ।।
ये आतम ही है...............

जग में तीरथ अनगिनत, कहाँ कहाँ नवाऊँ माथ।
शुध्दातम की भक्ति से, सभी पुण्य एक साथ ।।

(२०)

'कविता'

लिखो कलम से इस तरह, कि ज्ञान जग उठे।
आत्म ज्ञान का प्रचण्ड, शंख नाद बज उठे ।।
लिखो कलम से इस तरह ।।

१. छोड़ कर विभाव को, स्वभाव में झुके।
मोह जाल-बंध, अपने आप खुल उठे ।।
लिखो कलम से इस तरह.....

२. आ रही हैं आश्रवों की, आंधियाँ रुकें।
और निर्जरा के व्दार, जगमगा उठें ।।
लिखो कलम से इस तरह.....

३. सत्य-करुणा-प्रेम-समता, शान्ति पथ चले।
हो अहिंसा ओत-प्रोत, रोम-रोम खिल उठे ।।
लिखो कलम से इस तरह.....

४. आश-फांस त्याग वास, आत्म हित रुचे।
वीर वाणी,गुरु चरण पै, चुम्बकीय खिचे ।।
लिखो कलम से इस तरह.....

५. समकिती बने, वीतरागता सजे।
लेखनी की शक्ति, सिंघ(सिंह) सोता जग उठे ।।
लिखो कलम से इस तरह.....

लिखो कलम से इस तरह, कि ज्ञान जग उठे।
आत्म ज्ञान का प्रचण्ड, शंख नाद बज उठे ।।

---ooo---ooo---ooo---

(२१)

'कविता'

निज में समा जा इस तरह, तन प्राण का जो तौर है।
जिसमें न कोई फिर कहे, मैं और हूँ तू और है-२ ।।
निज में समा जा इस तरह...

१. तन भूल कर खो जाऊँ मैं, प्राणों के इस प्राणेश में।
योगी के अविचल ध्यान में, परमात्मा योगेश में ।।
त्रय लोक्य का बस एक ही, सर्वोत्कृष्ट यह ठौर है।
जिसमे न कोई फिर कहे, मैं और हूँ तू और है ।।
निज में समा जा इस तरह...

२. धन-धाम और पर-भाव सारे, हों बहिष्कृत भाव से।
अपने निजातम राम की, भक्ति करुँ मैं चाव से ।।
आगम-अगम-परमेष्ठि और, निज आत्मा चहुँओर है।
जिसमे न कोई फिर कहे, मैं और हूँ तू और है ।।
निज में समा जा इस तरह...

३. निज आत्मा-परमात्मा, चैतन्य-चेतन-निज मना ।
सोहं-सिध्दोऽहं ब्रह्म का, उपमेय वाचक आतमा ।।
जिसकी प्रचण्ड ज्योतिर्मयी, आभा का सबमें नूर है।
जिसमें न कोई फिर कहे, मैं और हूँ तू और है ।।
निज में समा जा इस तरह...

४. तन में समाये हो सदा, रहना समाये प्राण में ।
विन्द स्थान का वह लक्ष्य भी, फिर छूट जाये ध्यान में।।
सबसे सरल,सबसे सुलभ, ध्रुव धाम का शिर मौर है।
जिसमें न कोई फिर कहे, मैं और हूँ तू और है ।।
निज में समा जा इस तरह...

(२२)

'कविता' शिविर

शि- शिव से मिलन की रीति का, शिविर संयोग है।
शिव को प्रगट करने का, शिविर योग है ।।
शिव स्वरूप ओंकार आतम का शिविर मनोज्ञ है।
शिव धाम में सिध्दं स्वयं का शिविर में नित भोग है ।।

वि- वीतरागी नहीं खोजता कभी व्यवस्था।
विपदाओं के वीच मानता साधन की सम्पन्नता ।।
विस्तृत और विशाल ज्ञान का स्रोत,
बना यह ज्ञान शिविर।
'विजया' का मन प्रांगण ध्यावे,
मौन और ध्यान शिविर ।।

र- रम जाना है मन, ज्ञानानन्द जी के सत्प्रयास प्रयोग में।
ब्रह्मानन्द जी के उत्कृष्ट ,
'ज्ञान ध्यान और मौन के' त्रियोग में ।।
फिर न मिलेगा यह संयोग, सांसारिक उपभोग में।
अनन्ते काल भटकेगा, मिथ्यात्व के भव रोग में ।।

शिविरः-शिविर में शिव की, उपलब्धि का काम है ।।
शिव वीतराग में रम जाने का नाम है।

(२३)

'कविता' शिविर

शिविराचंल में आकर पाया, अनुपम और सुखद आनन्द।
बढ़ता जाये निज पौरुष से, प्रगटायेगा परमानन्द ।।

१. कल्पतरु से भी ज्यादा है, बिन माँगे सब दे यह द्रुम ।
शब्दातीत लगे सब कार्यक्रम, ज्ञान प्रगति के प्रशस्त पुंज ।।

२. मानव तन से महा मानव बन, यह इतिहास रहेगा याद ।
आने वाली हर पीढ़ी को, मिलती रहे यही सौगात ।।

३. ज्ञानानन्द जी के शुभ भावों का, यह परिणाम सफल साकार।
ब्रह्मानन्द मय श्री संघ ने, मूर्त रूप दे किया प्रसार ।।

४. अति कृतज्ञ हैं सदा रहेंगे, अपनी निधि को पाकर आज ।
दिन दूना बढ़े रात चौगुना, अपने आतम प्रभु का साज ।।

५. नहीं प्रत्यक्ष में ज्ञानानन्द जी, लेकिन उनके गुण विद्यमान ।
देते हैं सत्प्रेरणा सबको, रखना निजआतम, जिन प्रभु सम्मान।।

६. गुरु उपकार अनिर्वचनीय है, अव्यक्त और अवक्तव्य गान ।
श्री संघ से पालो भवियन, चौदह ग्रंथ सिध्दि सोपान ।।

धन्य-धन्य है घड़ी आज की, गुरु वाणी का मिला प्रसाद ।
धन्य-धन्य है घड़ी आज की, निज आतम में हुआ प्रकाश ।।
क्षण-क्षण बीत रहा है मेरा, बढ़ता जाये यह आभास ।
शून्य दशा में पहुँचाये फिर, बोधि समाधि नित्य निवास ।।

(२४)

'कविता'

सुर से सुनाऊँ सरगम से सुनाऊँ, कण-कण से सुनाऊँ सबको।
वीतराग की वाणी ही तो, वन्दनीय हमको ।।
श्री वीतराग की वाणी ही तो, वन्दनीय हमको ।।

१. भूल न जाना, भटक न जाना, चमत्कार लखके ।
खुद डूबेंगे, हमको डुबायें, उपल नाव हैं ये ।।
गुरु वाणी से प्राप्त हुई है, जिनवाणी सबको ।
अहो-अहा यह अमिय रसायन, पान करो अब तो ।।
सुर से सुनाऊँ.......

२. तीर्थ शिखर जी अनुपम पावन, कहता है सबको ।
तारण पंथ ही मुक्ति का मारग, चल इस पर तर लो ।।
भये अनन्ते और होंय जो, पायें प्रभु पदको ।
आगम और अनन्त तीर्थंकर, पूज्यनीय हमको ।।
सुर से सुनाऊँ.......

३. गुरु वाणी से प्राप्त हुआ है, श्री संघ सहकारी ।
मृत्युंजय है, स्वानुभूति और, सिध्दोऽहं तैयारी ।।
सम्यक दर्शन प्राप्त होय और, अनुभूति सबको ।
निज पद तारण तरण प्रगट हो, भूले थे जिसको ।।
सुर से सुनाऊँ.......

(२५)

नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

नये साल के दिन मुबारक, हर क्षण हर घड़ियाँ।
जीवन में उत्कर्ष नये हों, भर जायें खुशियाँ ।।
हर पल प्रभु नाम के जप से, जुड़ जायें कड़ियाँ।
सदा-भलाई सेवा पथ पर, चमकें दिन मणियाँ ।।
नये साल के दिन मुबारक...

खाना-पीना-मौज उड़ाना, बीत गईं दिन रतियाँ।
मानव तन का अर्थ समझ लो, चेतो चेतनियाँ ।।
गुरु वचनों से आत्म बोध पा, पा मुक्ति गलियाँ।
धर्म उदय हो जब जीवन में, तब हो नई दुनियाँ ।।
नये साल के दिन मुबारक...

पुण्योदय से प्राप्त हुआ है, यह अभीष्ट संयोग।
रत्न त्रय का आराधन कर, करें चिदानन्द भोग ।।
श्रध्दान-ज्ञान-ध्यान से, मिलता है सम्यक दर्शन।
उसका काम उसी को सौंपो, प्रगटे ज्ञायक दर्पण ।।

(२६)

जन्म दिवस

जन्म जयंती उनकी होती, जुड़ा साधना से जीवन।
जन्म दिवस हर कोई मनाता, एक वर्ष हुआ और भी कम ।।
०००००

जनम दिन-जनम दिन हमें चाहिये,
हमें वीतरागी विधा चाहिये।

१. होते जगत में जनम सैकड़ों,
जनम दिन मनाते बड़े आँकड़ों।
हमें त्याग-संयम का दिन चाहिये,
जनम दिन मनाने को प्रण चाहिये ।।
जनम दिन-जनम दिन हमें चाहिये,
हमें वीतरागी विधा चाहिये

२. जनम दिन मनाना उन्हीं का सफल,
जिन्हें सत्य संयम का है आत्म बल।
हमें ब्रह्मज्ञानी दिवा चाहिये,
गुरु संत तारण शिवा चाहिये ।।
जनम दिन-जनम दिन हमें चाहिये,
हमें वीतरागी विधा चाहिये ।।

३. ज्ञानानन्द जी का, जन्म होगा अमर,
लिया मुक्ति आसन का सम्यत्व वर।
जगत को अनेकों बसन्त चाहिये,
हमें भी सुधा की विधा चाहिये ।।
जनम दिन-जनम दिन हमें चाहिये,
हमें वीतरागी विधा चाहिये ।।

(२७)

मन

विभावों में मत जइयो मन, तुमको है सौगन्ध।-२
तुम तो हो शक्ति के धारी, शक्ति की सौगन्ध।
विभावों में मत ....

१. अपनी शक्ति लगा भक्ति में, देव-गुरु-धर्म जप में।
फिर न मिलेगा जैन धरम और,नर तन ये सत्संग ॥
विभावों में मत ....

२. चमत्कारी तेरी आत्म शक्ति को, देखेंगे जन-जन।
तू तो होगा पूज्य,करेगें, तेरा अनुसरण ॥
विभावों में मत ....

३. शुध्दातम में लगा शक्ति को, देख तेरी फिर हस्ती।
भेद ज्ञान और तत्व निर्णय कर, तव होगा प्रशम ॥
विभावों में मत ....

४. हर पल बीतें ज्ञान-ध्यान और,चिंतन या मनन में।
सिध्द परम पद पाने में, कोई तू भी है न कम ॥
विभावों में मत ....

५. हमको दोई तरफ से फायदा, रहो या तुम मर जाओ।
इसीलिये तो हो जाओ तुम, बस केवल निर्बन्ध ॥
विभावों में मत ....

(२८)

मन जा रे जा रे, जा रे वहाँ पर।
सिध्द शिला पर प्रभु, बैठे हैं जहाँ पर ॥

१. मै ही तो सिध्द हूँ, सिध्द शिला मेरी।
जाना है मुझको ऽ ऽ, अपने स्वदेश री ॥
सम्यक दर्शन, पाना है यहाँ पर।
सिध्द शिला पर प्रभु, बैठे हैं जहाँ पर ॥
मन जारे जारे..............

२. नैनों में सिध्द प्रभु, मन शिव धारी।
सिध्दोऽहं है, आतमा हमारी ॥
यही साधना अब, करना है यहाँ पर।
सिध्द शिला पर प्रभु , बैठे हैं जहाँ पर ॥
मन जारे जारे..............

३. अर्चना-उपासना, सिध्दी की साधना।
निज शुध्दातम, सिध्द है सुहावना ॥
तारण पथ से, जाते हैं वहाँ पर।
सिध्द शिला पर प्रभु, बैठे हैं जहाँ पर ॥
मन जारे जारे..............

४. सिध्द स्वाभावी, आत्मा नमन हो।
सिध्द स्वरूपी, आत्मा शुभम हो ॥
आतमा-शुध्दात्मा, परमात्मा वहाँ पर।
सिध्द शिला पर प्रभु , बैठे हैं जहाँ पर ॥
मन जारे जारे..............

(२९)

मन जोर लगा, मन जोर लगा।
निज सोई आतम को दे जगा ।।

१. हे आत्म उठो और चिंतन करो ।
निज आत्म मनन का घोल करो ।।
स्व-ज्ञान मिला, तुझे तेरा सगा ।
मन जोर लगा, मन जोर लगा ।।

२. तू अरस-अरूपी-अनुपम है ।
फिर किसकी चाह में क्यों गुम है ।।
पर-परिणतियों से विमुख होजा ।
मन जोर लगा, मन जोर लगा ।।

३. श्री सिध्द समान तेरा पद है ।
और सिध्द शिला पर बैठा है ।।
यह दृश्य जरा निज ध्यान में ला ।
मन जोर लगा, मन जोर लगा ।।

४. मन चमत्कारी तेरी शक्ति है ।
दुनियाँ में ऊँची हस्ती है ।।
एकाग्रता से शुध्दात्म में आ ।
मन जोर लगा, मन जोर लगा ।।

(३०)

वाणी

(तर्जः-हो दीन बंधु श्रीपति, करुणा निधान जी ...)

वाणी में चमत्कार मयी, शक्ति भरी है।
करके प्रयोग देख लो, यह बात सही है ।।

१. कोई धन नहीं, मेहनत नहीं, नहीं जिव्हा छिले है।
मधुरम वचन कहे तो, प्रिय सरिता बहे है ।।
सबसे ही लचक-लोच तो, जिव्हा को मिली है।
करके प्रयोग देख लो, यह बात सही है ।।
वाणी में.............

२. वाणी से विनाश, बहुत होते रहे हैं ।
वाणी से बहुत विगड़े, कार्य जोड़े गये हैं ।।
वाणी से ऊँच-नीच, की संज्ञा मिली है ।
करके प्रयोग देख लो, यह बात सही है ।।
वाणी में.............

३. वाणी में बावन अक्षर, द्वदशांग भरा है ।
वाणी में दिव्य ओम, का निनाद भरा है ।।
रख मौन की सम्हाल, वाँणी पुण्य गली है ।
करके प्रयोग देख लो, यह बात सही है ।।
वाणी में.............

(३१)

जरा सी जिन्दगी में, न किसी से कड़वा बोलो ।
न किसी से कड़वा बोलो, न अमृत में विषवा घोलो।।
बोलो तो ऐसा बोलो, मिश्री जैसा घोलो ।
जरा सी जिन्दगी में, न किसी से कड़वा बोलो ।।

१. कड़वी बोली तो होती, आर-पार मनवा बीधे ।
मीठी वाणी का मरहम, हर ज़खम को सींदे ।।
वाणी पर बाण रखकर, मुँह मत खोलो ।
बोलो तो ऐसा बोलो, मिश्री जैसा घोलो ।।
जरा सी जिन्दगी ....

२. वाणी मिली है बडे पुण्य से, ओ नरतन धारी ।
मानो न मानो भैया, क्या कहें हम, मरजी तुम्हारी।।
बोलने से पहले, शब्द हृदय में तौलो ।
बोलो तो ऐसा बोलो, मिश्री जैसा घोलो ।।
जरा सी जिन्दगी ....

श्री गुरु चरण सरोज मैं, वंदऊँ सहस त्रिकाल ।
जिनकी कृपा से लहें, अगम ज्ञानको सार ।।
वन्दऊँ चौबीसी परम, वन्दऊँ सिध्द अनन्त ।
वन्दऊँ जिनवाणी धरम, निज शुध्दात्म जिनन्द ।।

(३२)

तर्ज:-(होठो से छूलो तुम..................)

वाणी से बोलो तुम, जय तारण तरण करलो ।
जय तारण तरण करके, निज मन को तुम धोलो ।।

१. न शाम-सुबह-दुपहर, न रात का है बंधन ।
जय तारण तरण बोले, मिट जांये मन के द्वन्द ।।
जय तारण तरण करके, नित पुण्य को तुम करलो ।
जय तारण तरण करके, निज मन को तुम धोलो ।।
वाणी से बोलो तुम.............

२. सब प्रीत करें सबसे, हर बैर विरोध हारा ।
सबमें ही हैं भगवन, गुरुतार का है नारा ।।
तुम हाथ जोड़ करके, हँस करके विनय करलो ।
तुम हाथ जोड़ करके, जय तारण तरण करलो ।।
जय तारण तरण करके, निज मन को तुम धोलो ।।
वाणी से बोलो तुम.............

मन वचन काय के त्रियोग को, बांध के एक डोरी से ।
सम्यक दर्शन ज्ञान चारित से मिल जाऊँ ।।
फिर न रह जाये भेद दो का, एक ही बन जाऊँ ।

(३३)

तारण वाणी से सम्बंध, जिनका मन से हो गया ।
उनके जीवन में आनन्द, आनन्द-आनन्द हो गया ।।

१. भेद ज्ञान दरसाती वाणी, तत्व निर्णय बतलाती ।
आगम और अनन्त जिनेन्द्रों, की वाणी कहलाती ।।
जिनवर वाणी पर श्रध्दालु, जिनका आतम हो गया ।
उनके जीवन में आनन्द, आनन्द-आनन्द हो गया ।।
तारण वाणी से............

२. तारण पंथ है सच्चा मारग, पथ दर्शक परमेष्ठि ।
निश्चय से है मेरा आतम, देव-गुरु-धर्म श्रेष्ठि ।।
आतम-शुध्दातम-परमातम, बनना शुरु हो गया ।
उनके जीवन में आनन्द, आनन्द-आनन्द हो गया ।।
तारण वाणी से............

३. तीन लोक में सबसे उत्तम, स्वाध्याय और सत्संग ।
सत पथ दर्शक बोध कराते, आतम रंगती स्वरंग ।।
पर की मान्यता मिटा के चेतन, निज में खो गया ।
उनके जीवन में आनन्द, आनन्द-आनन्द हो गया ।।
तारण वाणी से............

मैं ही मेरा सिध्द प्रभु हूँ, मैं ही मेरी सिध्द शिला ।
समय-समझ-सामग्री-सामर्थ, पाई अब न कोई गिला ।।

(३४)

गुरुतार आपकी वाणी ने, मन वीणा को झंकृत्य किया ।
हर तार से निकला मैं सिध्दम् , सिध्दोऽहं-सोऽहं-सिध्दोऽहं।

१.जग की वीणा के तार गिने, मन वीणा के अनगिनती हैं
यह बहक-बहक बेसुर गाये, तुमने इसे स्वर में बांध दिया ।।
गुरुतार आपकी वाणी ने....

२.मैं आतम हूँ शुध्दातम हूँ, परमातम हूँ सिध्दातम हूँ ।
है सिध्द समान स्वरूप मेरा, मेरे ज्ञान नेत्र को खोल दिया ।।
गुरुतार आपकी वाणी ने....

३.सत शास्त्रों ने भी यह गाया, अनन्त ज्ञानियों ने भी दोहराया ।
यह सत-शिव-सुन्दर जिनवाणी, हर आतम को प्रभु नाम दिया।
गुरुतार आपकी वाणी ने....

४.मैं देव-गुरु-धर्म आतम हूँ, मैं तारण तरण निजातम हूँ ।
जिन-जिनवर जैसा पावन हूँ, यह मंत्र वीर-गुरुतार दिया ।।
गुरुतार आपकी वाणी ने....

त्यागो कुमति-कुसंग को, जो चाहो कल्याण ।
न्याय-नीति-सदभावना, आतम हित पथ जान ।।

(३५) 'गुरुतार'

तर्ज़ः-(आप की नजरों ने समझा..........)

तारण-तरण गुरु तार के, चरणार विन्दो में नमन।
धन्य है यह जन्म मेरा, मिल गया विज्ञान धन ऽऽ ॥

१. सुप्त आतम दी जगा, भेदज्ञान के वरदान से ।
समता शान्ति पंथ पाया, तत्व निर्णय पान से ॥
पा लिया समकित मैंने, तारण पंथ पर करके गमन।
धन्य है यह जन्म मेरा, मिल गया विज्ञान धन ऽऽ ॥
तारण-तरण गुरु तार के....

२. शुध्द दृष्टि रत रहूँगा, यह मेरा पुरुषार्थ है ।
सिध्द-सिध्दं मैं बनूंगा, क्योंकि यह सामर्थ है ॥
चलना है पद चिन्ह गुरु के, कर,तुम सरीखा आचरण
धन्य है यह जन्म मेरा, मिल गया विज्ञान धन ऽऽ ॥
तारण-तरण गुरु तार के....

३. हो ममल स्वभाव की अब, साधना हर इक घड़ी।
शून्य सत्ता में समाँऊ, है मेरी इक ही अड़ी ॥
वस्तु रूपी द्रव्य दृष्टि, का खिला मुझमें चमन ।
धन्य है यह जन्म मेरा, मिल गया विज्ञान धन ऽऽ ॥
तारण-तरण गुरु तार के....

४. आज सिध्दाचल पधारे, संग हम श्री संघ के ।
जिन जिनेन्द्रों का कथन, गुरुवाणी में संदेश ले ॥
वे सभी भव्यात्मा हैं, करें गुरु का अनुगमन ।
धन्य है यह जन्म मेरा, मिल गया विज्ञान धन ऽऽ ॥
तारण-तरण गुरु तार के....

(३६) 'गुरु देव'

तर्ज़ः-(होंठों से छूलो तुम..............)

गुरु तारण को वन्दन, गुरु भक्तों का अभिनन्दन।
यह जन्म सफल मेरा, गुरुवाणी से पा दर्शन ॥

१. मंगलमय ममल स्वरूप, मंगल मय करण सु ज्ञान।
मेरे हिय बस जाओ, गुरु तारण तरण महान ॥
मनहिं मन करत प्रणाम, गुरु देव को शत वन्दन।
यह जन्म सफल मेरा, गुरुवाणी से पा दर्शन ॥
गुरु तारण को वन्दन....

२. मेरे परम आराध्य गुरु, श्रीमद जिन तारण तरण।
पावन वाणी का श्रवण, प्रभावना का योग श्रमण॥
अ मूल्य प्रसादों का, किया गुरुवर प्रवर्तन।
यह जन्म सफल मेरा, गुरुवाणी से पा दर्शन ॥
गुरु तारण को वन्दन....

३. यह धरा हुई पावन, तेरे जन्म-दीक्षा-तप से ।
वैराग्य के वर्धन से, निर्वाण के क्षण-क्षण से ॥
शुध्दात्म सुगुरु अबसे, करूँ शुध्दातम चिंतन।
यह जन्म सफल मेरा, गुरुवाणी से पा दर्शन ॥
गुरु तारण को वन्दन....

(३७)

'सदगुरु'

तर्ज़:-(होंठों से छूलो तुम.............)

श्री सदगुरु तारण जी, स्वीकार प्रणाम करो।
तुमसा ही बनने का, वरदान प्रदान करो ॥

१. अध्यात्म प्रणेता हो, श्री जिनवर वच दानी।
स्वानुभव में विचरे तुम, श्री मुक्ति श्री पानी ॥
सब जीव बनें भगवन, यह तुमने उच्चार करो।
तुमसा ही बनने का, वरदान प्रदान करो ॥
श्री सदगुरु तारण जी...

२. गुरु-गोविन्द से बढ़कर, यह बात जगत जाने।
सागर जल मेघ बनते, जीवन में सुधा भरने ॥
त्यौं तारण तरण गुरु, तुमसा न कोई खरो।
तुमसा ही बनने का, वरदान प्रदान करो ॥
श्री सदगुरु तारण जी...

३. हे आतम दुर्लभ भव, यह समय मिला पावन।
तेरी काल लब्धि आई, शुध्दात्म का कर चिंतन ॥
पुरुषार्थ से सम्यक धन, अब शीघ्रति-शीघ्र वरो।
तुमसा ही बनने का, वरदान प्रदान करो ॥
श्री सदगुरु तारण जी...

(३८)

तर्ज़:-(होंठों से छूलो तुम.............)

गुरु तार की वाणी से, यह जन्म सफल करलो।
हे आतम प्रज्ञाधर , अब काहे की देर करो ॥

१. यह समय मिला पावन, सत्संग है मनभावन।
सत शास्त्र हैं सहकारी, 'श्री संघ' का सत समागम ॥
अनुकूलताऐं सारी, बुध्दि-रुचि का प्रयोग करो।
हे आतम प्रज्ञाधर , एक पल न देर करो ॥
गुरु तार की वाणी....

२. अब समझ-सामग्री से, सामर्थ्य बढ़ाओ तुम।
पुरुषार्थ यही तेरा, परता का मिटाये घुन ॥
हो सबल-प्रबल-अभय, मार्तण्ड प्रगट स्व करो।
हे आतम प्रज्ञाधर , एक पल न देर करो ॥
गुरु तार की वाणी....

३. क्यों संयम है शिथिल, नहीं ध्यान की है तीव्रता।
यह ज्ञान तेरा कोरा, हो जायेगा वृथा ॥
अमूल्य धरोहर जो, छद्मस्थ को प्रगट करो।
हे आतम प्रज्ञाधर , एक पल न देर करो ॥
गुरु तार की वाणी....

४. पर संग का पागल पन, क्यों छाया जान बूझकर।
मिले अवलबली जिन वैन, बनो सबल उन्हें ग्रहण कर॥
वर्ध्दमान हो वर्तमान के, और तारण तरण अहो।
हे आतम प्रज्ञाधर , एक पल न देर करो ॥
गुरु तार की वाणी....

---०००---०००---०००---

(३९)

तर्ज़ः-(होंठों से छूलो तुम.............)

गुरुदेव तरण तारण, तेरी वाणी ध्याऊँगा ।
जिनवाणी सुत बनकर, जिन नन्द कहाऊँगा ।।

१. आनन्द का पारावार, आतम के दर्शन से ।
मैं ही तो सिध्द प्रभु, देखा आतम अनुभव से ।।
सम्पूर्ण अकथ-अनिर्वच, उस मय हो जाऊँगा ।
जिनवाणी सुत बनकर, जिन नन्द कहाऊँगा ।।
गुरु देव तारण तरण...

२. मैं आदि अनादि नाथ, मैं ही तो प्रभु सनाथ ।
विन्द स्थान में सबका वास, जो ध्याये निज जिननाथ।।
आकाश सा अविचल शून्य, मैं स्व को पा पाऊँगा ।
जिनवाणी सुत बनकर, जिन नन्द कहाऊँगा ।।
गुरु देव तारण तरण...

३. छोड़ो भाव शुभाशुभ अब, हैं मौन में सारे तत्थय ।
तत्वों में परम जो तत्व, वह मुझमें है छद्मस्थ ।।
मैं बनाबनाया प्रभु , निज रूप में आऊंगा ।
जिनवाणी सुत बनकर, जिन नन्द कहाऊँगा ।।
गुरु देव तारण तरण...

बोध की बगिया में उजियारी, सम्यक दर्शन ज्ञान की ।
अनुभव प्रमाण मुक्ति, परिपूर्ण के सोपान की ।।

(४०)

तर्ज़ः-(होंठों से छूलो तुम.............)

गुरुतार गिरा पावन, कहती है तू भगवन ।
मैं सोऽहं-सिध्दोऽहं, ब्रह्मास्मि हूँ मैं स्वयं ।।

१. यह मंगल मय सन्देश, सुन भवियन भये वे जीव ।
श्रावक के व्रत धारे, चले मुक्ति पंथ प्रदीप ।।
तारण पंथ की महिमा है, हर जीव बने पावन ।
मैं सोऽहं-सिध्दोऽहं, ब्रह्मास्मि हूँ मैं स्वयं ।।
गुरुतार गिरा पावन....

२. जिनवाणी की श्रध्दा, निज आतम की भक्ति ।
अनुसरण में हो युक्ति, मिले शान्ति और मुक्ति ।।
तारण पंथ की श्री साधना, करो प्रगट ममल मंगलम।
मैं सोऽहं-सिध्दोऽहं, ब्रह्मास्मि हूँ मैं स्वयं ।।
गुरुतार गिरा पावन....

३. यह स्व पर भेद विज्ञान, सर्वोच्च ज्ञान की खान ।
तत्व निर्णय का आदान, अकर्ता,समता प्रदान ।।
पाँऊ मोक्ष महल जब तक, जैनागम जयतु जिनं ।
मैं सोऽहं-सिध्दोऽहं, ब्रह्मास्मि हूँ मैं स्वयं ।।
गुरुतार गिरा पावन....

कैसी भी परिस्थिति हो-आत्मा रमण करो ।
आत्मा रमण आत्मा रमण आत्मा रमण करो ।।

(४१)

तर्ज:-(होंठों से छूलो तुम.............)

गुरुवाणी अमन की है, जहाँ शान्ति शिव की है।
ध्रुवता के चमन की है, शाश्वत के सदन की है ।।
गुरुवाणी अमन की है . . .

१. तारण पंथ डगर की है, शुध्दात्म नगर की है।
मिथ्यात्व वमन की है, कषायों के शमन की है ।।
आतम के लगन की है, सिध्दों से मिलन की है।
ध्रुवता के चमन की है, शाश्वत के सदन की है ।।
गुरुवाणी अमन की है.......

२. अचिन्त्य चिन्तामणी की, सच्चिदानन्द आनन्द की।
प्रभुता के सागर की, गौरवमयी गाथा है ।।
चिदानन्द चरण की है, शुचिता के धरण की है।
ध्रुवता के चमन की है, शाश्वत के सदन की है ।।
गुरुवाणी अमन की है.......

३. शुध्दात्म के सत्कार की, जीवों के उपकार की।
पर भावों के परित्याग की, गुरुतार के सौहार्द्र की ।।
ममल भाव वरण की है, कर्मों के हरण की है।
ध्रुवता के चमन की है, शाश्वत के सदन की है ।।
गुरुवाणी अमन की है......

(४२)

तर्ज:-(होंठों से छूलो तुम....................)

जीवन को मरुस्थल सा, क्यों तुमने बनाया है ।
यह तो है वह बगिया, जहाँ सौरभ छाया है ।।
जीवन को मरुस्थल सा......

१. गुरु मंत्र का जल सींचो, नमोकार से पूरित हो।
मन शान्त-सरल-भोला, बचपन सा निर्मल हो।।
समता की बगिया में, मकरन्द खिलाया है।
यह तो है वह बगिया, जहाँ सौरभ छाया है ।।
जीवन को मरुस्थल सा......

२. तुम देखो जिसको भी, आनन्द मिले उसको।
समकित की बदली से, अमृत का निर्झर हो ।।
स्वानुभव के दर्पण में, सब सिध्द दिखाया है।
यह तो है वह बगिया, जहाँ सौरभ छाया है ।।
जीवन को मरुस्थल सा......

३. स्व-पर हित जीवन हो, मृदु वचनों का सागर।
कोई भाव अहं का न, करे दूषित मन गागर ।।
है मेरा क्या? मुझको, सब पर ही दिखाया है।
यह तो है वह बगिया, जहाँ सौरभ छाया है ।।
जीवन को मरुस्थल सा......

(४३)

तर्ज़:-(होंठों से छूलो तुम.............)

आतम के अर्चन से, यह बोल अमर कर लो ।
तुम सिध्द स्वरूपी हो, शाश्वत में घर करलो ।।
आतम के अर्चन से...

१. मैं आतम-शुध्दातम, परमात्म परम पावन ।
मैं हो गया हूँ धन्य-धन्य, निज प्रभुता से चेतन ।।
है अलख निरंजन मय, चलो राज्य अमर पुर लो ।
तुम सिध्द स्वरूपी हो, शाश्वत में घर करलो ।।
आतम के अर्चन से...

२. तुम अप्पा टंकोत्कीर्ण, ध्रुव धाम के हो वासी ।
अब काहे देर करो, इस भव को बना दासी ।।
तुम सत्ता शून्य मयी, विन्द स्थान पे जय करलो ।
तुम सिध्द स्वरूपी हो, शाश्वत में घर करलो ।।
आतम के अर्चन से...

३. जब तक है पर सेवन, संसार है दुःख लोचन ।
तुम वीर-अतिवीर-महावीर, सन्मति से कर रोचन
तुम तीर्थ-तीर्थंकर हो, परमेष्ठी पद वर लो ।
तुम सिध्द स्वरूपी हो, शाश्वत में घर करलो ।।
आतम के अर्चन से...

(४४)

'प्रार्थना'

तर्ज़:-(होंठों से छू लो तुम...........)

इतनी सी विनय तुमसे, प्रभु अरज ये सुन लेना ।
जब अन्त समय आवे, हे आत्मन् स्व में रहना ।।

१. जब मरण समय होवे, साधर्मी जन संग हों ।
वे तत्व चर्चा करके, सम्बोधन मुझको दें ।।
गाफिल न हो जाऊँ मैं, सावधान मुझे रखना ।
जब अन्त समय आवे..........इतनी सी...

२. सब नियम सहित दृढ़ता, का पालन करता रहूँ ।
निज आत्म ज्ञान बल से, कर्मो को हरता रहूँ ।।
मुस्कुराता हुआ समाधि, का चरण मुझे होना ।
जब अन्त समय आवे..........इतनी सी...

३. हों क्षमा भाव सब पर, उत्तम क्षमा सभी करना ।
निज अन्तर शोधन का, क्रम जारी ही रखना ।।
समता और समाधि में, मौन मय गुरु मंत्र होना ।
जब अन्त समय आवे..........इतनी सी...

बोध की बगिया में, स्वाध्याय किया मैंने ।
आत्मा का शुध्द रूप, निहारा था मैंने ।।
वह अखण्ड एक टक, विलोकती रहूँ ।
उस निर्विकल्प समाधि में, मैं खोई रहूँ ।।

(४५)

तर्जः-(होंठों से छू लो तुम.............)

हे चिदानन्द चैतन्य,अनुभूति में आ जाओ ।
स्वानुभूति के भावों से, निज मन को भरा पाओ ॥

१. चित्प्रकाशी तुम ही हो, फीके हैं सारे प्रकाश ।
हे निराकार-निरालम्व, तुझमें ही वसा शून्याकाश ॥
रम जाओ,जम जाओ, थम जाओ,समा जाओ ।
स्वानुभूति के भावों से, निज मन को भरा पाओ ॥

२. चिद्‌विलासी हो गुण धाम, निज सौख्य सदन वासी।
पर भावों से हो शून्य, हे समता रस स्वादी ॥
तुम स्वयं,स्वयं परिपूर्ण, अपने मय हो जाओ ।
स्वानुभूति के भावों से, निज मन को भरा पाओ ॥

१. रत्नत्रय की डोर से बंध जा,
उड़ेगा तू स्वात्म के गगन में ।
स्वात्मा जब दिखेगा अनुभव में,
तो मुक्ति लक्ष्मी होगी तेरे मन के आंगन में ।।

२. भावों के सागर में, बहता था मैं ।
कर्म के थपेड़े खाता था मैं ।।
ज्ञान का आधार लिया, दृढ़ता की नाव ।।
मेरे हाथ में पतवार, मिला तरने का दाव ।।

(४६)

तर्जः-(होंठों से छूलो तुम.............)

हे आतम सिध्दोहं, पाया जबसे रूप अखण्ड ।
तुम शुध्द-बुध्द जिन हो, शत वन्दन हो जग बन्द्य ॥

१. आनन्द का पाया पारावार, गागर में सागर सा ।
ले उदधि-उतंग-तरंग , नभ में शशि चुम्बक सा ॥
त्रय लोक में एक सच्चा, पाया अनुपम सहजानन्द ।
तुम शुध्द-बुध्द जिन हो, शत वन्दन हो जग बन्द्य ॥
हे आतम सिध्दोऽहं.......

२. वह अकथ सुरति अविराम, अव्यक्त धरोहर है ।
भव सागर को नौका, चेयानन्द पयोधर है ॥
है चिंतन में पीयूष, शिव शक्ति का नन्द-अनन्द ।
तुम शुध्द-बुध्द जिन हो, शत वन्दन हो जग बन्द्य ॥
हे आतम सिध्दोऽहं.......

३. गुरुवाणी की वीणा से, सुज्ञान महान मिला ।
प्रगति की प्रशस्त मंजिल, पाने,तारण पंथ चला ॥
अविराम चलो आतम, जहाँ तेरा सौख्य सदन ।
तुम शुध्द-बुध्द जिन हो, शत वन्दन हो जग बन्द्य ॥
हे आतम सिध्दोऽहं.......

नाम रुप जिसके नहीं, और अनेकों नाम ।
ऐसा सिध्द स्वरुप पाया, अपना आतम राम ।।

(४७)

तर्ज:-(होंठों से छूलो तुम..........)

आतम की गलियों में, शुध्दात्म की जय करलो।
बन जाओ मीत मेरे, ध्रुव धाम विजय करलो ।।

१. कल-जन-मन-रंजन से, सुख सत्ता न्यारी है।
दृढता की मूरति है, वैराग्य की धारी है ।।
अचिन्त्य-चिंतामणी को, शाश्वत में लय करलो।
बन जाओ मीत मेरे, ध्रुव धाम विजय करलो ।।
आतम की गलियों में ....

२. मैं हूँ वह ब्रह्मानन्द, दिव्यधार का सागर हूँ।
अतुलित-अखंड-अनुपम, स्वात्म रस की गागर हूँ।।
द्रव्य-भाव-नो कर्मों को, स्व शक्ति से क्षय करलो।
बन जाओ मीत मेरे, ध्रुव धाम विजय करलो ।।
आतम की गलियों में ....

चलो विजय मुक्ति श्री, यही तेरे पुरुषार्थ की इति श्री
तारण तरण से गुरू नही जग में,
भेद ज्ञान तत्वनिर्णय धर मग में।।
करो पुरुषार्थ शुभारम्भ श्री; चलो विजय मुक्ति श्री...

○ ◆ ◆ ◆ ○

गुरू ज्ञान की खान हैं, मैं बालक नादान।
गुरू वाणी के पान से, बन जाऊँ भगवान।।

(४८)

(समय नाम आत्मा-समय नाम काल)

तर्ज:-(होठों से छूलो तुम..............)

समय नाम आतमा को, जो जाने सो ज्ञानी।
समय सार त्रय रत्नाकर, जो डूबे सो ध्यानी।।

१. यह समय मिला पावन, समयसार का कर वेदन।
हर समय-समय चिंतन, अहा समय का हो दोहन ।।
समय प्रतिबिम्ब सिध्दं का, बना दर्पण समय जानी।
समयसार त्रय रत्नाकर......समय नाम आत्मा को.....

२. करो समय संभाल सदा, बहको न समय के संग।
समय सदा नहीं मिलता, स्वाध्याय समय का रंग ।।
समय सदा-सदा शुध्दं, स्व,उपयोगी बन पानी।
समयसार त्रय रत्नाकर......समय नाम आत्मा को.....

३. समय खोया अनन्ते जन्म, समयसार ग्रहण करो मन।
अब समय समाधि का, हर क्षण हो उपक्रम ।।
यही कहते गुरु तारण, समय ध्यावे सो ध्यानी।
समयसार त्रय रत्नाकर......समय नाम आत्मा को.....

◆◆◆○◆◆◆○◆◆◆

सबसे जय तारण तरण और उत्तम क्षमा।
मन शान्त और निर्विकल्प हो रहा है घना।। .
महावीर वाणी को पाई गुरु तार से।
श्री संध द्वारा बिठाई मन को मंदिर बना, मन को मंदिर बना।।

○ ◆ ◆ ◆ ○

मंजिल तो ज्ञात हो गई है, रास्ता निकालें हम।
सम्यक्त्व साथ बढ़ चलें, जब तक है दम में दम।।

(४९)

तर्जः-(होंठों से छू लो तुम.........)

हम ओम नमः सिध्दं, कह करते सिध्द वन्दन।
श्री सिध्द स्वरूप स्व का, नित आतम अभिनन्दन॥
हम ओम नमः सिध्दं.......

१. लिपि और अलिपी में रम, आतम की तल्लीनता।
जड़-पुदगल से न्यारा, चेतन की परिपूर्णता॥
नित ओम नमः सिध्दं, ध्याते निज सिध्द नन्दन।
श्री सिध्द स्वरूप स्व का, नित आतम अभिनन्दन॥
हम ओम नमः सिध्दं.......

२. यह अमृत कल्पतरु, करता है अभिनव सृजन।
हर आतम में प्रतिष्ठित, उठतीं हैं व्योमी तरंग॥
क्रम ओम नमः सिध्दं, का रहे रग-रग चंदन।
श्री सिध्द स्वरुप स्व का, नित आतम अभिनन्दन॥
हम ओम नमः सिध्दं.......

३. है सबसे सुलभ-सरल, गुण शक्ति का पिंड़ प्रचण्ड़।
सांसो में बस जाये, केवल ज्ञान का सूर्य अखण्ड़॥
मन ओम नमः सिध्दं, सोहं का कर वेदन॥
श्री सिध्द स्वरूप स्व का, नित आतम अभिनन्दन॥
हम ओम नमः सिध्दं.......

(५०)

पूज्य श्री संत-स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज

प्रेरणा के स्रोत हैं ये, हैं प्रकाश स्थम्भ मेरे।
अज्ञान की काली निशा में, जलती मशालें ज्योत मेरे॥
प्रेरणा के ......

१. आप्त-आगम के वचन का, गुरु दिया था बोध टेरे।
श्रंखला की उस कड़ी में, जुड़ गई है इक लड़ी रे॥
प्रेरणा के ......

२. ज्ञानानन्द-ब्रह्मानन्द हैं वे, नाम आत्मानन्द के रे।
सुप्त मन तू बोध ले रे, आये चलकर द्वार तेरे॥
प्रेरणा के ......

३. अब ना चेते तो घनेरे, कर्म तुझको और घेरे।
कौन-कैसे-कब बताये, ज्ञानानन्द जादू सा फेरे॥
कौन-कैसे-कब बताये, ब्रह्मानन्द जादू सा फेरे॥
प्रेरणा के ......

४. भेद ज्ञानी बन जा प्राणी, सद गुरु उपदेश ले रे।
तत्व निर्णय के सहारे, लगजा भव सिंधु किनारे॥
प्रेरणा के ......

गुरुवाणी का प्रसाद ही, देता है उमंग।
गुरुवाणी के पान से , अमृत अंग-अंग।
यह ज्ञान पुंज आत्मा, अमर हो जायेगी।
ध्रुव सत्ता शून्य में, शाश्वत हो ठहर जायेगी॥

(५१)

आगम के उदयाचल पर, जब उदित हुई रवि रश्मि।
यह प्रखर ज्ञान पुंज फैला, मिट गई अज्ञानी भस्मी ।।

१. हैं गुरुवर ज्ञान प्रणेता, शुध्दातम ज्ञान के दाता ।
नहीं तीन लोक में कोई, गुरु-शिष्य सा अदभुत नाता।।
प्रभुवर से मिलाने वाला, स्व तारण-तरण का स्वामी।
यह प्रखर ज्ञान पुंज फैला, मिट गई अज्ञानी भस्मी ।।
आगम के ....

२. निज आत्म मेरा शुध्दातम, अनुभूति में परमातम ।
पुरुषार्थ सबल हो उच्चतम, जब तक है दम में ये दम ।।
नामों से विभूषित लेकिन, एकत्व सदा अनामी ।
यह प्रखर ज्ञान पुंज फैला, मिट गई अज्ञानी भस्मी ।।
आगम के ....

३. अलख-अगोचर-अगम-अरूपी, नन्ता नन्त प्रदेशी।
रत्नत्रय मय केवलज्ञानी, नन्त चतुष्टय वेषी ।।
हर तन में बसा हुआ है, यह ईश्वर अन्तर्यामी ।
यह प्रखर ज्ञान पुंज फैला, मिट गई अज्ञानी भस्मी ।।
आगम के ....

४. हे ज्ञानानन्द जी स्वामी, गुरु वाणी के तुम दानी ।
इस पंचम काल में गुरुवर, बन गये धर्म का तरुवर ।।
ज्ञान के फल जब बाँटे, बन गये सभी भेद ज्ञानी ।
यह प्रखर ज्ञान पुंज फैला, मिट गई अज्ञानी भस्मी ।।
आगम के ....

(५२)

वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला दो ।
पूज्य ज्ञानानन्द जी के, चरणो में उसको चढ़ा दो ।।
वंदना के इन स्वरों में....

१. भाव की अँजुलि बनाकर, ज्ञान के कुसुम सजाकर ।
श्रध्दा-भक्ति-नम्रता मय, दीप दीप्ति मय सजा दो ।।
वंदना के इन स्वरों में....

२. आत्म की आराधना का, मंत्र आतम उनसे ले लो ।
अहं ब्रह्मास्मि-सिध्दोहं का, सतत रस गुरु घोल दे दो।।
वंदना के इन स्वरों में....

३. तारण-तरण गुरु राज के, चरणार विन्दों पर चले जो।
स्वामी ज्ञानानन्द जी के, ही बताये पथ पे चल दो ।।
वंदना के इन स्वरों में....

४. होगी सच्ची वन्दना और, अर्ध्य या श्रध्दानजली मय।
ज्ञान के सागर में सारे, भाव परता मय बहा दो ।।
वंदना के इन स्वरों में...

ज्ञान -दर्शन-चारित्र की टकसाल मेरी आतम
नित नये अनुपम गुणो की बरसात मेरी आतम
उन्मुख हुए निज समाधि की ओर, मिटाने मातम
सूर्य-चन्द्र से अनन्त गुणा, प्रकाशित मेरी आतम

(५३) (तर्ज़:-नगरी नगरी द्वारे द्वारे.....)

सूना सूना लगत हमारो मन, बिना ज्ञानानन्द महाराज के।
अध्यात्म शिरोमणी थे तुम सबके, हम भये बिन गुरुराज के॥
सूना सूना लगत हमारो मन.......

१. धीर-वीर-गम्भीर-प्रसन्न छवि,
आँखों में जब आती है।-२
अन्त समय जो हुई तत्व चर्चा,
परमामृत बरसाती है॥-२
भूलेगा मन कभी न तुमको,
तारण गुरु के बाद से।
सूना सूना लगत हमारो मन, बिना ज्ञानानन्द महाराज के॥

२. ज्ञान की ज्योति जलाई सबमें,
सब बन जायें ज्ञानानन्द।-२
निज आतम का अनुभव करके,
सब पायें नित परमानन्द॥-२
जग हित टीका ग्रंथ सौंप दिये,
ले जिनवर गुरुतार से।
सूना सूना लगत हमारो मन, बिना ज्ञानानन्द महाराज के॥

३. सारा श्री संघ है तुमसा,
लेकिन कमी तुम्हारी है।-२
आओ बोध कराओ फिर से,
विनती विजय हमारी है॥-२
हम सब भी बन जायें तुमसे,
यह पुरुषारथ आज से।
सूना सूना लगत हमारो मन, बिना ज्ञानानन्द महाराज के॥

(५४)

तर्ज़:- (आपकी नजरों ने समझा ....)

ज्ञान की नजरों से देखा, मिल गये मुझे ज्ञानानन्द।
चेतना हर एक में है, ज्ञान का आनन्द घन॥

१. स्वामी ज्ञानानन्द गुरुवर, तुमने पथ दर्शन किया।
आज मेरा मन अपावन, हो गया पावन जिया॥
भेद ज्ञानी बन गया कर, तत्व निर्णय पर गमन।
ज्ञान की नजरों..........॥

२. तुमने की गुरु साधना क्रम, पंथ तारण मुक्ति का।
कर प्रगट सम्यक्त सरिता, रत्नत्रय की नींव का॥
बन सकूँगा मैं भी भगवन, कर,गुरु सरीखा आचरण।
ज्ञान की नजरों..........॥

३. पथ प्रदर्शक तुम हो स्वामी, ब्रह्मानन्द मय सारा संघ।
सब बने भगवान आतम, चाहते गुरुतार सम॥
स्वानुभूति से लबालब, पाऊँ निज में ज्ञानानन्द।
ज्ञान की नजरों..........॥

जब से जाना तब से माना, निज आतम पहिचाना।
ब्रम्ह-ज्ञान के उदबोधन से, जिनवाणी नित पाना॥
भूले-भटके पथिक सभी, सन्मार्ग को पा जावें।
तारण गुरु के अमिय स्वानुभव, से आगम रस चाखें॥

(५५)

'बन्दन'

पूज्य श्री ब्रह्मानन्द जी महाराज

स्वीकारो वन्दन, तुम चरण कमल में ब्रह्मानन्द ।
मन पाये आनन्द, तुम दर्शन से हे ब्रह्मानन्द ॥

१. **आशा पूरी आज हुई है, वर्षावास तुम आये ।**
जिनवाणी जी तुमसे सुनकर , मन भंवरे बन आये ॥
स्वीकारो वन्दन......

२. **दूर-दूर से भी नर नारी, प्रवचन सुनने आये ।**
गुरुवाणी की छाया में मन, अद्भुत आनन्द पाये ॥
स्वीकारो वन्दन......

३. **भेद ज्ञान तत्व निर्णय को भी, तुमने सहज बताये ।**
आत्म ज्ञान की ज्योति जलाकर, सबको भविक बनाये॥
स्वीकारो वन्दन......

विपरीत प्रसंगों की राम वाण औषधि
पर्यायी परिणमन की, हितकारी सखी
साध्य की साधना में, प्रमुख भूमिका लगी
गुरुतार की पावन गिरा से, आत्म ज्ञान पा मैं जगी

(५६)

ब्रह्म ज्ञान मिला तुमसे ऽ ऽ, ब्रह्म ज्ञानी गुरु तुमसे ॥

१. **ब्रह्म स्वरूप निजातम पाई, ब्रह्म मयी आतम दर्शायी ।**
ब्रह्मचर्य रमण निज से ऽ ऽ, ब्रह्म ज्ञानी गुरु तुमसे ॥
ब्रह्म ज्ञान मिला .....

२. **ब्रह्म लोक है विन्दस्थाने, ब्रह्म देव शुध्दातम जाने ।**
ब्रह्म भाव वरण करके, ब्रह्मानन्द गुरु तुमसे ॥
ब्रह्म ज्ञान मिला .....

३. **ब्रह्म-ब्रह्म हर चेतन देखा, ब्रह्म मयी शुध्दातम लेखा ।**
ब्रह्मानन्द-नन्द बरसे, ब्रह्म ज्ञानी गुरु तुमसे ॥
ब्रह्म ज्ञान मिला .....

४. **ब्रह्म स्वरूप तरण-तारण जिन, ब्रह्म मयी चेतन चिदानन्द सुन**
ब्रह्माण्ड में ब्रह्म सरसे, ब्रह्म ज्ञानी गुरु तुमसे ॥
ब्रह्म ज्ञान मिला .....

साध्य की इस साधना में एक ही बस आश है ।
कर सकूँ जीवन समर्पण, तज दूँ सकल जग जाल है ॥
लक्ष्य है जो जिन्दगी का, कर सकूँ मैं पूर्ण उसको ।
सत पथ गमन, निजात्मा रमण, बना सके अरिहंत मुझको ॥

(५७)

कविता'

तर्ज़ः-(कह माँ एक कहानी.......)

मन मष्तिष्क और वाणी पर,राज रही जिनवाणी।
ये हैं ब्रह्मानन्द् जी ज्ञानी, ये हैं ब्रह्मानन्द् जी ज्ञानी ॥
मन मष्तिष्क और......

१. बाल पने में गृह को त्यागा,
आतम हित का पथ अपनाया ॥
भेद ज्ञान पहिचानी-२,
ये हैं ब्रह्मानन्द जी ज्ञानी-२ ॥
मन मष्तिष्क और..........

२. सम्यक ज्ञान हृदय में उपजा,
व्रत-दीक्षा-प्रतिमा ले क्रमशः।
मोक्ष मार्ग की ठानी-२,
ये हैं ब्रह्मानन्द जी ज्ञानी-२ ॥
मन मष्तिष्क और..........

३. जन-जन जिनवाणी फैलाई,
धर्म ध्वजा उन्नत फहराई।
बढ़े कदम लाशानी-२,
ये हैं ब्रह्मानन्द जी ज्ञानी-२ ॥
मन मष्तिष्क और..........

४. पंचम काल भी सच्चे ज्ञानी,

ज्ञानानन्द-ब्रह्मानन्द से हम जानी
धन्य आत्म अद्भत विज्ञानी-२,
ये हैं ब्रह्मानन्द जी ज्ञानी-२ ॥
मन मष्तिष्क और..........

५. पुण्य हमारा अतिशय पावन,
नगर पिपरिया हुआ आगमन।
वर्षावास सुधा बरसानी-२,
ये हैं ब्रह्मानन्द जी ज्ञानी-२ ॥
मन मष्तिष्क और..........

६. भूल चूक हमरी मत लीजो,
ज्ञान देहु अज्ञान हरीजो।
तुम,सम दृष्टि हम जानी-२,
ये हैं ब्रह्मानन्द जी ज्ञानी-२ ॥
मन मष्तिष्क और..........

अहिंसा का महाकुंभ, इक्कीसवीं सदी का मंगलाचरण है।
सबके जीवन की रक्षा हो, सब तारण तरण हैं ॥सब......
....
सपनों की दुनियाँ में जीने वाले, हकीकत में मारे जाते हैं।
मोह मदिरा को पीने वाले, सच्चे सुख से वंचित रह जाते हैं ॥

(५८) ब्रह्मानन्द-ब्रह्मानन्द जी

आत्म ब्रह्म है रमण नन्द है, जो पाये वह ब्रह्मानन्द हैं।

१. परम पूज्य ब्रह्मानन्द आये,
ब्रह्म प्राप्ति की विधि बताये।
पाले जो जिन लघु नन्दन है,
जो पाये वह ब्रह्मानन्द है॥

आत्म ब्रह्म है रमण नन्द है, जो पाये वह ब्रह्मानन्द हैं।

२. तारण गुरु के जिन वचनों को,
आत्म सात कर उस वैभव को।
मुक्त हस्त जन हित अर्पण है,
सक्षम श्री ब्रह्मानन्द हैं॥

आत्म ब्रह्म है रमण नन्द है, जो पाये वह ब्रह्मानन्द हैं।

३. त्याग मूर्ति बाल ब्रह्मचारी,
श्री बसंत जी पावन आचारी।
वर्षावास पिपरिया आये,
यही तो वे ब्रह्मानन्द हैं॥

आत्म ब्रह्म है रमण नन्द है, जो पाये वह ब्रह्मानन्द हैं।

जो कदम बनाये खुद मंजिल, वह ज्ञान की मंजिल होती है।
अभ्यास में असाधरण शक्ति है, वह उपलब्धि में शिव देती है।

(५९)

बसंत ऋतु - बसंत गुरु

छाई बसंत ऋतु---आये बसंत गुरु,
हो गये बसंत शुरु --- भाये बसंत गुरु,
भाया जग को बसंत---पाया हमने बसंत,
देखो बसंत निहार----दे रहे बसंत ज्ञानाहार,
फूले बसंत फूल---------- भूले बसंत जगशूल,
भरता बसंत प्रमोद---करते बसंत निज खोज,
आया बसंत फिर------होगये बसंत थिर,
सुरभित बसंत वन---बन गये बसंत संत,
सुन्दर बसंत है---निज में बसंत हैं,
शोभा बसंत प्यारी---आतम बसंत न्यारी,
कूके खग-गण बसंत ---सब बोलो जय बसंत,
बसंत ऋतु मन आनन्द --- बसंत भये ब्रह्मानन्द,
डाल-डाल फूले बसंत ----घर-घर हों बालक बसंत,
बसंत होत राज ऋतु-------ज्ञानानन्द बसंत गुरु !!!

ॐ

शक्ति हीन हूँ भक्ति हीन हूँ, अज्ञानी हूँ निपट गंवार।
समकित ज्योति जगादो उर में, दिखलादो गुरु शिवपुर द्वार

(६०)

मंदिर विधि (दोहा)

मंदिर विधि की एकरुपता, सबको अति भाये ।
अर्थ सहित है क्रमशः सब कुछ, मन आनन्दित हो गाये ।।
अर्थ सहित अब जाना हमने, आगम का यह सार ।
धन्य-धन्य है ब्रह्मानन्द जी, आपका यह उपकार ।।
अव्यक्त और अनिर्वच पाया, शुध्दि का भण्डार ।
सभी बनेंगे भव्य आत्मा, जो श्रध्दा उर धार-२ ।।

भजन

तर्जः-(सावन का महीना पवन करे सोर.......)

मन्दिर विधि को सुनकर, मन फूला नहीं समाय।
मन्दिर विधि है प्राण हमारा, नित प्रति आतम पाय।।

१.तत्व मंगल ओंकार की महिमा,दर्शन और श्री विनती फूलना।
चौबीसी जी प्रणमूँ, सिर बीस तीर्थंकर नाय।।
मन्दिर विधि है प्राण हमारा, नित प्रति आतम पाय।।
मन्दिर विधि को.......

२.विनय बैठक का वर्णन ऐसा, सत्य नहीं कोई इसके जैसा।
नाम लेत पातक कटें, गुरु गरिमा हम पाय।।
मन्दिर विधि है प्राण हमारा, नित प्रति आतम पाय।।
मन्दिर विधि को...

३.आशीर्वाद मिले वरदान जैसे, अबलबली जिन वैन बली के।
निर्वल को बल देते, श्री सम्यक प्रगटाय।।

मन्दिर विधि है प्राण हमारा, नित प्रति आतम पाय।।
मन्दिर विधि को...

४.चंदन है पहिचान हमारी, आरति से अ-रति भव हारी।
महावीर से पाया, प्रसाद का बहुमान ।।
मन्दिर विधि है प्राण हमारा, नित प्रति आतम ध्यान।।
मन्दिर विधि को...

(६१)

तर्जः-(सावन का महीना ....)

गुरु वाणी सुन के आया, सफल हुआ जन्म ।
पार लगेगी नैया, ये कहता मेरा मन ।।
गुरु वाणी सुन के....

१. जनम-जनम में, मिथ्यात्व पाला ।
मान पराया अपना, बोझ संभाला ।।
आज हुआ है हल्का, अकर्ता है आतम ।
पार लगेगी नैया, ये कहता मेरा मन ।।
गुरु वाणी सुन के....

२. शुध्द आतम ही, परमात्म पाया ।
हर आतम में, पद ये समाया ।।
पूजा-जप-तप सारे, हो सम्यक जब आतम ।
पार लगेगी नैया, ये कहता मेरा मन ।।
गुरु वाणी सुन के....

(६२)

तर्ज़ः-(सावन का महीना ....)

विषयों के विषधर से, बचने को है संयम।
करना है अब मुझको, सब पालन यम-नियम॥
विषयों के विषधर से......

१. किरिया अठारह से, शुरु करो पालन।
इन्द्रिय प्राणी संयम, मन प्रक्षालन॥
शुभ भावों से पुण्य बंध, होता है सहजतम।
करना है अब मुझको, सब पालन यम-नियम॥
विषयों के विषधर से......

२. मूल भूत वस्तु का, ज्ञान करो हासिल।
उपलब्धि है, आत्म निरीक्षण॥
सत्य की शोध-खोज, अभीष्ट का साधन।
करना है अब मुझको, सब पालन यम-नियम॥
विषयों के विषधर से......

३. शुध्द आत्म तत्व की, महिमा निराली।
वैराग्य वर्धन, कथा अंतर वाली॥
तत्व ज्ञान से हुआ, विरागी मेरा मन।
करना है अब मुझको, सब पालन यम-नियम॥
विषयों के विषधर से......

(६३)

तर्ज़ः-(सावन का महीना ....)

ज्ञान के उदयाचल पर, हुआ है सम्यक भान।
मुक्ति मार्ग का यही, है सच्चा सोपान॥
ज्ञान के उदयाचल.......

१. भेदज्ञान किया था, तत्व निर्णय संग।
अणुव्रत पाले, आकिंचन रंग॥
आत्म ज्योति जब प्रगटी, तो पाया सम्यकज्ञान।
मुक्ति मार्ग का यही, है सच्चा सोपान॥
ज्ञान के उदयाचल......

२. तारण पंथ मिला, मिल गई कुंजी।
रत्नत्रय है, सारी पूंजी॥
केवलज्ञान को पाकर, अन्त लहें निर्वाण।
मुक्ति मार्ग का यही, है सच्चा सोपान॥
ज्ञान के उदयाचल......

३. हे आतम तुम, भव से तर लो।
गुरु वचनों पर, श्रध्दा कर लो॥
शिव पथ दूजा न कोई, है देख लिया जग छान।
मुक्ति मार्ग का यही, है सच्चा सोपान॥
ज्ञान के उदयाचल......

(६४)

तर्ज़ः-(सावन का महीना ....)

देव-गुरु की महिमा, जय तारण तरण में।
फिर काहे को रोक लगाते, धर्म के मग में ।।
देव-गुरु की महिमा.....

१. देव हमारे, तारण तरण हैं।
गुरुवर हमारे, तारण तरण हैं ।।
गुरु न होते तो कौन बताता, देव स्वरूप हूँ मैं।
फिर काहे को रोक लगाते, धर्म के मग में ।।
देव-गुरु की ....

२. जिनवर-जिनेन्द्र ने, भी यह बताया।
देव-गुरु तारण , तरण कहाया ।।
सबका अपना आतम, भी तारण तरण मय।
फिर काहे को रोक लगाते, धर्म के मग में ।।
देव-गुरु की ....

३. जय जिनेन्द्र में है, देव की महिमा।
वे भी गुरु थे पहले, कह दो जी 'हाँ' ।।
गुरु से कपट करोगे, तो जाओ रसातल में।
फिर काहे को रोक लगाते, धर्म के मग में ।।
देव-गुरु की ....

(६५)

तर्ज़ः-(सावन का महीना ....)

आत्म नाम की वीणा, अन्तर में गुनगुनाय।
आत्म ध्यान में डोले, परमातम पद पाय ।।

१. आतम हमारा, शुध्दातम है।
शुध्दातम का, सम्यक धन है ।।
त्रय रत्नों की साधना, चतुष्टय प्रगटाय।
आत्म ध्यान में डोले, परमातम पद पाय ।।
आत्म नाम की वीणा......

२. तारण पंथ ही, मुक्ति का पथ है।
किरिया अठारह, मुक्ति का रथ है ।।
इस पर बैठो चेतन, शिव नगरी पहुँचाय।
आत्म ध्यान में डोले, परमातम पद पाय ।।
आत्म नाम की वीणा......

३. तारण वाणी, मार्ग दिखाती।
तारण तरण सा, तुम्हें भी बनाती ।।
निज शक्ति के बल से, सिध्दोऽहं बन जाय।
आत्म ध्यान में डोले, परमातम पद पाय ।।
आत्म नाम की वीणा......

चिदानन्द के ज्ञान गुणो में, हो जाना तल्लीन।
तभी साधना सच्ची होगी, हो आत्मस्थ रहो लवलीन ।।

(६६)

तर्ज़ः-(सावन का महीना ....)

महावीर की वांणी, में पाया सम्बोधन।
तीर्थंकर सा बन जा, कर आतम आराधन॥

१. आतम विमल है, आतम ममल है।
आतम सरोवर, ज्ञान रूपी जल है॥
भव सागर से तरने, को कर सम्यक्त्व ग्रहण।
तीर्थंकर सा बन जा, कर आतम आराधन॥
महावीर की वांणी, से पाया.....

२. नदी-नाव संयोग, तन-आत्मा का।
भव-भव है नदिया, तत्व ज्ञान नैया॥
आत्म ज्ञान से तर जा, विरक्ति का सावन।
तीर्थंकर सा बन जा, कर आतम आराधन॥
महावीर की वांणी, से पाया.....

३. जियो और जीने दो, करुणा बहाओ।
भेदज्ञान-तत्व निर्णय, में अब समाओ॥
त्रिकाली-ध्रुव-शाश्वत, बन जाओ भगवन।
तीर्थंकर सा बन जा, कर आतम आराधन॥
महावीर की वांणी, से पाया.....

धूल का सब ढेर है, मान्यता का फेर है।
ज्ञान में आ जाय जब, आत्मा ही ध्येय है॥

(६७)

तर्ज़ः-(सावन का महीना ....)

निज ज्ञान मयी का सागर, मेरी आतम का है घर।
करता है किल्लोलें, निज परमामृत से भर॥

१. अकथ-अनुपम-अविचल पाया।
तीन लोक विस्तृित, निज में समाया॥
तीन काल में सत्ता, रहती है शाश्वत।
करता है किल्लोलें, निज परमामृत से भर॥
निज ज्ञान मयी का.....

२. अनुभव हीरा, आतम जौहरी।
भव सागर का, बन गया कर्म हरी॥
सिध्दं सिध्द स्वयं में, पीता है ज्ञानामृत।
करता है किल्लोलें, निज परमामृत से भर॥
निज ज्ञान मयी का.....

३. आतम श्रध्दा, जिनवर वाणी।
करना स्वयं से, कर्मों की रवानी॥
तू ही तो पुरुषार्थी, तू ही है अक्षय वर।
करता है किल्लोलें, निज परमामृत से भर॥
निज ज्ञान मयी का.....

आत्मा है तारण तरण, मुक्ति है आतम रमण।
दिया धर्म का सच्चा मारग, वन्दे श्री गुरु तारणम्॥

(६८)

तर्जः-(सावन का महीना ....)

भक्ति में लग जाये, ये मन मेरा चंचल।
आत्म परम पद भक्ति, में हो जाये अचल ।।

१. ओम मंत्र जपते-जपते, ओम में समाऊँ ।
ओम रूप ध्याते-ध्याते, ओम मय हो जाऊँ ।।
परमेष्ठि पद पाकर, मैं हो जाऊँ निश्चल ।
ओम परम पद भक्ति, में हो जाये अचल ।।
भक्ति में लग जाये........

२. ओम मंत्र पाया सारे, मंत्रों में महान है ।
ओम रूप आतम ज्ञान, ज्ञानों में महान है ।।
ओम रूप मेरा आतम, हो जाये अमल ।
ओम परम पद भक्ति, में हो जाये अचल ।।
भक्ति में लग जाये........

साध्य की इस साधना में एक ही बस आश है।
कर सकूँ जीवन समर्पण,
तजदूँ सकल जग जाल है ।।

ओम रूप नमोकार का, नमू पंच परमेष्ठि।
जो ध्यावे नित ओम को, आत्म परम संतुष्टि।

(६९)

तर्जः-(सावन का महीना ....)

निज में आ जा चेतन, समकित से कर श्रंगार।
यही तो तेरी प्रगति, पाओगे समयसार ।।

१. निज आत्म तत्व की, महिमा निराली ।
वैराग्य वर्धन, कथा अन्तर वाली ।।
शुध्दता की लेकर, कुंजी, खोलेंगे मोक्ष दुआर।
यही तो तेरी प्रगति, पाओगे समयसार ।।

२. मैं ही त्रिकाली, ध्रुव तत्व मांही ।
मुझमें समाया, अहं ब्रह्मास्मि ।।
सोऽहं सिध्दं सोऽहं, का मैं ही अवतार ।
यही तो तेरी प्रगति, पाओगे समयसार ।।

३. श्रध्दा विनय गुण, दृढ़ता से रखना ।
पंच परमेष्ठी, और, आत्मा ही शरणा ।।
जिनवाणी के वचन, अमोलक, तारण पंथ ही सार
यही तो तेरी प्रगति, पाओगे समयसार ।।

सूर्य आत्म के सनमुख फीके,
चंदा की तो कौन बिसात।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा,
उपमा सभी तुच्छ हे तात ।।

(७०)

तर्ज़ः-(सावन का महीना ....)

नेति-नेति कहती, हूँ तेरे गुणों को।
मैं तो शब्द चितेरा, बस ध्याती तुमको ।।

१. जबसे मिला मुझे, ज्ञान आतमा का ।
जिनवर कथित गुरु, तारण तरण का ।।
हो गई कब दीवानी, ये पता नहीं मुझको ।
मैं तो शब्द चितेरा, बस ध्याती तुमको ।।
नेति-नेति कहती.....

२. तारण तत्व,प्रकाश मिला जबसे ।
आत्मा के शौर्य में , डूब गई तबसे ।।
ऐसा अदभुत सम्यक, मिल जाये सबको ।
मैं तो शब्द चितेरा, बस ध्याती तुमको ।।
नेति-नेति कहती.....

३. तत्व जिज्ञासु, आत्मा जी सुन लो ।
शुध्दात्म सत्कार, सदा करना गुन लो ।।
हे परम पारणामिक, तुम अक्षय चिन्मय हो ।
मैं तो शब्द चितेरा, बस ध्याती तुमको ।।
नेति-नेति कहती.....

(नेति-नेति=ये नहीं इससे भी अधिक, ये नहीं इससे भी अधिक)

(७१)

तर्ज़ः-(सावन का महीना ....)

जड़ की बातें छोड़ो, चेतन की बात करो।
श्रध्दा भक्ति संयुक्त, स्वातम में रमण करो।

१. ज्ञानियो के ज्ञान में, आया एक तत्व ही।
एक अज्ञानी के, होते अनन्त मत ही।
तुम भी तो हो ज्ञानी, अब मिथ्या ज्ञान हरो।
श्रध्दा-भक्ति संयुक्त, छद्मस्थ को प्रगट करो ।।जड़...

२. तीन लोक में है, केवल ज्ञान स्तम्भ।
अनन्त चतुष्टय,पंचानन्द का विन्द।
मैं भी तो हूँ ऐसा, यही अनुभवन करो।
श्रध्दा भक्ति संयुक्त, छद्मस्थ में रमण करो ।।जड़...

३. मिट्टी अपना, धर्म निबाहे।
तू क्यों उसमें, फिसल-फिसल जाये।
आकृतियों से उठकर, स्व सिध्दं जयं करो।
श्रध्दा भक्ति संयुक्त, छद्मस्थ को वरण करो ।।जड़...

४. गुरुतार वाणी, मिली पथ दर्शक।
अब क्या कमी है, दौड़ा दीजिये रथ।
हितकारी हैं 'श्री संघ', पुरुषार्थ तो स्वयं करो।
श्रध्दा भक्ति संयुक्त, स्वातम में रमण करो।
जड़ की वातें........

(७२)

तर्जः-(सावन का महीना ....)

शाश्वत सुख की ढेरी, को पाऊँ बारबार।
शून्य स्वभावी सत्ता, का करना सत्कार।।

१. आत्मा मेरी अदभुत निराली ।
रूप और गुण की झांकी बना ली ।।
बार-बार हो दर्शन, यही है मंगलाचार ।
शून्य स्वभावी सत्ता, का करना है सत्कार ।।
शाश्वत सुख की ढेरी.....

२. अर्चना आराधना, ध्रुवता से प्यार है ।
चिंतन-मनन में, चेतना का ज्वार है ।।
आरती-पूजा आतम, निजका है द्वाराचार ।
शून्य स्वभावी सत्ता, का करना है सत्कार ।।
शाश्वत सुख की ढेरी.....

३. आत्मा अखण्ड बल, शाली औकाशी ।
परमानन्द झूले में, परमागम को पाली ।।
रत्नत्रय का तपमय, पालन है यत्नाचार ।
शून्य स्वभावी सत्ता, का करना है सत्कार ।।
शाश्वत सुख की ढेरी.....

अब जग से मुझे क्या करना, बस भेद ज्ञान में रमना
मेरा आतमा परमात्मा, अब सप्त भयों से क्या डरना

(७३)

तर्जः-(होंठों से छूलो तुम ....)

स्वान्तः सुखाय मिला, शुध्दात्म के अर्चन में।
वीतराग की वन्दना है, गीतों की कडियों में।।

१. हैं देव गुरू धर्म तीर्थ, आतम का ही है रूप।
मुझे ज्ञान में आज मिला, मेरा ही स्वय चिद्रूप।।
हुआ जन्म मेरा सार्थक, इन पावन घड़ियों में।
वीतराग की वन्दना है, गीतों की कडियों में।।
स्वान्तः सुखाय मिला.........

२. यह आत्म मनन माला, चिंतन में जम जाये।
दोहन में सुरति पावन, मुझे पुनः पुनः दर्शाये।।
मैं रहूँ सदा निज में, शुध्दात्म की गलियों में।
वीतराग की वन्दना है, गीतों की कडियों में।।
स्वान्तः सुखाय मिला.........

३. रम जाऊं जम जाऊं, थम जाऊं समा जाऊं।
ज्ञान गुण के मन्दिर में, बस उसी मय हो जाऊं।।
अब और न कुछ भाये, सांसों की मणियों में।
वीतराग की वन्दना है, गीतों की कडियों में।।
स्वान्तः सुखाय मिला.........

ज्ञान की औषधि से होगा, भव का विनाश।
ध्रुव तत्व में ही करूंगा, मैं सदा सदा वास।।

(७४)

'गुरुतार वाणी'

तर्जः-(आपकी नजरों ने समझा........)

ज्ञान की नजरों ने समझा, सत्य का उदघोष था।
जिन जिनेन्द्रों का कथन, गुरु वाणी में समावेश था॥
ज्ञान की नजरों ने ......

१. इस दुखम पंचम काल में, हमको मिली जिनवाणी है।
समझे थे न जो विरोधी, अल्पज्ञ और मूढ़ प्राणी हैं॥
(समझे हैं न जो विरोधी, अल्पज्ञ और मूढ़ प्राणी हैं॥)
वीर प्रभु की वाणी में, गुरुतार का सम्बोध था।
जिन जिनेन्द्रों का कथन, गुरु वाणी में समावेश था॥
ज्ञान की नजरों ने ......

२. नित्य तीनो काल तुमको, गुरु नमन हो सर्वदा।
धन्य है यह जन्म मेरा, रत्नत्रय का अर्थ पा॥
पाऊँगा मैं मुक्ति जब-तक, श्रेय तुमको ही सदा॥
जिन जिनेन्द्रों का कथन, गुरु वाणी में समावेश था॥
ज्ञान की नजरों ने ......

३. आत्मा विज्ञान धारी, गुरु चरण चिन्ह पर चलो।
भव का तारक, भव का हारक, ज्ञान श्रेयोमग का लो॥
प्रभु से बढ़कर गुरु जगत में, श्रेष्ठ ज्ञानी मत हुआ।
जिन जिनन्द्रों का कथन, गुरु वाणी में समावेश था॥
ज्ञान की नजरों ने ......

४. जय करूँ तारण तरण की, देव-गुरु अरु धर्म की।
आतमा के रूप तीनो, यह समझ स्वयमेव की॥
'कथितं जिनेन्द्रं' कहा गुरु ने, रंच न अपना कहा।
जिन जिनन्द्रों का कथन, गुरु वाणी में समावेश था॥
ज्ञान की नजरों ने ......

(७५)

तर्जः-(आपकी नजरों ने समझा........)

हर्ष का न पार पाया, आत्म दर्शन जब हुआ।
तुच्छ है त्रय लोक सम्पदा, आत्म वैभव जब हुआ॥
हर्ष का न पार पाया......

१. शाश्वतं-ध्रुव आत्मा है, आवरण था मोह का।
हट गये परदा सभी जब, जय-जयं-जय-जय हुआ॥
रूप देखा है चका-चक, सिध्दोऽहं अवतार था।
हर्ष का न पार पाया......

२. कब मिलूंगा एक होकर, यह लगन ही बस रही।
है अटल इस ध्रुव की सत्ता, शून्य में ही सज रही॥
आत्मा अब प्राण-प्रण से, यह नियम हो सर्वदा।
हर्ष का न पार पाया......

मैं तो आनन्द की दशा हूँ, भेदज्ञान का नशा हूँ।
जिधर देखता हूँ, मैं ही मैं दिखाता॥
बस आतमा ही आत्मा, के सिवा।
कुछ और न सुहाता॥

(७६)

तर्जः-(आपकी नजरों ने समझा........)

ज्ञान की गलियों में देखा, मिल गया चेतन मेरा।
ज्ञानमयी जिनदेव सा है, नित्यानन्द आतम मेरा ।।
ज्ञान की गलियों में....

१. दूर होंगी अनुभवन से, कर्म की जब कालिमा।
हो प्रभा तेजोमयी तब, फैलती ज्योत्स्ना ।।
अनगिनत चन्द्र-सूर्य की भी, कम हुई है अब प्रभा।
ज्ञानमयी जिनदेव सा है, नित्यानन्द आतम मेरा।।
ज्ञान की गलियों में....

२. ज्ञानमय सम्यक्त्व सरिता, हो प्रवाहित बह रही।
पूर्णता के सिंधु में, एकत्व पद को पा गई ।।
अब न बाकी शेष है कुछ, कहने-सुनने को जरा।
ज्ञानमयी जिनदेव सा है, नित्यानन्द आतम मेरा।।
ज्ञान की गलियों में....

३. अब समाओ सर्वदा, हे आत्म सिन्धु ज्ञानमय।
हो अहं ब्रम्हास्मि सिध्दं, शून्य सत्ता विन्दमय।।
बनना है मुझे वीतरागी, रत्नत्रयी बन कर्म हरा।
ज्ञानमयी जिनदेव सा है, नित्यानन्द आतम मेरा।।
ज्ञान की गलियों में....

(७७)

तर्जः-(आपकी नजरों ने समझा........)

अप्प दीपक बन गया, गुरुतार की वाणी को सुन।
यह अमोलक और अदभुत, आत्मा अब निज में गुनऽ।

१. जिन वचन का सार इसमें, और आगम का कथन।
देश-देशान्तर में फैले, और जय हो दिग-दिगन्त।।
धन्य हो गई वसुन्धरा भी, स्पर्श कर श्री गुरु चरण।
यह अमोलक ....अप्प दीपक........

२. मिथ्या माया के गहन, तम में मिले दो दीप हैं।
भेद विज्ञान-तत्व निर्णय, दो प्रखर ज्ञान सूर्य हैं।।
इनके प्रकाश में बढ़ चलो, बन जाओगे तारण तरण।
यह अमोलक ....अप्प दीपक........

३. धन्य है श्री गुरु सुयश और, ज्ञान की पराकाष्ठा।
आत्मा के ज्ञान जागरण, से मिले सच्ची सुधा।।
खोगया सोऽहं अहं में, सिध्द पद विभूति में मन।
यह अमोलक ....अप्प दीपक........

विश्व एक मंदिर बन जाये, शुध्दात्म देव वेदी पर बैठाये।
भाव पूजा से पूजित करें सभी, सम्यक्त्व का अक्षय प्रसाद पाये ।।

(७८)

तर्जः-(आपकी नजरों ने समझा........)

ज्ञान की गहराईयों में, अब उतरना है मुझे।
ऐ मेरी आतम ठहर जा, मिल गई मंजिल तुझे ॥
ज्ञान की गहराईयों में...

१. दूर था अब तक क्षितिज सा, यह मनोबल क्यों मेरा।
मानता जड़ चेतना को, एक था यह भ्रम तेरा ॥
जानता हूँ सत्य अब मैं, भ्रान्ति-भव मेटना मुझे।
ऐ मेरी आतम ठहर जा, मिल गई मंजिल तुझे ॥
ज्ञान की गहराईयों में...

२. मैं निरंजन ध्रुव सदा से, और सिध्दोऽहं सदा।
हूँ अहं ब्रह्मास्मि सोहं, पंच परमेष्ठी तदा ॥
आत्म दीप्ति की प्रखरता, में समाना अब मुझे।
ऐ मेरी आतम ठहर जा, मिल गई मंजिल तुझे ॥
ज्ञान की गहराईयों में...

३. आत्मा अब मौन ले लो, यह मेरी फरियाद है।
मोह-ममता छोड़ दे अब, तू जगत का नाथ है ॥
सत्ता अब शून्य में समावे, क्योंकि शिव पाना मुझे।
ऐ मेरी आतम ठहर जा, मिल गई मंजिल तुझे ॥
ज्ञान की गहराईयों में...

(७९)

तर्जः-(आपकी नजरों ने समझा........)

चेतना के स्वर में गुंजन, आत्मा तारण तरण।
अब त्रिकाली सत्य ध्रुव का, आत्मा करलो वरण ॥
चेतना के स्वर में गुंजन.....

१. चेतना-चैतन्य लक्षण, था तेरा और है सदा।
तू भी आतम शिवपुरी का, बन जा शासक अब अहा ॥
सिध्द पद तेरा स्वयं है, पाने को हो अवतरण।
अब त्रिकाली सत्य ध्रुव का, आत्मा करलो वरण ॥
चेतना के स्वर में गुंजन.....

२. तू है टंकोत्कीर्ण अप्पा, शुध्द सत्ता विन्दु मय।
ज्ञान का वैभव विरासत, मिल गया जिनवाणी मय ॥
शीघ्र कर पुरुषार्थ तेरा, मेट दे अब जन्म-मरण।
अब त्रिकाली सत्य ध्रुव का, आत्मा करलो वरण ॥
चेतना के स्वर में गुंजन.....

जप तप तो बहुत किये, पर भेद ज्ञान नहीं किया।
संसार तो लगा पराया, पर आतम हित नहीं किया ॥

ये मंज़िलें ये राहत, परमात्मा की याद।
जाना है जबसे निज को, मैं हो गया आबाद ॥

(८०)

तर्ज़ः-(आपकी नजरों ने समझा........)

ज्ञान के सिन्धु में डूबा, आज मेरा प्यासा मन।
भर गया अतृप्त मनवा, मिल गये आनन्द घन।।
ज्ञान के सिन्धु में......

१. अब लगाई है लगन, शुध्दात्मा को पाना है ।
तन में रहता आत्मा जो, उसको ही अब ध्याना है ।।
ज्ञान की ज्योति जले, दिन-रात पाऊँ सहजानन्द ।
भर गया अतृप्त मनवा, मिल गये आनन्द घन ।।
ज्ञान के सिन्धु में.......

२. सदगुरु सत्संग से मैं, स्व प्रकाशी बन गया ।
आत्मा का साक्षी ज्ञायक, ध्रुव स्वाभावी मिल गया।
जप लो सिध्दोहं सदा मन, लख लो निज में चेयानन्द।
भर गया अतृप्त मनवा, मिल गये आनन्द घन ।।
ज्ञान के सिन्धु में.......

सदा दिवाली संत की, आठों प्रहर आनन्द ।
सुख खोजें जो आतम में, सदा रहें सानन्द ।।

शान्ति-आनन्द और मुक्ति,
यही है जीवन जीने की युक्ति ।।

(८१)

तर्ज़ः-(आपकी नजरों ने समझा........)

आज मेरा मन अपावन, हो गया पावन परम।
बोधि दुर्लभ पाया मैंने, गुरुवाणी तारण तरण।।
आज मेरा मन ....

१. बोल आतम बोल अब क्या, और बाकी रह गया ।
तत्व का उपदेश पाया, मिथ्या तिमिर अब खो गया।।
ज्ञान का पाया उजाला, अर्क रवि का जागरण ।
बोधि दुर्लभ पाया मैंने, गुरुवाणी तारण तरण ।।
आज मेरा मन ....

२. ब्रह्म में अब रमण करना, शील-संयम चूनरी ।
जैन कुल जिनवाणी पाई, जागे-जागे भाग्य री ।।
श्रध्दा-भक्ति संग सम्यक, बन जाओ तारण तरण ।
बोधि दुर्लभ पाया मैंने, गुरुवाणी तारण तरण ।।
आज मेरा मन ....

३. यह समय-सौभाग्य-उपयोग, में लगाओ अपना मन।
काल की रेखा सरकती, हो जायेगा कब गमन ।।
इससे पहले ही मिटा, संसार का यह परिभ्रमण ।
बोधि दुर्लभ पाया मैंने, गुरुवाणी तारण तरण ।।
आज मेरा मन ....

(८२)

तर्ज़ः-(आपकी नजरों ने समझा........)

आतमा अनुपम डगर की, वह कड़ी है वह कड़ी ।
जुड़ गया जो भी जरा भी, धन्य हो गई वह घड़ी ॥

१. आत्मा का ज्ञान पाया, ध्यान में रम जाइये ।
भाग सौवाँ भी सेकेन्ड का, मुक्ति पथ पग पाइये ॥
ज्ञानियों की वचन वर्गणा, किंचित् कभी भी न टली।
जुड़ गया जो भी जरा भी, धन्य हो गई वह घड़ी ॥
आतमा अनुपम डगर.....

२. आत्मा अन्तिम निवेदन, कर रहे हैं आपसे ।
भेदज्ञानी, तत्व निर्णयी, बन विराजो आज से ॥
यह जनम सारे जनम की, तोड़ दे सारी लडी ।
जुड़ गया जो भी जरा भी, धन्य हो गई वह घड़ी ॥
आतमा अनुपम डगर.....

३. चेतना मेहमान हो तुम, अब चलो स्व धाम में ।
मोह-ममता सब बिसारो, क्यों फसीं धन धाम में ॥
अर्चना-आराधना कर, स्वात्मा सन्मुख खड़ी ।
जुड़ गया जो भी जरा भी, धन्य हो गई वह घड़ी ॥
आतमा अनुपम डगर.....

४. उपकार है श्री संघ का, गुरु वाणी सहज और साध्य की।
तारण तरण की वाणी को, गुरुतार जन जन बाँट दी ॥
पुण्य है सातिशय हमारा, मिल गई शिव पथ मणी ।
जुड़ गया जो भी जरा भी, धन्य हो गई वह घड़ी ॥
आतमा अनुपम डगर....

(८३)

तर्ज़ः-(आपकी नजरों ने समझा........)

नींद से अब जाग चेतन, आत्मा में मन रमा ऽ।
आत्मा से प्रीति कर अब, चेतना में तू समा ऽ॥
नींद से अब ......

१. हो गई है भोर कबसे, ज्ञान का सूरज उगा ।
बीत जाये न दिवस यह, कौड़ियों से न चुका ॥
वीतरागी बनना तुझको, राग से मन को हटा ।
आत्मा से प्रीति...........नींद से अब ....

२. भेदज्ञान और तत्व निर्णय, करते रहना सर्वदा ।
गुणमयी निज आत्मा की, हर अदा पर हो फिदा ॥
तुम तिमिर भंजन निरंजन, रत्नत्रय धन को कमा ।
आत्मा से प्रीति...........नींद से अब ....

३. मोह की काली घटा और, यह कषायी आवरण ।
तुझमें शक्ति सिध्द जैसी, कर दे उसका अनावरण ॥
पुण्य के इस पुंज में अब, धर्म का विरबा लगा ।
आत्मा से प्रीति...........नींद से अब ....

मेरे घर आये भगवान, कह गये करो भेदविज्ञान ।
रखना तत्व निर्णय का ध्यान, इसी से होगा आतम कल्याण ॥
....
क्रोध पराजय का लक्षण, इर्ष्या द्वेष स्वयं का भक्षण ।
इनको तज दो, आतम तत्क्षण, भेदज्ञान से होगा रक्षण ॥

(८४)

तर्ज़ः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,..............)

परिपूर्ण प्रभु हूँ, गुण मय निधान का।
आत्मा शुध्दात्मा, नाम पहिचान का।।

१. त्रय रत्नों का, भरा है सरोवर।
कल्लोल करता, अनुभव से भर।।
आनन्द कंद हूँ, चैतन्य धाम का।
आत्मा शुध्दात्मा, नाम पहिचान का।।
परिपूर्ण प्रभु हूँ.....

२. अलख निरंजन, कहते हैं ज्ञानी।
सम्यक्त्व दर्शन, पाते भेद ज्ञानी।।
तत्व निर्णय है, समता के दान का।
आत्मा-शुध्दात्मा, नाम पहिचान का।।
परिपूर्ण प्रभु हूँ.....

३. स्वानुभव में प्रतिविम्ब, मैं सिदोहं।
तुझमें और मुझमे, भेद कैसा सोहं।।
जिनवाणी वर्णन, आत्मा के ज्ञान का।
आत्मा शुध्दात्मा, नाम पहिचान का।।
परिपूर्ण प्रभु हूँ.....

भव भंजन मुक्ति वरण, आत्म देव जिन देव।
प्रथम नमू जिन देव को, अरिहंत सिध्द स्वयमेव।।

(८५)

तर्ज़ः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,..............)

सौगात मुझको, मिली है सुरति की।
सम्पूर्ण पाने को, बेचैन हूँ मैं।।

१. अनुभव माणिक, जबसे पाया।
क्षण भर में जो, आनन्द आया।।
उसी की सुरति को, सुमरत हूँ मैं।
सम्पूर्ण पाने को, बेचैन हूँ मैं।।
सौगात मुझको......

२. शुध्दात्मा को प्रभु सम पाई।
आगम कथन को, यथावत पाई।।
कब मेरे प्रभु का, दर्शन करुँ मैं।
सम्पूर्ण पाने को, बेचैन हूँ मैं।।
सौगात मुझको......

३. हे मन रुक जा, विकल्पों की दौड में।
शान्ति निर्विकल्पता की, लग जाओ होड़ में।
दो न रहें हम, खो जायें अद्वैत में।।
सम्पूर्ण पाने को, बेचैन हूँ मैं।।
सौगात मुझको......

४. वह मेरा प्रीतम, मैं उसकी जोगन।
करूँ तप निरन्तर, मिलेगा तब मोहन।।
करना है दोहन, परमात्मा मैं।
सम्पूर्ण पाने को, बेचैन हूँ मैं।।
सौगात मुझको......

(८६)

तर्जः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,..............)

वही समय पावन, जब आत्म चिन्तन ।
देश काल कोई, रहे कोई आसन ।।

१. आतम हमारी, सिध्द स्वरूपी ।
चेतन हमारी, अरस और अरुपी ।।
श्रध्दान,आचरण, यही जिन शासन ।
देश काल कोई, रहे कोई आसन ।।
वही समय पावन...

२. भावों में होवे, विरक्ति का सावन ।
करुणा अहिंसा, क्षमा मन भावन ।।
सहजता सरलता में, रहो मेरी आतम ।
देश काल कोई, रहे कोई आसन ।।
वही समय पावन...

३. अभ्र पटल सा, उड़ गया क्रन्दन ।
निश्चय निजातम में, हुआ सम्यक दर्शन ।।
रोग-शोक-भोग हो, रंग-संग-मातम ।
देश काल कोई, रहे कोई आसन ।।
वही समय पावन...

सिध्दं-सिध्दं सोऽहं-सोऽहं, मैं ब्रम्हाऽस्मि का कर दोहन।
बसा त्रिजग का वह मनमोहन, देखो हर तन में स्पन्दन ।।

(८७)

तर्जः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,..............)

शान्ति और आनन्द का, संगम सुहाना।
भेदज्ञान, तत्व निर्णय, इसका प्रमाणा।।

१. करके देखो भेदज्ञान, मैं ही ब्रह्म चेतन ।
आत्मा को छोड़ सब, दिखता अचेतन ।।
फिर,कैसा किसी से, नाता क्यों माना ।
भेदज्ञान, तत्व निर्णय इसका प्रमाणा ।।
शान्ति और आनन्द.....

२. जब जैसा जिसका, होगा जो होना ।
द्रव्य-क्षेत्र-काल भाव, अपेक्षा क्या रोना ।।
टाल-फेर बदले न, सारी हस्ती बौना ।
भेदज्ञान, तत्व निर्णय इसका प्रमाणा ।।
शान्ति और आनन्द.....

३. रमण करो आतम, तारण पंथ साधना ।
आगम कथित हैं, श्री गुरु वचना ।।
यही ध्रौव्य सत्य है, केवलज्ञानी कहना ।
भेदज्ञान, तत्व निर्णय इसका प्रमाणा ।।
शान्ति और आनन्द.....

प्रज्ञा की आंखें खोलो,जीवन में जागरण का द्वार खुल जायेगा।
विवेक की ज्योति अंतस में जगमगाये।।
अंधकार हमेशा-हमेशा को तिरोहित हो जायेगा।।

(८८)

तर्जः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,. ....)

महावीर स्वामी, नयन पथ गामी।
तुम्हीं पूर्ण ज्ञानी, नमामि नमामि ॥

१. सुबह-शाम रोज होती, उम्रो दराज़ पूरी ।
बीते अनन्ते भव, कर तन मजूरी ॥
आगम के चक्षु, महावीर स्वामी ।
नमामि-नमामि, नमामि-नमामि ॥
महावीर स्वामी........

२. मंत्र शुध्द साधना, सिध्दियों का सौरभ ।
णमोकार मंत्र है, आत्म बल का वैभव ॥
गुरु मंत्र साधो, बनो स्व के स्वामी ।
नमामि-नमामि, नमामि-नमामि ॥
महावीर स्वामी........

३. युग के प्रर्वतक, काल जयी ज्योतिर्धर ।
आनन्द अखण्ड के, शाश्वत वाणी वर ॥
वही ज्ञान अर्जन को, मिली वीर वाणी ।
नमामि-नमामि, नमामि-नमामि ॥
महावीर स्वामी........

(८९)

तर्जः-(तुम्हीं मेरे मंदिर..........)

समयसार आतम, समय कह रहा है।
समय को न खोना, समय बह रहा है॥

१. समय में समा जा, समय का तकाजा ।
समय नाम आत्मा को ऽ, एक बार पा जा ॥
समय को सजा ले, समय जा रहा है ।
समय को न खोना, समय बह रहा है ॥
समयसार आतम.........

२. समय है बहुत कम, समय है अथासी ।
समय की समग्रता में, समय है शैलेषी ॥
समय उसका पावन, समय ध्या रहा है ।
समय को न खोना, समय बह रहा है ॥
समयसार आतम.........

३. समयावधि में, समय पा अशेषी ।
समय सिंधु डूबे तो, समय में सन्तोषी ॥
समय का समय से, मिलन हो रहा है ।
समय को न खोना, समय कह रहा है ॥
समयसार आतम.........

(९०)

तर्ज़ः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,..............)

तुम्हारी छवि को, निरंतर मैं पाऊँ।
तन्मय हो जाँऊ, चिन्मय कहाऊँ॥

१. वीतराग वाणी में, विशद आत्म वर्णन ।
शब्दातीत गुणों का, अव्यक्त अर्चन ॥
अवक्तव्य महिमा, अनिर्वच को ध्याऊँ ।
तन्मय हो जाऊँ, चिन्मय कहाऊँ ॥
तुम्हारी छवि को........

२. गुरुतारण वाणी में, शुध्दात्म वन्दन ।
आद्योपान्त उवएस, परमात्मा हम ॥
शुध्द समयसार में, नित-नित समाऊँ ।
तन्मय हो जाऊँ, चिन्मय कहाऊँ ॥
तुम्हारी छवि को........

३. अबलबली जिन, बैन मिले हैं ।
सप्त भयों से, मुक्त हो चले हैं ॥
बोधि समाधि से, गन्तव्य पाऊँ ।
तन्मय हो जाऊँ, चिन्मय कहाऊँ ॥
तुम्हारी छवि को........

चिंतन-मनन-ध्यान-स्वाध्याय-सत्संग।
देते निज आत्मा का बोध, रंगते स्व रंग॥
इनसे मिला ज्ञान, स्व पर पहिचान हो गई ।
आत्मा की अर्चना गीत बन गई॥

(९१)

तर्ज़ः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,..............)

रंगी जबसे मैंने, चुनरिया स्वरंगी।
हुआ मोक्ष मार्गी, बना तारण पंथी॥

१. उदित ज्ञान सूरज,मैं ही हूँ दिवाकर ।
मेरी सौम्य सत्ता का, निकला प्रभाकर ॥
मेरी आत्मा का, ज्ञान गुण है साथी ।
हुआ मोक्ष मार्गी, बना तारण पंथी ॥
रंगी जबसे मैंने.........

२. सहजता-सरलता, क्षमा भाव रखना ।
क्षमा है हमारी ऽ, क्षमा हम पै करना ॥
जिनवाणी माता से, सदा क्षमा प्रार्थी ।
हुआ मोक्ष मार्गी, बना तारण पंथी ॥
रंगी जबसे मैंने.........

३. शाश्वत स्वपद मेरा, तारण तरण है ।
ज्ञान गंग मेरी ऽ, भव की हरण है ॥
अपनी विशुध्दि का, अन्तस है साक्षी ।
हुआ मोक्ष मार्गी, बना तारण पंथी ॥
रंगी जबसे मैंने.........

दिल की तमन्ना दिल में रही, फरमान मौत का आ गया।
मैं यह करूँ और यह नहीं, सब ठाठ पड़ा ही रह गया॥

जिस समय जो हो रहा है, वही है सही।
निज आत्मा से किसी का कोई सम्बन्ध ही नहीं॥

(९२)

तर्जः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,..............)

उदित ज्ञान सूरज, सुधाकर सलिल पा ।
अपना स्व राज्य पाने, चलता चला जा ॥

१. उपसर्ग-अन्तराय,मिथ्यात्व मानो ।
चमत्कार अनदेखे, स्व-पर पिछानो ॥
गन्तव्य दूर है, पुरुषार्थ बढ़ा जा ।
अपना स्व राज्य पाने, चलता चला जा ॥
उदित ज्ञान सूरज...

२. एक लक्ष्य एक विन्दु, एक इच्छा,एक तान ।
गुरुतार वाणी से, पा लिया है सद् ज्ञान ॥
जिनवाणी माता की, धरोहर संभाले जा ।
अपना स्व राज्य पाने, चलता चला जा ॥
उदित ज्ञान सूरज...

३. आश फांस त्याग वास, बन में करुँ कब ।
ज्ञान,ध्यान,धारणा, शुध्दता में ठहरुँ कब ॥
सबसे निवृत्ति ले, चैतन्य में रुक जा ।
अपना स्व राज्य पाने, चलता चला जा ॥
उदित ज्ञान सूरज...

जन्म दिवस की खुशी मनाते, एक-एक वर्ष को व्यर्थ गवाते ।
आये थे कुछ पुण्य समेटे, ज्ञान बिना खाली कर जाते ॥

(९३)

तर्जः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,..............)

मेरी चेतना के, तुम्हीं ज्ञान मन्दर,
कि पाऊँ तुम्हारे, गुणों का समुन्दर ।

१. तुम्हीं हो निरजंन, अरस और अरुपी ।
तुम्हें कहते ज्ञानी, अगम सिध्द रूपी ॥
कि देखूँ तुम्हें मैं, मेरे हिय के अन्दर ।
कि पाऊँ तुम्हारे, गुणों का समुन्दर ॥
मेरी चेतना के..........

२. तुम्हीं हो अथासी, नहीं पार पाया ।
कि बस नेति-नेति, यही मैंने गाया ॥
कि देखूँ सदा मैं, वही सर्व सुन्दर ।
कि पाऊँ तुम्हारे, गुणों का समुन्दर ॥
मेरी चेतना के..........

३. सत्यार्थ दृष्टि, मिला जिन शासन ।
परम शान्ति दाता, धर्म आराधन ॥
कि सत्ता शून्य विन्द मैं, ध्याऊँ निरन्तर ।
कि पाऊँ तुम्हारे, गुणों का समुन्दर ॥
मेरी चेतना के..........

भव रोग का मेटन हारा है,आत्मा का चिंतन न्यारा है ।
गुरुतार का एक ही नारा है, भगवान स्वयं तू प्यारा है ॥

(९४)

तर्जः-(तुम्हीं मेरे मंदिर,.............)

दया करने वाले, सदगुरु हमारे ।
ज्ञान-ध्यान तप की, विधा देने बाले ॥
कृपा करने वाले, गुरुवर हमारे ।
शुध्द आत्मा की,अर्चा करने वाले ॥
कृपा करने वाले.....

१. अबाधित सुखों की, श्रृंखला को पाया ।
अतीन्दिय आनन्द में, आतम समाया ॥
तारण हार सबके, गुरु तार प्यारे ।
ज्ञान-ध्यान तप की, विधा देने बाले ॥
कृपा करने वाले.........

२. नमः शुध्द चिद्रूप, मुक्ति का मारग ।
आतम आराधन, स्वात्मा का नायक ॥
आत्मन हमारे, तारण पंथ जा रे ।
शुध्द आत्मा की, पूजा करने वाले ॥
कृपा करने वाले.......

तारण पंथ अनादी से है, मोक्ष मार्ग को कहते हैं।
श्री जिन तारण तरण गुरू तो, पुनः उजागर करते हैं ॥

(९५)

तर्जः-(तुमसे लागी लगन.......)

मैं ही आतम शुध्दातम परमातम,
मेरे ज्ञान और गुण का महात्तम ॥

१. मेरा रूप है सिध्द स्वरूपी,
मेरे गुण हैं अनन्त और अरूपी ।
तेरे वन्दन करुँ, अभिनन्दन करूँ॥
हे निजातम ऽ ऽ, मेरे ज्ञान और गुण का महात्तम ॥
मैं ही आतम............

२. जबसे जाना तुम्हें ज्ञान स्व में,
लागे विश्व का हर कण परामय ।
एक तुम ही विभो, कहते जिसको प्रभो ।
शुध्द आतम ऽ ऽ, मेरे ज्ञान और गुण का महात्तम ॥
मैं ही आतम............

३. जबसे ध्याया तुम्हें मैंने ध्यान में,
अहा-सिध्दोऽहं स्वपद का भान मैं ॥
विन्द स्थान मिला, निष्क्रिय आन मिला ।
मैं परमातम ऽ ऽ, मेरे ज्ञान और गुण का महात्तम ॥
मैं ही आतम...........

क्षण वे हमारे सबसे सुन्दर, आतम अनुभव से सने ।
शान्त शीतल सुखद अनुपम, ज्योति प्रभुता से बने ॥

(९६)

तर्ज:-(तुमसे लागी लगन........)

बेला अमृत भरी, चिन्तन ब्रह्म मयी,चेतन प्यारे।
आत्म चिंतन मनन, शाम-सकारे।।

१. आतम ज्ञान गुणों का प्रकाशा।
भेदज्ञान में करता निवासा।।
तत्व निर्णय किया, समता-शान्ति लिया।
चेतन प्यारे ऽ ऽ, आत्म-चिंतन-मनन, शाम-सकारे।।
बेला अमृत भरी...........

२. स्वानुभव में मिला ध्रुव तत्व।
भव-भय-भ्रान्ति का मेटे असत्व।।
आतम निर्मलमयी, पर की परिणति गई।
चेतन प्यारे ऽ ऽ, आत्म-चिंतन-मनन, शाम-सकारे।।
बेला अमृत भरी...........

३. सिध्द पद भी स्वयं में मिला है।
भाव मोक्ष कमल जब खिला है।।
रत्नत्रय से मुदित, ज्ञान सूर्य उदित।
चेतन प्यारे ऽ ऽ, आत्म-चिंतन-मनन, शाम-सकारे।।
बेला अमृत भरी...........

ज्ञान समाये जिस जीवन में, वह बूँद समन्दर बन जाये।
सन्त समागम गुरु वाणी से निज आतम के दर्शन पाये।।

(९७)

तर्ज:-(तुमसे लागी लगन........)

तुमसे लागी लगन, होवे फिर-फिर मिलन।
हे निजातम, पाऊँ दर्शन तुम्हारा मैं आतम।।

१. मैंने देखा तुम्हें हे निजानन्द।
पाया आनन्द-आनन्द-आनन्द।।
तू असीमित मिला, मेरा भाग्य खिला।
हे शुध्दातम, पाऊँ दर्शन तुम्हारा मैं आतम।।टेक...

२. अब तो शाश्वत को पाने की धुन है।
शून्य सत्ता में खो जाऊँ गुम है।।
अर्क कीर्ति जयी, टंकोत्कीर्ण मयी।
हे सिध्दातम, पाऊँ दर्शन तुम्हारा मैं आतम।।टेक...

३. भूल जाऊँ शरीरादि संसरण।
आकाश सा शून्य में विचरण।।
मैं ही अरिहंत स्वयं, श्री सिध्द स्वयं।
मैं परमातम, पाऊँ दर्शन तुम्हारा मैं आतम।।टेक...

४. हुआ रूप और गुण का था विस्मरण।
तारण वाणी से जीवन में जागरण।।
श्री संघ मिला, सहकार मिला।
मैं सिध्दोऽहं, पाऊँ दर्शन तुम्हारा मैं आतम।।टेक...

५. साक्षी भाव से देखूँ सभी को।
ज्ञायक भाव का अन्तर में बोध हो।
मैं त्रिकाली ध्रुवं, ब्रह्म सोऽहं स्वयं।
हे पंचानन्द, पाऊँ दर्शन तुम्हारा मैं आतम।।टेक...

(९८)

तर्ज़ः-(मेरे तारण तरण ....)

मेरा चिंतन चले, निज मनन में ढले, दिन और रात होऽऽ।
मेरी आत्मा का साज और आवाज हो ।।

१. मैं हूँ एकत्व सदा से एकाकी ।
तुम हो आतम, विन्द स्थान वासी ।।
वीतरागी रहो, कर्म मल को हरो ।
मोह त्याज हो, मेरी आत्मा का साज और आवाज हो।।
मेरा चिंतन चले....

२. जब जब पर में करे मन पदार्पण ।
आशा-तृष्णा से होवे लोकार्षण ।।
गुरुवर ज्ञान का संबल, देना निश्चय अटल ।
अविभाज्य हो, मेरी आत्मा का साज और आवाज हो।।
मेरा चिंतन चले....

३. सिध्दं-सोऽहं-अहं हूँ ब्रह्मास्मि ।
केवलज्ञान चतुष्टय का स्वामी ।।
मै हूँ मुक्त सदा, मुक्ति मुझमें बसा ।
वह स्व राज्य हो, मेरी आत्मा का साज और आवाज हो।।
मेरा चिंतन चले....

स्वामी ज्ञानानन्द जी ने ज्ञान लिया, सबको दिया ।
और लेने वाले ने, ज्ञानानन्द बन कर जिया ।।

(९९)

तर्ज़ः-(तुमसे लागी लगन.........)

मेरा चिंतन चले, निज मनन में ढले, ज्ञायक गान हो ।
मेरी आत्मा का ज्ञान और बहुमान हो ।।

१.चित्प्रकाशी का गुणगान होवे, भय और खेद का प्रस्थान होवे।
मैं निरंजन सदा, हूँ अमल मयी प्रभा, का नित ध्यान हो ।
मेरी आत्मा का ज्ञान और बहुमान हो ।।
मेरा चिंतन चले......

२.मेरे भजनों में है समयसाराय, है नमन में मेरे वीतरागाय ।
मेरा मन यूँ फूले, फूलनाओं में झूले, अनुभव भानु हो ।
मेरी आत्मा का ज्ञान और बहुमान हो ।।
मेरा चिंतन चले......

३.ये उम्रो दराज़ की घड़ियाँ ।
निज में डूबें बने मुक्ति मणियाँ ।।
बहता जाये समय, सेतु बन कर प्रणय,मुक्त धाम हो ।
मेरी आत्मा का ज्ञान और बहुमान हो ।।
मेरा चिंतन चले......

मन की शोभा ज्ञान है, वाणी तन की शोभा है ।
हाथ पैर धन लगे नही, आत्म ज्ञान हृदय प्रबोधा है ।।

कौन वहाँ बाधक हो सकता, जहाँ आत्म श्रध्दा बलवान
खडा हिमालय भी हो पथ में, हट जायेगा दे व्यवधान ।।

(१००)

तर्ज़:-(तेरे पूजन को भगवान ....)

अहो निज परमातम भगवान, तुम्हें मैं करता सतत प्रणाम।।
अहो निज शुध्दातम भगवान, आपको मेरे लक्ष प्रणाम ।।

१. धन्य समयसाराय नमः, निज चित्प्रकाश स्वधाम।
परमानन्द विलासी आतम, अगम अथासी नाम।।
तेरा ध्यान करूँ सुबह-शाम, रहो नित चिंतन में अविराम
अहो निज......................प्रणाम ।।

२. जान न पाये कब आये तुम, अब, जाओ नहीं भगवान।
ताल बध्द-लय बध्द चेतना, नृततहिं जिन पहिचान।।
मेरे बेसुध-बाबरे प्राण, ढूंढे तुझको सकल जहान।
अहो निज......................प्रणाम ।।

३. दुर्लभ पल को सदा संजोये, तारण तरण स्वजान।
अगम अगोचर अलख निरंजन, आनन्द घन के गान।।
निकले अंतर के प्रतिदान, पाये सहजानन्द रस पान।
अहो निज......................प्रणाम ।।

~~~~~~~~~~~~

(१०१)

तर्ज़:-(तेरे पूजन को ....)

भजलो तारण तरण का नाम, यही है सत-चित आनन्द धाम।

१.तारण तरण है आतम मेरी, देव-गुरु-धर्म, आत्म की फेरी।
करलो निज आतम का ध्यान, यही है सत-चित आनन्द धाम
भजलो शुध्दातम का नाम यही है.......

बाई के भजन १०२

२. निराकार की कर अनुभूति, सम्यक दर्शन ही स्वानुभूति।
चलो अब निर्विचार के धाम, यही है सत-चित आनन्द धाम।
भजलो निज आतम का नाम ....

३.शाश्वत है ध्रुव-टंकोत्कीर्णा, अजर-अमर-अविचल पद लीना
पाओ शीघ्र महान, यही है सत-चित आनन्द धाम ।।
भजलो निज आतम का नाम ....

~~~~~~~~~~~~

(१०२)

तर्ज़:-(तेरे पूजन को भगवान ....)

मेरे मन मंदिर में आन, विराजे शुध्दातम भगवान ।।

१.अगम अगोचर अलख अरुपी, जय, सत-चित, आनन्द स्वरूपी
नित आतम प्रभु जान, विराजे शुध्दातम भगवान ।।
मेरे मन मंदिर में ......

२.ओंकार में पंच परमेष्टी, आतम का पद है परमेष्टि ।
आत्म देव प्रभु जान, विराजे शुध्दातम भगवान ।।
मेरे मन मंदिर में ......

३.तारण-तरण देव गुरु-धर्म है, तारण-तरण स्वयं आतम है।
श्री जिन वचन प्रमाण, विराजे शुध्दातम भगवान ।।
मेरे मन मंदिर में ......

४.पूज्य समान आचरण पूजा, निज आतम, प्रभु देव न दूजा।
हर आतम भगवान, विराजे शुध्दातम भगवान ।।
मेरे मन मंदिर में .....

(१०३)

तर्ज़ः-(तेरे पूजन को भगवान ....)

मेरे मन मंदिर में आन, विराजो, सीमंधर भगवान ॥

१. बीस तीर्थंकर सदा विराजे, दिव्य ध्वनि गणधर समझावें।
भवियन के मन आन, विराजो सीमंधर भगवान ॥
मेरे मन मंदिर में आन.......

२. बीस तीर्थंकर, चौबीस जिनवर, परम पुरुष महिमा मयी प्रभुवर।
चरणन करूँ प्रणाम, विराजो सीमंधर भगवान ॥
मेरे मन मंदिर में आन.......

३. विदेह क्षेत्र मानव तन पाऊँ, समवसरण में दर्शन पाऊँ।
पाऊँ केवलज्ञान, विराजो सीमंधर भगवान ॥
मेरे मन मंदिर में आन.......

४. जो तुम हो, सो मैं हूँ प्रभुवर, सार भूत तत्व पाया गुरुवर।
पाऊँ सम्यकज्ञान, विराजो सीमंधर भगवान ॥
मेरे मन मंदिर में आन.......

आज मेरे मन लेलो, सबसे बृहद ज्ञान।
इसके जैसी तीन लोक में नही कोई शान ॥
तारण गुरु का कहना मानो, करो भेद विज्ञान।
तब तुम अपने आप कहोगे, मैं भी सिध्द समान ॥

(१०४)

तर्ज़ः-(जरा सामने तो आओ छलिये ....)

श्री गुरु तारण सुयश जयवन्त हो, गुरु के चरणो में वन्दन अनन्त हो।
गुरु की सम्यक प्रबोधनी देशना, से हम सब के ही भव का अन्त हो ॥

१. समय- समझ-सामग्री पाई, आज लगाई निज उपयोग।
सारी सामर्थ भी लग जाये, त्रय रत्नों का, करुँ मैं भोग ॥
हृदय पीठिका प्रतिष्ठित ओम हो, मिलें तारण तरण से संत हो।
गुरु की सम्यक प्रबोधनी देशना, से हम सबके ही भव का अन्त हो ॥
श्री गुरु तारण सुयश ....

२. निज स्वरूप को जाना मैंने, तारण तरण के वांगमय से।
चौदह ग्रन्थ में है जिनवाणी, अमृत सुभाषित रत्नो से ॥
अनुभूति पुरुस्कृत आत्म हो, निज में गर्भित जिनातम जयवन्त हो।
गुरु की सम्यक प्रबोधनी देशना, से हम सबके ही भव का अन्त हो॥
श्री गुरु तारण सुयश ....

३. वर्तमान तो हुआ प्रभावान, आगत काल भी ज्योतिर्मय।
तारण तरण समर्थ महा मुनि, शुध्द सिध्दियों से जय जय ॥
ज्ञान रश्मि विखेरी प्रबुध्द हो, वर्तमान के तुम्हीं वर्ध्दमान हो।
गुरु की सम्यक प्रबोधनी देशना, से हम सबके ही भव का अन्त हो॥
श्री गुरु तारण सुयश ....

मैं आत्मा हूँ--यह ज्ञान करो, श्रध्दान करो।
और भान करो, बहुमान करो ॥

(१०५) *तर्ज:-(साजन मेरा उस पार है........)*

मंगल मयी शुध्द आतमा, तुम ही तो हो परमात्मा।

१. सबसे प्रथम मंगल कारी हो, सारे ही अघ के हारी हो।
तुम ही तो हो सिध्द आत्मा, मंगल मयी शुध्द आत्मा॥

२. स्वय में ही पाया पूर्ण ज्ञान है, ज्ञान मयी भगवान है।
अनन्त चतुष्टय धारी स्वात्मा, मंगल मयी शुध्द आत्मा॥

३. ध्यान में ध्याया एक तान है, पूजा का यही तो विधान है
धन्य नमन तुम्हे चेतना, मंगल मयी शुध्द आत्मा॥

•••••••••••••••••

(१०६) *तर्ज:-(झिल मिल सितारो का.........)*

शुध्दात्म प्रभु का मनन नित होगा,
जीवन में आनन्द आनन्द होगा।
कैसा सुन्दर जीवन अपना पावन होगा॥
जीवन में आनन्द आनन्द होगा।

१. कर्म हमारे जब घिर घिर आंयेंगे,
कर्म फल हमसे भोगे नही जायेंगे।
धर्म का सहारा सर्वोत्तम होगा,
जीवन में आनन्द आनन्द होगा॥
शुध्दात्म प्रभु का.......

२. ज्ञान ध्यान पूजा वृत जप तप कोई हो,
आत्मा शुध्दात्मा परमात्मा की जय हो।
आस्था और श्रध्दा से मन, वीतरागी होगा।
जीवन में आनन्द आनन्द होगा॥
शुध्दात्म प्रभु का.......

(१०७)

तर्ज:-(जरा सामने तो आओ छलिये..........)

करो अन्त: प्रवास मेरी आत्मा,
निज आप्त स्वरुप की हो साधना।
तू है कर्म जयी, तू ही ममल मयी,
तेरे निज गुण की होवे प्रभावना॥

१. सबसे न्यारा सबसे प्यारा,
रूप तुम्हारा सिध्दों सम।
मोह भाव से बना प्रवासी,
करता रहा जग संसरण॥
अब तो चेतो और ध्याओ, निज आत्मा।
श्री जिन तारण तरण की है देशना॥
तू है कर्म जयी, तू ही ममल मयी,
तेरे निज गुण की होवे प्रभावना
करो अन्त: प्रवास ....

२. तू अखण्ड अविनाशी शाश्वत,
अगम-अगोचर-अलख जिनु।
पर का भाव अनादि से पाला,
चक्रवर्ति है बना दीनु॥
धरो वीतराग पद का बाना,
प्रगटे परमेष्ठी गुण का खजाना।
तू है कर्म जयी, तू ही ममल मयी,
तेरे निज गुण की होवे प्रभावना
करो अन्त: प्रवास ....

(१०८)

तर्ज:-(जरा सामने तो आओ छलिये ....)

निज आत्मा तुम्हारे बहुमान से, पाई श्रध्दा की श्रंखला अपार है।
शुध्द आतम तुम्हारे सत्कार से, श्री सम्यक की हुई शुरुआत है।।

१. जबसे जाना, तबसे माना,
मैं आतम-शुध्दातम हूँ।
श्री गुरोवाच मिले भय हारी,
जिन सर्वोच्च पद धारी हूँ।।
द्रव्य दृष्टि को किया आत्मसात् है,
वस्तु रूप ही तो सरमाथ है।
शुध्द आतम तुम्हारे सत्कार से,
मिली सम्यक की यहीं शुरुआत है।।
निज आत्मा तुम्हारे........

२. ममल स्वभाव की साधना भायी,
भेदज्ञान-तत्व-निर्णय से।
धर्म का रूप समझ में आया,
जिनवाणी के चिंतन से।।
मोड़ो मन को विजय, शक्ति प्राप्त है।
वरना जीवन बनेगा अभिशाप है,
शुध्द आतम तुम्हारे सत्कार से
हुई सम्यक की यहीं शुरु आत है,
निज आत्मा तुम्हारे........

३. जसु भोजन उच्छाह तुम्हें है,
आत्म ध्यान में लग जा मन।
पढ़ें-सुने पर, मूढ़ रहें तो,
तोता विलाव कथानक गुन।।
उठ लेहु कलश मंगलार्थ है,
त्रय रत्न मयी ध्रुव स्वभाव है।
शुध्द आतम तुम्हारे सत्कार से,
पाई सम्यक की यहीं शुरु आत है।।
निज आत्मा तुम्हारे........

पूर्ण चन्द्र सी धवल चपल,
मृगनैनीय सी कमनीय कामनी।
गगन चुम्ब शिखराम्य प्रसादों,
रत्न राशी दमकत दामनी।।
जनपद राज्य नरेश नवाते,
शीश, सजी सेना चतुरंगी।
सम्यक दर्शन हिय जब उपजे,
त्याग दिये तृण वत क्षण मांही।।
धन्य धन्य पुरुषारथ कीना,
नर तन पाय सफल कर जांहीं।
तिन युगपद हो नमन हमारी,
वीतराग विज्ञान समाहीं।

(१०९)

तर्ज:-(जरा सामने तो आओ छलिये ....)

करुँ आत्मा की मैं परिक्रम्मा,
सारे तीर्थों की होगी वन्दना ।
मेरे तारण तरण, देव-गुरु और धरम,
कहें परमेष्ठी तेरा आतमा ।।
करुँ आत्मा की.........

१. ज्ञान मिला गुरुवाणी से निज का,
ध्यान किया मैं सिध्दं हूँ।
चिंतन मनन चले अब निशदिन,
ज्ञायक-ज्ञायक वेदन लूँ ।।
यही होगी मेरी परिक्रमा,
सारे तीर्थों की होगी वन्दना।
मेरे तारण तरण, देव-गुरु और धरम,
कहें परमेष्ठि तेरा आत्मा ।।
करुँ आत्मा की.........

२. समय-समझ-सामग्री पाई,
सामर्थ्य से पुरुषार्थ करुँ।
महाव्रतों का पालन करके,
अरिहंत सम सब कर्म हरुँ ।।
तारण पथ पर चलो मेरी आत्मा,
तारण पंथ की करना है साधना।
मेरे तारण तरण, देव-गुरु और धरम,
कहें परमेष्ठी तेराआत्मा ।।
करुँ आत्मा की.........

(११०)

तर्ज:-(जरा सामने तो आओ छलिये ....)

सम्यक दर्शन को पाना प्रथम कार्य है,
यह पहले में पहला सुकार्य है।
नहीं इसके बिना, कोई जप-तप या बृत,
बाल तप में गिनें, आचार्य है।

१. तारण पंथ का मूलाचारी, भेदज्ञान-तत्व-निर्णय मय।
रत्नत्रय की साधना करता, चार दान से संयुक्त है।
सप्त व्यसनो का सर्वथा त्याग है,
रात्रि-भुक्ति,जल-गालन का ख्याल है
नहीं इसके बिना कोई जप-तप या वृत
बाल तप में गिनें, आचार्य है
सम्यक दर्शन को.......

२. तारण पंथ की साधना पध्दति
मुक्ति महल में ले जाती
वस्तु स्वरूप, द्रव्य दृष्टि से
ममल भाव में ठहरती
भाव मुक्ति ही, द्रव्य मुक्ति द्वार है
हे आतम चलो क्यों अबार है
नहीं इसके बिना, कोई जप-तप या वृत
बाल तप में गिनें, आचार्य है
सम्यक दर्शन को.......

(१११)

तर्ज:-(दिल लूटने वाले जादूगर........)

स्वाध्याय करो सत्संग करो।
निज आतम का गुण गान करो॥
चैतन्य-चिदानन्द-चिन्मय को।
नित भेदज्ञान से देखा करो॥

१. स्वाध्याय परम तप होता है।
स्व-अध्ययन में जो खोता है॥
अब मिथ्या दर्शन शीघ्र हरो।
निज आतम का गुण गान करो॥
स्वाध्याय करो ....

२. षट आवश्यक, चार आराधन।
स्वाध्याय से होते हैं पूरण ॥
मन-वच-काय का योग करो।
निज आतम का गुण गान करो॥
स्वाध्याय करो ....

३. संतो का संग ही सतसंग है।
सत शास्त्रो का संग सत्संग है॥
गुरु वाणी का सतसंग करो
निज आतम का गुण गान करो॥
स्वाध्याय करो ....

४. जग में सतसंग दुर्लभ है।
जिनवाणी मिलना दुर्लभ है॥
शुभ में शुध्द का उपयोग करो।
निज आतम का गुण गान करो॥ स्वाध्याय करो ....

(११२)

तर्ज:-(दिल लूटने बाले जादूगर.........)

सत्संग की पुरवा बहती रहे।
गुरुतार की वाणी मिलती रहे॥

१. पर भाव-विभाव-विकार मिटें।
सद भाव-स्वभाव हृदय उपजें॥
सब धर्म की राह पे चलते रहें।
आनन्द मय मंगल अपार रहे॥
सत्संग की पुरवा...

२. सब ज्ञानी पंडित आते रहें।
सन्मार्ग सभी को लगाते रहें॥
आचार-विचार से चलते रहें।
घर-घर में ज्ञान प्रकाश रहे॥
सत्संग की पुरवा...

३. हो धर्म-क्रिया अरु निश्चय से।
मिथ्यात्व हटे सब विभ्रम से॥
सब जीवों में धर्म की धार वहे।
जिन धर्म की जय जयकार रहे॥
सत्संग की पुरवा...

४. श्री आत्मानन्द सत्संग मिले।
आतम की बगिया में ज्ञान खिले॥
सबके उर शान्ति प्रवाह रहे।
गुरु वाणी का नित्य प्रसार रहे॥
सत्संग की पुरवा...

(११३)

तर्जः-(दिल लूटने वाले जदूगर..........)

निज ज्ञान को देने वाले गुरु,
तुम चरणों में सिर नाया है।
निज ध्यान की महिमा पाकर के,
हमने निज गौरव पाया है।।

१. मैं आतम हूँ यह तन नहीं हूँ।
शुध्दातम हूँ परमातम हूँ।।
यह दुर्लभ बोधि पाकर के।
मैंने भेदज्ञान को पाया है।।
निज ज्ञान को देने.......

२. यह ज्ञान मिला मुझे शिव पथ का।
यह ध्यान मिला मुझे सिध्दं का।।
इस पंचम काल में तुमने गुरु।
मुझे तारण पंथ दिखाया है।।
निज ज्ञान को देने.......

३. सम्यक्त मिले, त्रय रत्न मिले।
वस्तु रुप मिले, द्रव्य दृष्ट मिले।।
ममल भाव में नित-नित बहता रहूँ।
यह भाव हृदय में आया है।।
निज ज्ञान को देने.......

(११४)

तर्जः-(दिल लूटने वाले जदूगर..........)

गुरु वाणी सदा ही बरसती रहे, जन्मों की प्यास बुझाती रहे।

जब तारण गुरु का जन्म हुआ, धरती का कण-कण निहाल हुआ।
१. जहाँ गुरु की, पड़ी चरण रज है, तीरथ की सुरभि विखरी है ।।
आतम को तृप्ति मिलती रहे, जन्मों की प्यास बुझाती रहे।।
गुरु वाणी सदा ही.........

जिनको प्रभु से मिलने की चाह, गुरु वाणी बताती है वो राह ।
२. हर आतम में प्रभुजी का वास, तत्व निर्णय में समता का स्वाद।।
आतम विज्ञानी बनती रहे, जन्मों की प्यास बुझाती रहे।।
गुरु वाणी सदा ही.........

श्रध्दा के बिना अनुभूति क्या, अनुभूति बिना अभिव्यक्ति क्या ।
३. समकित का कारण आत्म देव, अब अपनी पात्रता तू ही देख।।
त्रासद की यात्रा मिटती रहे, जन्मों की प्यास बुझाती रहे।।
गुरु वाणी सदा ही.........

'न्यानं तिलोय का सार' अहा, गुरु देव कहा सो पाया महा ।
४. मौन साधना सम्पन्न आतम की, प्रतिक्रिया विभावों से हटने की।।
सारी दुनियाँ शाकाहारी रहे, जन्मों की प्यास बुझाती रहे।।
गुरु वाणी सदा ही.........

(११५)

तर्ज:-(साजन मेरा उस पार है ....)

दर्शन में पाया समयसार है।
निज के स्वरूप का श्रंगार है ।।

१. अनुभव से गागर भर लाये हैं।
अमृत के प्यासे हम आये हैं ।।
परमामृत मिला शुध्द सार है।
निज के स्वरूप का श्रंगार है ।।
दर्शन में पाया.....

२. गुरुवर अकथ तेरी महिमा है।
तारण वाणी अहा स्व की गरिमा है ।।
सद्‌गुरु ने किया उपकार है।
निज के स्वरूप का श्रंगार है ।।
दर्शन में पाया.....

३. डूबी रहो अहो चेतना।
आनन्द की मिल रही प्रेरणा ।।
तत्व निर्णय से निर्भार है।
निज के स्वरूप का श्रंगार है ।।
दर्शन में पाया.....

४. भेद विज्ञानी बने रहना मन।
जब तक है तन और दम में दम ।।
इस विधि से होते भव पार है।
निज के स्वरूप का श्रंगार है ।।
दर्शन में पाया.....

(११६)

तर्ज:-(दिल के अरमाँ.............)

सृष्टि से दृष्टि बदल हम हट गये।
और मृग तृष्णा के जल से बच गये ।।

१. निज की परिणति का, लगा हमें स्वाद जब।-२
जान कर विषयों के विष को तज गये ऽ ऽ ।।
सृष्टि से..........।।

२. भिन्न है ममल भाव, सारे भावों से।-२
मान कर तारण पंथ पर हम चल गये ।।
सृष्टि से..........।।

३. है यही आराध्य अब निज आत्मा।-२
सिध्दों के चरण चिन्ह पर हम बढ़ गये ।।
सृष्टि से..........।।

(११७)

तर्ज:-(दिल के अरमाँ.............)

ज्ञानी गुरु की वाणी से स्थिर भये।
आज से हम भेदज्ञानी बन गये ।। ज्ञानी गुरु.....

१. जल की लहरों सा था चंचल मन मेरा ऽ ऽ।
आत्मा को जान कर हम थिर भये ।।
गुरु तारण की वाणी से......

२. वायु की गति सम, तरंगित भाव थे ऽ ऽ।
तत्व निर्णय में समाहित शम भये ।।
गुरु तारण की वाणी से......

ध्रुव-अटल-सत्ता सदा, शाश्वत मिली ऽ ऽ।
मिथ्या के दूषण, से अब हम हट गये ।।
सद गुरु की वाणी से......

४. सिध्द-सिध्दोऽहं, मेरा शुध्दात्म है।
जान कर उसमें, ही अब हम जम गये ।।
ज्ञानी गुरु की वाणी से......

(११८)

तर्ज़ः-(दिल के अरमाँ...............)

रफ्ता-रफ्ता रिस रही है जिन्दगी।
कर सतत मन आत्मा की वन्दगी।
रफ्ता-रफ्ता रिस रही है जिन्दगी ....

१. भेद ज्ञानी बन जा आतम हर घड़ी-२।
तत्व निर्णय से मिटे मन गंदगी ।।
रफ्ता-रफ्ता रिस रही है......

२. कर ग्रहण संयम का उज्जवल नीर ले-२।
तोड़ पर भावों को, पाये सादगी ।।
रफ्ता-रफ्ता रिस रही है......

३. आत्मन, करो महिमा निजातम भाव की-२।
शुध्दता में ही समाहित, तत्व की ।।
रफ्ता-रफ्ता रिस रही है......

४. ध्रुव स्वभावी आत्मा ध्याऊँ सदा-२।
बच-विकल्प और भेद से परे नन्दनी ।।
रफ्ता-रफ्ता रिस रही है......

(११९)

तर्ज़ः-(कालिन्दी के घाट, घाट पर देखूँ.........)

महावीर का ज्ञान, ज्ञान में सिध्दोऽहं की शान, आत्मा पा जाना।

१. महावीर वाणी हमें, स्व धर्म बताये, स्व धर्म बताये।
निज आतम का ध्यान, ध्यान में भेद ज्ञान का पान,
आत्मा पा जाना।

२. महावीर वाणी हमें, अहिंसा बताये, अहिंसा बताये।
अ-हिंसा एक मंत्र, मंत्र में सभी जीव भगवान,
आत्मा पा जाना।

३. महावीर वाणी हमें, समकित बताये, समकित बताये।
समकित का वह काम, काम है दे मुक्ति का धाम,
आत्मा पा जाना।

अब चलने की इस बिरिया में, पथ का पाथेय बनालो।
सब आस-फांस त्याग के, भेद ज्ञान को अपना लो ।।
तत्व निर्णय का संबल, करलो नित्य अमल।
अपनी शुभ यात्रा का सामान जुटालो ।।

जयतारण तरण

(१२०)

तर्ज:-(छलिया का भेष बनाया............)

पियो आत्म नाम का प्याला ऽ ऽ।
मिटे जन्मों की दारुण ज्वाला॥

१. यह जिनवाणी से प्राप्त हुआ।
गुरु तार मुक्त हस्त दान दिया॥
'श्री संघ' ने सबको पिलाया ऽ ऽ।
मिटे जन्मों की दारुण ज्वाला॥ पियो आत्म नाम....

२. स्वानुभव की इसमें गरिमा है।
अनुभव से इसको पाना है॥
त्रय रत्न जड़ित यह प्याला ऽ ऽ।
मिटे जन्मों की दारुण ज्वाला॥ पियो आत्म नाम....

३. जो पिये सिध्द बन मुक्त हुए।
सब भव्य-मुमुक्षु आसक्त हुए॥
पायेंगे स्व रुचि वाला ऽ ऽ।
मिटे जन्मों की दारुण ज्वाला॥ पियो आत्म नाम....

४. हे आत्म ग्रहण करो शीघ्र अति।
पर भावों से होवे अनासक्ति॥
पा जाओ स्वयं सिध्द शाला।
मिटे जन्मों की दारुण ज्वाला॥ पियो आत्म नाम....

५. भेदज्ञान का अमृत इसमें भरा।
तत्व निर्णय से यह सदा हरा॥
बड़ भागी है पीने वाला ऽ ऽ।
मिटे जन्मो की दारुण ज्वाला॥ पियो आत्म नाम....

(१२१)

तर्ज:-(छलिया का भेष बनाया............)

चलो मन के पार चलेंगे ऽ, शाश्वत का पान करेंगे॥

१. जरा तन को बना शव के जैसा,
आतम तो बिल्कुल है अछूता।
फिर किससे गिला या प्रीत करेंगे ऽ,
शाश्वत का पान करेंगे॥
चलो मन के पार चलेंगे.....

२. अहो समाधि मरण का मतलब है,
देहातीत दशा पे सदा विजय है।
लक्ष्य,अमर स्वरुप का,ध्यान रखेंगे ऽ,
शाश्वत का पान करेंगे॥
चलो मन के पार चलेंगे.....

३. प्रमाद ने छीने, सुनहले पल,
अभ्यास है ज्ञायक का, शक्ति स्थल।
आत्मार्थी,प्रयोग करेंगे ऽ,
शाश्वत का पान करेंगे॥
चलो मन के पार चलेंगे.....

४. प्रतिकूलता भीषण बाहर से,
अहा धन्य हैं ज्ञानी जो निज बल से।
उपयोग से,रंच न हटेंगे ऽ,
शाश्वत का पान करेंगे॥
चलो मन के पार चलेंगे.....

(१२२)

तर्ज:-(छलिया का भेष बनाया.............)

चिद्रूप चिदानन्द आत्मा ऽ,अनुभूति में आन समाना।

१. यह अकथ अनिर्वचनीय मिला,
है कोटि-कोटि जिव्हातीत सिला।
शब्दातीत गुणों का खजाना ऽ,
अनुभूति में आन समाना।।
चिद्रूप चिदानन्द.......

२. कोटि-कोटि चन्द्र-सूर्य लजा,
श्री सिध्दों की सम्पूर्ण प्रभा।
निराकार स्वयं ज्योतिर्मा ऽ,
अनुभूति में आन समाना।।
चिद्रूप चिदानन्द.......

३. पंचानन्द सानन्द स्वयं में मिला,
त्रयलोक का सब सुख तुच्छ लगा।
त्रयलोक तिलक नित्य प्रणमा ऽ,
अनुभूति में आन समाना।।
चिद्रूप चिदानन्द.......

ॐ शुध्दात्मने नम:

(१२३)

तर्ज:-(तुम रूठ के मत जाना ....)

जड़ चेतन को जाना ऽ ऽ।-२
गुरु देव की वाणी से, शुध्दात्म को पहिचाना।

१. तू अगणित गुण मय है, अमूरत चिन्मय है।
निज अन्तर परणति से, शुध्दात्म में रम जाना।।
जड़ चेतन को जाना.....

२. तू सत-चित-आनन्द है, दैदीप्य अलौकिक है।
नित्यानन्द है रूप तेरा, ध्रुव ध्यान से पहिचाना।।
जड़ चेतन को जाना.....

३. तू मनहर मूरत है, निज तन्मय सूरत है।
अन्तर की दृष्टि से, परमात्म को पहिचाना।।
जड़ चेतन को जाना.....

४. तू तारण तरण प्रभो, सिध्दालय स्वामी विभो।
निर्विकल्प समाधी से, अविकल्प को पहिचाना।।
जड़ चेतन को जाना.....

*संकट मोचन, भव भय रोदन।
सम्यक दर्शन रत्न महान।।
जिसने प्रप्त किया है इसको,
जीत गया वह सकल जहान।।*

(१२४)

तर्ज:-(तुम रूठ के मत जाना ....)

काहे मन में कचरा भरो।
तुम चेतन हो जड़ से, सब नाता खत्म करो॥

१. पर्याय में पामरता, लो ज्ञान की साक्षरता।
तत्व निर्णय में कलम डुबा, भेदज्ञान का दीप धरो॥
काहे मन में ....

२. मिट जायेगा तम सारा, हुआ ज्ञान का उजियारा।
समकित का सूर्य जगा, पुरुषार्थ को प्रबल करो॥
काहे मन में ....

३. तुम अर्क कीर्ति चिन्मय, रहो निज में सदा तन्मय।
सदगुरु की वाणी से, स्व पद को स्वयं वरो॥
काहे मन में ....

४. तुम्हें तारण पंथ मिला, आगम और आप्त मिला।
जिनराज की वाणी पा, अब सारे कर्म हरो॥
काहे मन में ....

(१२५)

तर्ज:-(तुम रूठ के मत जाना ....)

मैं आतम शुध्दातम, मैं ही आतम परमातम।
संसार तो मृग तष्णा, क्यों लगता मन भावन।

१. मन-बुध्दि-चित्त-अहंकार, घाटे का है व्यापार।
इससे ही चौरासी लाख, मिटता न जन्म-मरण॥
संसार तो............मैं आतम...........

२. पर्यायी परिणमन, क्रमबध्द और निश्चित जान।
वस्तु रूप का चिंतन कर, हो जावे सब समाधान॥
संसार तो............मैं आतम...........

३. शुध्दता का सागर हूँ, निज ध्यान की गागर हूँ।
दृढ़ता से कर विश्वास, बन जायेगा भगवन॥
संसार तो............मैं आतम...........

(१२६)

तर्ज:-(तुम रूठ के मत जाना ....)

मैं अपरिणामी हूँ, परिणाम नहीं मेरे।
धन्य-धन्य हुआ हूँ मैं, सुखानन्द बसा मेरे॥

१. चेतन की सत्ता को, जब मैंने जाना है।
गुरु तार की वाणी से, भगवान पहिचाना है॥
अब हर्षित हूँ हर पल, नित्यानन्द मिला है रे।
धन्य-धन्य.............मैं अपरिणामी हूँ...

२. अब ध्रुव से लगन लगी, आराध्य का आराधन।
शुध्दता में समाहित हो, प्रतिपल यह अन्तर मन॥
नर जन्म को सार्थक कर, अहो भाव से गुण ले रे।
धन्य-धन्य.............मैं अपरिणामी हूँ...

३. नहीं भेद विकल्प-वच है, शैलेषी की झांकी है।
अव्यक्त-अनिर्वचनीय, समकित छवि बांकी है॥
गुण ग्राही हो चेतन, चिदानन्द दशा ले रे।
धन्य-धन्य.............मैं अपरिणामी हूँ...

तत्व ज्ञान रसिक बन कर, गुण गान करो इसका।
धर्म स्व संवेदन है, बहुमान करो इसका ।।
निज रूप में तन्मय हो, परमानन्द प्रगट तेरे ।
धन्य-धन्य.............मैं अपरिणामी हूँ...

(१२७)

तर्ज़:-(घर आया मेरा परदेशी........)

गुण ग्राही तू बन चेतन,न्यान मयी संकट मोचन ।।

१. गुरु वाणी के मोती ले, त्रय रत्नों के संग पिरोले ।
जग मग हो आतम मोहन, न्यान मयी संकट मोचन ।।
गुण ग्राही तू बन.........

२. दर्शन-ज्ञान-चारित्र मयी, तू जिन सम है कर्म जयी ।
ज्ञाता दृष्टा मन लोचन, न्यान मयी संकट मोचन ।।
गुण ग्राही तू बन.........

३. केवल ज्ञानी चतुष्टयी नन्त, ब्रह्मा-विष्णु-शिव तू अनन्त
तू ही तेरा दुःख मोचन, न्यान मयी संकट मोचन ।।
गुण ग्राही तू बन.........

४. जब जागे तब भोर सही, अंधियारी अब तमां गयी ।
बन जाओ दिनकर सोहन, न्यान मयी संकट मोचन ।।
गुण ग्राही तू बन.........

५. सत गुरु तुमको जगा रहे, 'श्री संघ' तुम्हें मना रहे ।
मिट जाये भव-भय रोदन, न्यान मयी संकट मोचन ।।
गुण ग्राही तू बन.........

(१२८)

तर्ज़:-(जिया बेकरार है..................)

निर्मल निराकार है, आतम निर्विकार है ।
अतीन्द्रिय आनन्द का, अनुभव ही अपार है ।।

१. नित्यानन्द वैरागी आतम,
आर्य जगत पति निर्मोही, आर्य जगत पति निर्मोही ।
सत स्वरूप आनन्द मूर्ति है,
स्व पर प्रकाशी त्रय लोकी, स्व पर प्रकाशी त्रय लोकी।
मंगल मय आनन्द का झरना, शान्त मूर्ति स्व धार है ।
अतीन्द्रिय आनन्द का........निर्मल निराकार है...

२. करुणा निधि हो, जगत पति तुम,
परम पुरुष हे परमेश्वर, परम पुरुष हे परमेश्वर ।
दीना नाथ अनाथ हितु तुम,
दीनबंधु हे जगदीश्वर, दीन बंधु हे जगदीश्वर ।
पुण्य पुरुष ब्रह्मास्मि सोऽहं, पुरुषोत्तम सर्वाधार है ।
अतीन्द्रिय आनन्द का........निर्मल निराकार है...

३. सोहं महा वाक्य है सिध्दं,
नमस्कार है असाधारण, नमस्कार है असाधारण ।
सत-चित परमानन्द रुप का,
नित्य आराधन और पारण, नित्य आराधन और पारण।
सहज समाधि त्रिकालज्ञ की, सुखद और कर्म हार है ।
अतीन्द्रिय आनन्द का........निर्मल निराकार है...

४. तारण तरण सर्व विध्न हारी,
भव भंजन भगवान मैं, भव भंजन भगवान मैं ।
परम सनेही जीवन्मुक्त हूँ ,
बोधि अचल निर्वाण मैं,बोधि अचल निर्वाण मैं ।
संत-महन्त अचिन्त्य चिंतामणी, चेतन शाश्वत सार है
अतीन्द्रिय आनन्द का........निर्मल निराकार है ।

卐 卐 卐 卐 卐

(१२९) *तर्ज:-(जिया बेकरार है..................)*

संयम की शुभ साधना, ज्ञान की आराधना।
तारण वाणी करती है, सबकी ही शुभ कामना ।।

१. निश्चय से तो सभी सिध्द हैं, बनना है पर कर्म से।
बनना है पर कर्म से,
एक अखण्ड-अतुलबल शाली, शुध्दातम स्व धर्म से।
शुध्दातम स्व धर्म से,
सभी जीव स्वपद को पाये, गुरु की है शुभ भावना।
तारण वाणी करती है, सबकी ही शुभ कामना ।।
संयम की शुभ साधना......

२. ममल स्वाभावी आतम तेरा, सिध्द शिला शुभ धाम है।
सिध्द शिला शुभ धाम है,
राग-द्वेष और मोह को छोडो, पर से तुम्हे क्या काम है।।
पर से तुम्हे क्या काम है
चिदानन्द रस लीन बने सब, गुरुवर की शुभ चाहना।
तारण वाणी करती है, सबकी ही शुभ कामना ।।
संयम की शुभ साधना......

३. तारण गुरु के हिय अति आनन्द, जब सब भुक्ति पायेगें।
जब सब भुक्ति पायेगें,
जिनवाणी जग हित करी अर्पण, सभी भव्य बनजायेगें।।
सभी भव्य बनजायेगें,
शिवपुर में ही मिलन सभी का, सदगुरु की है देशना।
तारण वाणी करती है, सबकी ही शुभ कामना ।।
संयम की शुभ साधना......

(१३०)

तर्ज:-(जिया बेकरार है..................)

जय बोलो गुरुतार की, आतम के उध्दार की ।
जिसने दिया सच्चा ज्ञान, दाता के भण्ड़ार की ।।

१. गुरु न होते तो कौन बताता, सत पथ दर्शक वाणी को-२।
आत्म ज्ञान ही श्रेष्ठ ज्ञान है, बाकी तो अज्ञानी को-२ ।।
आतम तारण हार है, गुरु का ये उपकार है ।
जिसने दिया सच्चा ज्ञान, दाता के भण्ड़ार की ।।
जय बोलो ....

२. निज को अपना देव बताया, गुरु-धर्म और तीरथ बृत-२।
तारण तरण तुम्हीं हो अपने, पर में न भरमाना अब-२ ।।
आतम ज्ञान अपार है, पाये सो भव पार है ।
जिसने दिया सच्चा ज्ञान, दाता के भण्ड़ार की ।।
जय बोलो ....

(१३१) तर्ज:-(जिया बेकरार है..................)

अहिंसा ही जीवन है, जीवन का आधार है।
गुरुवाणी में आद्योपान्त मिले, समय सार का सार है ।।

१. जीवन की यह महक सुवासित,
करती अपने आप को, करती अपने आप को।
आने वाले सभी सुभाषित,
पाते गुरु और आप्त को, पाते गुरु और आप्त को ।।
महावीर की वाणी स्तुत्य, अनुकरण की बार है।
गुरुवाणी में आद्योपान्त मिले, समय सार का सार है ।।
अहिंसा ही जीवन है....

२. गुरु वाणी एक महाकाव्य है,
ज्ञान की गंगा निर्मलता, ज्ञान की गंगा निर्मलता।
ज्ञान के जल में बहते देखो,
शंका-कांक्षा और जड़ता, शंका-कांक्षा और जड़ता ।।
महा प्रसाद मिला जिनवर का, श्रध्दा से शिरोधार्य है।
गुरुवाणी में आद्योपान्त मिले, समय सार का सार है ।।
अहिंसा ही जीवन है....

३. तारण वाणी महाकुम्भ है,
करना है नित अवगाहन, करना है नित अवगाहन ।
श्रध्दा से सुनना , हृदय से चुनना,
हो जायेगा जागरण, हो जायेगा जागरण ।।
तीर्थंकर की परम्परा में, आत्म दिव्य भण्डार है।
गुरुवाणी में आद्योपान्त मिले, समय सार का सार है ।।
अहिंसा ही जीवन है....

(१३२)

तर्ज:-(जिया बेकरार है..................)

आतम अविकार है, चेतन निराकार है।
सम्यक दर्शन-ज्ञान चरित मयी, शुध्दातम सत्कार है ।।

१. इस जीवन में ज्ञान मिला जो, पाया तारण वाणी से।
पाया तारण वाणी से।
ज्यौं का त्यौं बतलाया गुरुवर, मिला जिनेश्वर वाणी से।
उन्हे मिला जिनेश्वर वाणी से ।।
सुन्दर सुखद प्रभात है, ज्ञान सूर्य नमस्कार है।
सम्यक दर्शन-ज्ञान चरित मयी, शुध्दातम सत्कार है ।।टेक।।

२. छोड़ो बीत गये जो जीवन, अब तो संभल जाओ जल्दी।
मन अब तो संभल जाओ जल्दी ।।
मुक्ति रमा से मिलने को, मैं तारण पथ पर ही चलदी।
मैं तारण पथ पर ही चलदी।
गुरुवाणी का साथ है, मुझे बनाया नाथ है।
सम्यक दर्शन-ज्ञान चरित मयी, शुध्दातम सत्कार है।।टेक।।

३. जनम-जनम गुरु पाऊँ तुमको, और माता जिनवाणी को।
और माता जिनवाणी को।
तारण पंथ और शुध्दातम, ध्याऊँ अपने आतम को ।।
मैं ध्याऊँ अपने आतम को ।।
पंच परम पद सार है, बाकी जगत असार है।
सम्यक दर्शन-ज्ञान चरित मयी, शुध्दातम सत्कार है ।।टेक।।

(१३३)

तर्ज:-(रमैया बत्ता वैया........)

गुरुवच धार लिया, आतम पहिचान लिया।
मैंने शिरोधार्य किया, मैंने शिरोधार्य किया।।

१. पर्याय से,मैं तो अज्ञान थी, वि संगतियों का दौरा पड़ा-२।
तारण तत्व प्रकाश मैंने जब से पढ़ा, मेरा अज्ञान हटा -२।।
मैने शिरोधार्य किया, मैने शिरोधार्य किया।।
गुरुवच धार लिया....

२. मेरा हम राही है, तत्व निर्णय का संग।
भेद ज्ञानी बना, चेतना के स्वरंग-२।।
समकित सूर्य उगा, अज्ञा अंधकार मिटा -२।
मैने शिरोधार्य किया, मैने शिरोधार्य किया।।
गुरुवच धार लिया....

३. शेष जीवन के पल, संयम-चारित सफल।
आतम स्थिर रहो, अब से स्व में संभल -२।।
तू ही परमातमा है, श्री गुरु तार कहा।
मैने शिरोधार्य किया, मैने शिरोधार्य किया।।
गुरुवच धार लिया....

सत्संग से देखा मैंने एक कमाल,
अज्ञानी मन भी बना ज्ञानी माला-माल।
बुध्दि रुचि पाई, पुण्य योग है मेरा,
मैं होगया समर्थ, तोड़ूंगा मिथ्या घेरा।।

(१३४)

तर्ज:-(न झटको जुल्फ से पानी........)

जपो नित 'ओम नम: सिध्दं', चपल मन शान्ति पायेगा।
सुनोगे जब भी जिनवाणी, निजातम श्रध्दा लायेगा।।

१. धधकती क्रोध की अग्नि, लिये संग मान-माया-मोह।
करोगे तत्व निर्णय तो, मन अपना समता पायेगा।।
जपो नित 'ओम नम: सिध्दं'........

२. न बोलो,बोल कड़वे तुम, कोई दिल टूट जायेगा।
ये मन मंदिर प्रभु का है, मधुरता मधुरम लायेगा।।
जपो नित 'ओम नम: सिध्दं'........

३. मिला भेदज्ञान अनुपम अब, समेटो इन्द्रिय मन-वच-तन।
बनालो लक्ष्य मुक्ति का, ये संसरण छूट जायेगा।।
जपो नित 'ओम नम: सिध्दं'........

(१३५)

तर्ज:-(है अपना दिल तो आवारा........)

तुम्हें क्या नाम दूँ स्वातम, तुम्ही परमात्मा पावन।

१. तुम्हारी छवि देखी, सिध्दों की मूरत जैसी।
तारण की वाणी में है, जिनवाणी कही वैसी।।
वह अविनाशी,है निज वासी, टंकोत्कीर्णा मेरा आतम।
तुम्हें क्या नाम दूँ स्वातम, तुम्हीं परमात्मा पावन।।

२. आनन्द का सागर लहरा, मैं डूबी-डूबी गहरा।
मुझ बेसुध बावरी का, निज ज्ञान-ध्यान पहरा ।।
मिलेगा वह धरातल अब, जहाँ मुक्ति का है स्वागतम्।
तुम्हें क्या नाम दूँ स्वातम, तुम्हीं परमात्मा पावन ।।

३. पा गये भगवन तुमको, तुम तारण तरण ही हो।
प्रफुल्लित चेतना में, शिव सत्ता शून्य गुम हो ।।
करुँगा मैं प्रगट तुमको, निरापद इष्ट शुध्दातम।
तुम्हें क्या नाम दूँ स्वातम, तुम्हीं परमात्मा पावन।

(१३६)

तर्ज:-(है अपना दिल तो आवारा........)

ये चेतन तत्व परमातम, चिदानन्द शान्ति रस आतम।

१. ये देखा नहीं जाता, पकड़ नहीं आता।
तो पायें फिर कैसे, समझ नहीं आता ।।
ये अनुभव में विहंसता है, जो ध्याता है वही पाता।
ये चेतन तत्व परमातम, चिदानन्द शान्ति रस आतम।

२. जो तुम ढूंढा चाहो, तो छोड़ो मठ मंदर।
नदी न कंदरा में, मिले न अम्बर अन्दर ।।
देहालय देव बैठा है, इसे सम दृष्टि ने जाना।
ये चेतन तत्व परमातम, चिदानन्द शान्ति रस आतम।

३. बनोगे भेदज्ञानी, करोगे तत्व निर्णय।
गहो जो जिनवाणी, तो होगा स्व-पद निर्णय ।।
कहें गुरुतार जी भवियन, हर आतम ही है परमातम।
ये चेतन तत्व परमातम, चिदानन्द शान्ति रस आतम।

(१३७)

तर्ज:-(है अपना दिल तो आवारा...........)

ये आतम ज्ञान का मोती, दिवाकर से प्रखर ज्योति।
मैं कब,चिंतन-मनन-दोहन, में ये घड़ियाँ पिरो देती ।।

१. ये जब से मैंने जाना, तभी से मैंने माना।
श्री तारण गुरु की वाणी, ही शिरोधार्य पाना ।।
हे आतम बन जा विज्ञानी, जो समकित की प्रभा होती।
मैं कब,चिंतन-मनन-दोहन.....

२. करूँगी जतन ऐसा, मेरे सत पथ दर्शक जैसा।
हे आतम वरण करना, बताया सदगुरु वैसा ।।
ये मौका मिल गया दुश्तर, नहीं तो क्या दशा होती।
मैं कब,चिंतन-मनन-दोहन.....

३. पढ़ो जो जिनवाणी, सुनोगे तारण वाणी।
छूटोगे मिथ्या तम से, सफल हो जिन्दगानी ।।
यही पुरुषार्थ करलो मन, हटाओ मोह की धोती।
ये आतम ज्ञान का मोती, दिवाकर से प्रखर ज्योति।
मैं कब,चिंतन-मनन-दोहन, में ये घड़ियाँ पिरो देती ।।

(१३८)

तर्ज़:-(बेटी घर बावुल के ....)

आतम तेरी चर्चा में, मेरी अर्चा समानी है।
सम्यक श्रध्दा भक्ति से, निज आतम को पानी है ।।

१. आतम तेरी महिमा का, योगी पार न पाया है ।
नेति-नेति कह करके, मन आनन्द डुबाया है ।।
आतम तुझे पाने में, सहयोगी गुरुवाणी है ।
सम्यक श्रध्दा भक्ति से, निज आतम को पानी है ।।
आतम तेरी चर्चा.......

२. तू ही शुध्द बुध्द-चेतन, परमात्म परम पावन ।
परमेष्ठि स्वयं तुम हो, तुम ही सिध्द से मन भावन ।।
जिनवर जिनेन्द्रों सम, चेतन तेरी कहानी है ।
सम्यक श्रध्दा भक्ति से, निज आतम को पानी है ।।
आतम तेरी चर्चा.......

३. छोड़ो दुनियाँ के जग जाले, मोह ममता के प्रिय भाले।
मिली मुश्किल से जिनवाणी, खुले मिथ्या के सब ताले
तारण पंथ पाकर के, मुक्तिश्री को पानी है ।
सम्यक श्रध्दा भक्ति से, निज आतम को पानी है ।।
आतम तेरी चर्चा.......

कौन किसका है यहाँ होता कभी,
राह में भूले मिले राही सभी।

(१३९)

तर्ज़:-(मिलो न तुम तो हम घबरायें.......)

जिसने बताया तारण पंथ को, तारण तरण वे देव।
तरण निज आत्मा है ऽ ऽ तरण निज आत्मा है ।।

१. ओ मेरे प्यारे आतम, शिव सुख को पाना तेरा धर्म है।
जिनवर की वाणी गुन ले, मिट जायें तेरे सारे भर्म हैं।।
द्रव्य-भाव-नो कर्म से न्यारा, तू परमातम देव।
तरण तेरा आत्मा है ऽ ऽ तरण तेरा आत्मा है ।।
जिसने बताया ....

२. ओ मेरे प्यारे चेतन, अब ना भटकना कहीं और तू।
काल अनन्तानन्त, बिरथा गंवाये अब चेत तू।।
ममलह ममल है शून्य स्वभावी, निज सत्ता स्वयमेव।
तरण तेरा आत्मा है ऽ ऽ तरण तेरा आत्मा है ।।
जिसने बताया ....

३. ओ मेरे प्यारे आतम, समकित के धारी बन जाओगे।
रत्नत्रयों से सजकर, मुक्ति का मंगल देश पाओगे ।।
शुध्दातम का योगी बनकर, निज वैभव को देख।
तरण तेरा आत्मा है ऽ ऽ तरण तेरा आत्मा है ।।
जिसने बताया ....

हूँ अकेला, था अकेला, और अकेला ही रहूँ,
मान्यता में क्यों बंधू और परता क्यों सहूँ,

(१४०)

तर्जः-(रेशमी सलवार कुरता जाली का........)

करले तू दीदार, निज शुध्दातम का।
सेवक है संसार,उस परमातम का॥

१. सत-देव-गुरु-धर्म जग में, मिलना है दुर्लभ भाई।
शुध्दात्म देव की महिमा, अध्यात्म वाणी में गाई॥
करले तू श्रध्दान, गुरुवर वाणी का।
सेवक हो संसार, निजशुध्दातम का॥
करले तू दीदार......

२. निश्चय से तेरा आतम, है देव-गुरु-परमातम।
निज आत्म देव की श्रध्दा, है धर्म-तीर्थ मन भावन॥
धरले दृढ़ता आज, जिनवर वाणी का।
सेवक हो संसार, निज शुध्दातम का॥
करले तू दीदार......

३. भेदज्ञान तत्व निर्णय, ये राज मिला है उच्चतम।
नमोकार मंत्र को जपले, जप ओम नमः तू सिध्दं॥
मिट जाये अज्ञान मिथ्या दर्शन का।
सेवक हो संसार, निज शुध्दातम का॥
करले तू दीदार......

दशों दिशा और दिग दिगन्त में, फहरे धर्म पताका।
धरती से आसमान तक, जिनवाणी का जयकारा॥

(१४१)

तर्जः-(एक तारा टूटा गगन में........)

मेरा आतम ही शुध्दातम, मैं परमातम हूँ परमातम-२।

१. नहीं मात-पिता-सुत-भगनि, नहीं वनिता-सहोदर अपनी।
अब दूर हटो मोहातम, मैं परमातम हूँ परमातम-२॥
मेरा आतम ही ....

२. नहीं धन-वैभव या तृण भी, नहीं महल-झोपड़ी कण भी।
क्यों प्रीत करुँ या मातम, मैं परमातम हूँ परमातम-२॥
मेरा आतम ही ....

३. क्या खाना-पीना-पहनाना, मुर्दे को सजाना-नहलाना॥
जरा हटके देखो प्रीतम, मैं परमातम हूँ परमातम-२॥
मेरा आतम ही ....

४. बिन आत्म ज्ञान भव नन्त धरे, स्वातम को ध्या मन काज सरे।
अब उमर निहारो है कम, मैं परमातम हूँ परमातम-२॥
मेरा आतम ही ....

५. बस एक बार निज ज्ञान करो, तत्व निर्णय का दृढ़ पान करो।
झलकेगा अन्तर आतम, मैं परमातम हूँ परमातम-२॥
मेरा आतम ही ....

तीन लोक तिहुँ काल में, जिन धर्म ध्वजा उन्नायक हो।
आत्म बोध से सदा सर्वदा, हर आत्मा गुण ज्ञायक हो॥

(१४२)

तर्ज:-(एक तारा टूटा गगन में..........)

जिन धर्म सदा जयवन्तो, जिनवाणी जय अरिहंतो।

१. स्वाध्याय किया स्व ज्ञान मिला,
तारण वाणी से जिनवाणी लिया।
गुरुतार मुनिश्वर संतो ऽ, जिनवाणी जय अरिहंतो।
जिन धर्म सदा..........

२. शाश्वत की बगिया सदा हरी,
पाने को समकित वरण करी।
जन्मों का प्यासा मन तो ऽ, जिनवाणी जय अरिहंतो।
जिन धर्म सदा..........

३. निज शान्तानन्द ध्रुव-धाम मिला,
अहं ब्रह्मास्मि विन्द स्थान मिला।
यह मेरा है गन्तव्यो ऽ, जिनवाणी जय अरिहंतो॥
जिन धर्म सदा..........

४. कलिकाल हमारा क्या करेगा,
समयसार समय को बल देगा।
पुरुषार्थ अटल,अघ हन्तो ऽ, जिनवाणी जय अरिहंतो॥
जिन धर्म सदा..........

मैं ढूंढ़ता था जिसको, वह जन्नत यहीं मिली।
मैं करता मिन्नतें, वह मन्नत यहीं मिली॥

(१४३)

तर्ज:-(सारी सारी रात तेरी याद सताये.........)

मेरी प्यारी आतम तेरी चर्चा सुहाये।
चर्चा सुहाये मोहे, चर्या में आये रे॥
बड़ा सुख पाये, बड़ा सुख पाये।
मेरी प्यारी आतम....

१. एक तो मिला मुझे, 'श्री संघ' सत्संग।
दूजे निजातम का, अनुभव अभिन्न अंग॥
अनुभव अभिन्न अंग, गुरुवर बताये रे।
बड़ा सुख पाये, बड़ा सुख पाये॥
मेरी प्यारी आतम ....

२. आतम तुम हो, गुणों का खजाना।
गणधर तुम्हारी, महिमा बखाना॥
महिमा बखाना पूर्ण, स्वानुभव में पाये रे।
बड़ा सुख पाये, बड़ा सुख पाये॥
मेरी प्यारी आतम ....

३. स्वानुभूति बन कर, रहो मेरी आतम।
तुम्हीं मेरे प्रभुवर, तुम्हीं सिध्द प्रभु सम॥
तुम्हें सिध्द प्रभु सम, दिन रात पायें रे।
बड़ा सुख पाये, बड़ा सुख पाये॥
मेरी प्यारी आतम ....

(१४४)

तर्ज़ः-(श्यामा आन बसो वृन्दाबन में ....)

आतम ज्ञान करूँ, अब तो मन में।
मेरी उमर बीत गई, पर संग में ।।

१. मैं रंगा कषायों के रंग में, मैं रहा अनायतन के संग में।
मुझे बोध मिला, गुरु वचनो में, मेरी उमर बीत गई, पर संग में।।
आतम ज्ञान करुँ...............

२. मेरा पुण्य उदय अब आया है, जिनवाणी, सदगुरु पाया है ।।
निज ज्ञान ही तारे भव वन मे, मेरी उमर बीत गई, पर संग में ।।
आतम ज्ञान करुँ...............

३. मैं आतम हूँ, मैं शुध्दातम, मैं परमातम, मैं सिध्दातम ।।
मैं रहूँ सदा, परमानन्द में, मेरी उमर बीत गई, पर संग में ।।
आतम ज्ञान करुँ...............

४. मुझे मोक्ष लगन और प्रीत लगी, सत शास्त्र गुरो वॉच रीतमिली
बनूं शुध्द-बुध्द केवलज्ञानी मैं, मेरी उमर बीत गई, पर संग में।।
आतम ज्ञान करुँ...............

लक्ष्मी की कृपा है हमसे दूर- हमें मंजूर।
मिले एक आर्शीवाद, वही है हर वरदानों का रूप ।।
रहूँ मैं अपने शुध्दातम में पूर, रहूँ मैं अपने शुध्दातम में पूर।

(१४५)

तर्ज़ः-(बहुत प्यार करते हैं तुमको..........)

बहुत चाहते हैं, मुक्ति से मिलन।
वचन चाहे ले लो, वचन चाहे ले लो, हर सांस हम ऽ ऽ।।
बहुत चाहते हैं, मुक्ति से मिलन...

१. दुनियाँ की राहों में, खुशियाँ हैं जितनी-२।
हमको तो उनसे, उदासी हो उतनी ।।
ऐसा जो होगा तो -२, मिटें सारे गम ऽ ऽ।
बहुत चाहते हैं, मुक्ति से मिलन...

२. आतम अनुभव, हमें तो सुहाया -२।
धन्य हैं गुरु जो, तुमने बताया ।।
धरें हम सदा तो, धरें हम सदा तो, कर्म होंगे कम ऽ ऽ।
बहुत चाहते हैं, मुक्ति से मिलन...

३. मुक्ति है मंजिल, ज्ञान है रास्ता -२।
पायेगा वही जो, मोह में न फँसता ।।
करो जल्दी अब तो, करो जल्दी अब तो, उमर होती कम ऽ ऽ।।
बहुत चाहते हैं, मुक्ति से मिलन...

सरस्वती की कृपा, नहीं पास में मेरे।
घिरा हुआ हूँ, हर झंझट के घेरे ।।
बस रहें पास अनमोल वचन गुरू तेरे।
मैं आतम परमातम हूँ, सब कर्म संयोगी हैं रे ।।

(१४६)

तर्ज:-(चांदी की दीवार न तोड़ी.........)

आत्मा से प्रीति जोड़ी, जिन वच को स्वीकार किया।
श्री गुरु के उपदेशों ने जब, मिथ्या मन को बदल दिया।।
आत्मा से प्रीति जोड़ी.....

१. स्वर्ण-सुगंध सा अवसर पाया, नरतन और जिनवाणी का।
भेदज्ञान-तत्व निर्णय करके, इस भव से तर जाने का।।
समयसार मय आतम को अब, समयसार में बदल दिया।
श्री गुरु के उपदेशों ने जब, मिथ्या मन को बदल दिया।।
आत्मा से प्रीति जोड़ी.....

२. आतम अमृत मयी त्रिकाली, समता रस की गागर है।
ज्ञान गुणों से पूर्ण सदा यह, स्वानुभूति का सागर है।।
जगत श्रेष्ठ निज आतम मेरा, अविनाशी पद प्राप्त किया।
श्री गुरु के उपदेशों ने जब, मिथ्या मन को बदल दिया।।
आत्मा से प्रीति जोड़ी.....

ऐसे भी लोग हैं जिन्हे-
१. मंत्र जप कठिन लगता है और गप्पों में दिन रात निकलता है।
२. मंदिर जाने में शर्म लगती है, क्लब पार्टियों में शान बढ़ती है।
३. जो बाजार की वस्तुऐं न खाने बालों पर हंसते हैं।
मांस मदिरा को फैशन परस्ती कहते हैं।
४. जो जिनेन्द्र की वीतराग वाणी पर श्रध्दा नहीं लाते, पर कुदेवों का सुन्दर या डरावना रूप देखकर प्रपंचों को सिर नवाते हैं।

(१४७) *तर्ज:-(बाबुल की दुआयें लेती जा.........)*

निज आत्म मगन हो जा चेतन, तुझे शाश्वत पद सुख धाम मिले।
निज प्रभुता मिले,निज ध्रुवता मिले, शुध्दता का पारा वार मिले।।
निज आत्म मगन.........

१. तू सौख्य सदन, आनन्द मगन, अन्तर में आतम, कर्म दहन।
त्रय रत्न मयी अलंकार सुजन, पाने को समकित ज्ञान मिले।।
निज आत्म मगन..........

२. यह अनुपम ज्ञान दृग वाली है, चैतन्य की मूरत न्यारी है।
अनन्त चतुष्टय की लाली है, केवल निधि का भंडार मिले।।
निज आत्म मगन..........

३. तुम परमानन्द विलास करो, त्रिभुवन में व्याप्त विराग रहो।
यह दीप शिखा, निज अप्पा की, परमप्पा होने आज चले।।
निज आत्म मगन............

स्वानुभूति के गगन में, मेरा ब्रह्म मिल गया।
मैं हो गयी उसी की, वह मेरा हो गया।।
जबसे किया है दर्शन, भ्रम सारा खो गया।
मैं हो गयी पुजारिन, वह पूज्य बन गया।।
तुम देखलो निजातम, स्वय सिध्दोऽहं स्वरूप।
शुध्दात्मा ही मेरा, ब्रह्मास्मि बन गया।।
मेरा नही है कुछ भी, मैं केवली स्वरूप।
अनन्त चतुष्टय का धारी, भगवान बन गया।।
मेरा नाम है अनामी, पाये अनेकों नाम।
अद्वैत मेरी संज्ञा, ओम रूप हो गया।।

(१४८)

तर्ज:-(जो नर पिये दश धर्म का काढ़ा..........)

नित नित पीऊँ स्वानुभूति का प्याला,
निज आतम के दर्शन को।
त्रय रत्नों की सुर सरिता में,
रोज नहाऊँ आतम निर्मल हो।।

१.जन्मो से यह ओढ़ रखी थी, मैली चादर अपनी मान।
हर जन्मो में नाशवान तन, किस को दें हम अपना नाम।।
गुरु वाणी से बोधि पाया, सब मिथ्यात्व हटाने को।
त्रय रत्नो की सुर सरिता में, रोज नहाऊँ आतम निर्मल हो।।
नित नित पीऊँ.................

२.मैं आतम हूँ यह तन नाही, परमातम सम रुप मेरा।
शुध्द दृष्टि से देखा आतम, निज में सिध्दं भूप मिला।।
मोह-राग की त्याग नगरिया, आज चले ध्रुव पाने को।
त्रय रत्नो की सुर सरिता में, रोज नहाऊँ आतम निर्मल हो।।
नित नित पीऊँ.................

३.तारण पंथ सा पावन जग में, और दूसरा मार्ग नही।
धन्य हुआ है जन्म ये मेरा, जिनवाणी से प्राप्त यहीं।।
भव-भय-भ्रान्ति के तान्त्रिक मेटूं, ब्रह्मास्मि बन जाने को।
रत्ना त्रय की सुर सरिता में, रोज नहाऊँ आतम निर्मल हो।।
नित नित पीऊँ.................

(१४९)

तर्ज:-(आ जा ऽ ऽ ऽआजा आजा मेरी तकदीर के....)

ले जा ऽ ऽ लेजा, लेजा जरा सत्कर्म अपने साथ में लेजा।
जब जायेगा जग से अरे, क्या साथ जायेगा।।
ले जा ऽ ऽ लेजा.....

१. *हक छीन कर गैरों के तुमने, पेटियाँ भर लीं।*
जो पेट भूखे हैं, उन्हें कुछ रोटियाँ देजा।।
ले जा ऽ ऽ लेजा.....

२. *कुछ रो रहे कुछ चीखते, हो दर्द से बेचैन।*
तुम सो रहे मखमल बिछौने, नीदं से जग जा।।
ले जा ऽ ऽ लेजा.....

३. *देखो महल अपने लिये, क्या खूब बनवाये।*
जो चू रहीं हैं झोपड़ी, कुछ ईंट लगवा जा।।
ले जा ऽ ऽ लेजा.....

४. *कर भला तो हो भला, सच मान चल ये बैन।*
जो भोगता वह पूर्व कृत, अब शीघ्र चेत जा।।
ले जा ऽ ऽ लेजा......

५. *इंसान हो इंसानियत ले, ज़िन्दगी जिओ।*
फिर क्या करो इस वैभव का, तन छूट जायेगा।।
ले जा ऽ ऽ लेजा.....

(१५०)

तर्ज:-(अय दिल मुझे बतादे, तू.............)

शुध्दात्म की प्रभा का, गहना जो मिल गया है।
जिससे सुशोभित मेरा, चैतन्य हो गया है ।।

१. वह अर्क कीर्ति आभा, अदभुत-अखण्ड-निर्मल।
ज्ञानोदधि में मेरा ऽ, पंकज रवि मिला है ।।
शुध्दात्म की प्रभा का....

२. उववन्न दीप्ति चहुँ दिश, छायी है उदयाचल पर।
सम्यक्त बाल रवि का, उदय मन में हो गया है ।।
शुध्दात्म की प्रभा का....

३. इसके प्रशस्त बहु पुंज, प्रगति के पथ निरंतर ।
जिनवाणी वच को पा मन, निश्चिन्त सो गया है ।।
शुध्दात्म की प्रभा का....

४. छूटे विकल्प-वच-भेद, पाये प्रशम स्व संवेद ।
भाव मुक्ति के रमण से, मन निज में खो गया है ।।
शुध्दात्म की प्रभा का....

(१५१)

तर्ज:-(अय दिल मुझे बतादे तू किस पे आ ....)

परिपूर्ण ज्ञान सिंधु, निज में समा गया है।
शुध्दात्मा को भगवन, इससे कहा गया है ।।

१. सब ज्ञानियों का एक मत, अज्ञानी के अनन्त मत।
पाये जो स्वानुभव में, उसने सही कहा है ।।
परिपूर्ण ज्ञान सिंधु...

२. नि:शल्य स्वभावी आतम, औषधि है परमामृत की।
त्रय रत्न में मगन हो, चेयानन्द पिया गया है ।।
परिपूर्ण ज्ञान सिंधु...

३. आनन्द को समेटूँ , बिखरा जो तारण पथ पर।
भेदज्ञानी बन जा आतम, तब ही लिया गया है ।।
परिपूर्ण ज्ञान सिंधु...

४. सिध्द पद सदा तुम्हारा, मुक्ति के तुम हो स्वामी।
अपने ही स्वात्म बल से, 'विजय श्री' किया गया है ।।
परिपूर्ण ज्ञान सिंधु...

(१५२)

तर्ज:-(अय दिल मुझे बता दे .....)

आनन्द की दशा का, नहीं पार पाया मैंने ।
उस शब्दातीत गुण को, अव्यक्त गाया मैंने ।।

१. आनन्द अतिन्द्रिय पाया, तन-मन में नहीं समाया।
त्रय लोक्य सम्पदा को, सब तुच्छ पाया मैंने ।।
उस शब्दातीत गुण को.......आनन्द की दशा....

२. वच भेद न विकल्प था, अद्वैत सुन्न स्व था ।
शाश्वत सुखों का अविचल, चिद्रूप पाया मैंने ।।
उस शब्दातीत गुण को.......आनन्द की दशा....

३. परमेष्ठि पाँचो भगवन, पंचम ज्ञान मुझको शरणं।
समयसार आत्मा को, गुरु वच से ध्याया मैंने ॥
उस शब्दातीत गुण को.......आनन्द की दशा....

(१५३)

तर्ज़:-(अय दिल मुझे बता दे ....)

स्व पर विवेकियों की, वह कौन सी है मंजिल।
जिसके लिये मचलता, सद ज्ञानियों का हृदय तल।

१. शुध्दात्म की प्रभा का, एकत्व के मिलन का।
योगी के अनुभवन में ऽ, गन्तव्य दिखता प्रतिपल ॥
२. मैं आत्मा की श्रध्दा, तन से नहीं है नाता।
नहिं रोम छिद्र अपना ऽ, झूठा है जग का तन बल ॥
३. बांधे कई मंसूबे, जिनकी नहीं पकड़ है।
उड़ता था खग सा बे पर, ढहता गया ये मन बल।
४. माना था जग को अपना, मैं क्या किसी से कम हूँ।
होनी के आगे किसी का, कभी चल न पाया जन बल॥
५. हैं धन की तीन गतियाँ, किसी से नहीं छिपी हैं।
सद भाव संग सत्कर्म, बाकी मिटा है धन बल ॥
६. स्वानुभव का दर्श चिंतन, एकत्व का नजारा।
अर्हं बन डूब जाऊँ ऽ, सर्व श्रेष्ठ मेरा आत्म बल ॥
७. चरणार विन्द सिध्द के, चलते हैं जिन पर ज्ञानी।
सोऽहं स्वयं प्रगट को ऽ, मचला है हृदय स्थल ॥

(१५४)

तर्ज़:-(स्वारथ का संसार जगत में.........)

आत्म ज्ञान ही सार जगत में, शेष सभी निस्सार।

१. किसको मान रहा तू अपना, सारा जग है केवल सपना।
आत्म ज्ञान आधार जगत में, शेष सभी निराधार ॥
आत्म ज्ञान ही......

२. आतम ज्ञान की महिमा उत्कृष्ट, आत्म ध्यान से बनते सर्वश्रेष्ठ॥
सम्यक्त मुक्ति का द्वार जगत में, शेष सभी कारागार।
आत्म ज्ञान ही......

३. आत्म ध्यान में अरिहंत अवस्था, आत्म ध्यान से सिध्द अवस्था॥
आत्म ध्यान ध्रुव धार जगत में, शेष सभी भरमार ॥
आत्म ज्ञान ही......

४. आत्मा में शाश्वत की महिमा, आत्मा है अविनाशी गरिमा।
आत्मा ही तारण हार जगत में, शेष सभी बेकार ॥
आत्म ज्ञान ही......

५. आत्म ज्ञान अक्षय जिन वैना, परमानन्द हैं गुरु के बचना।
रत्नत्रय करे पार जगत में, शेष सभी मझधार ॥
आत्म ज्ञान ही......

इच्छ रूपी दोष अपरिमित, जितने नभ में तारे।
एक सन्तोषामृत से बुझते, ये स्फुलिंग सारे॥

(१५५)

तर्ज:-(आज मेरे यार की शादी है..........)

आज महावीर जयंती है-२।
सभी जीव बोधि पा जायें, शान्ति मैत्री है।।
आज महावीर....

१. विश्व शान्ति का मूल अहिंसा-२, सब प्राणों में ईश्वर रहता-
जिनवाणी की श्रध्दा करलो, मिटती भ्रान्ति है।।
आज महावीर..........

२. तीर्थंकर और तीर्थ हमारे-२, आत्म देव में बसते सारे-२।
इसी का पूजन-अर्चन करलो, यही तो मुक्ति है।।
आज महावीर..........

३. केवल नारे काम न देंगे-२, जब तक निज विश्राम न लेगें-२।
वर्तमान के वर्धमान तुम, ऐसी शक्ति है।।
आज महावीर..........

४. जिन शासन का झंड़ा लेकर-२, गुरू वाणी का ड़ंका लेकर -
करना है पुरुषार्थ निरन्तर, यही तो क्रान्ति है।।
आज महावीर..........

(१५६)

तर्ज:-(निंदिया वाही के घर जइयो..........)

आतम ले लइयो सदज्ञान, जहाँ गुरु तारण तरण से होंय।
तारण तरण से होंय, परम गुरु तारण तरण से होंय।।
आतम ले लइयो.....

१. आप तरें और पर को तारें, राग द्वेष को खोंय।
कुगुरु-कुदेव से बचके रहियो, उपल नाव सम होंय।।
आतम ले लइयो.....

२. ग्रंथ रचे चौदह गुरु तारण, आदि-अंत एक होय।
आतम-शुध्दातम-परमातम, स्वयं सिध्द तू होय।।
आतम ले लइयो.....

३. भेदज्ञान तत्व निर्णय दीना, सदगुरु सा नहीं कोय।
प्रभु बनने की विधि बतायी, हर आतम प्रभु होय।।
आतम ले लइयो.....

●●●●●●●●●●●●●●●●

(१५७)

तर्ज:-(हमें निज धर्म पर चलना सिखाती..........)

हमें तारण तरण बनना, सिखाती है तारण वाणी।
शुध्दातम में रमण करना, सिखाती है माँ जिनवाणी।।

१. सबेरे-शाम-दुपहर को, करो चिंतन-मनन-जप को।
सामायिक आत्म शोधन है, बताती है तारण वाणी।।
हमें तारण ....

२. तजें पांचों पापों को हम, षट कर्मों को नित्य पालें।
तारण पथ पर हमें चलना, सिखाती है माँ जिनवाणी।।
तारण पंथी हमें बनना, सिखाती है तारण वाणी।।
हमें तारण ....

३. भेद विज्ञान-तत्व निर्णय, सम्यक दर्शन को पाना है।
लहें अमरत्व सब प्राणी, सिध्द पद पाते हैं ज्ञानी।।
हमें तारण ....

४. जपो नम: ओम सिध्दं को, जपो नमोकार महामंत्र को।
तू परमेष्ठी-तू सिध्दोऽहं, बताती है माँ जिनवाणी ।।
हमें तारण ....

(१५८) *तर्ज:-(दुनियाँ से जाने बाले, जाने चले जाते हैं कहाँ....)*
ज्ञान-दर्शन चारित बाऽले, मुनिवर जाते हैं जहाँ।
जो भी दर्शन पाये उनके, धन्य होते हैं यहाँ ।।

१. पहने वीतराग का बाना, आकिंचन आतम हित ठाना।।
जाके फिर ना मुड़ने बाऽले, मुनिवर जाते हैं जहाँ ।।
ज्ञान-दर्शन चारित....

२. उत्तर-मूल गुणों को पालें, शुध्दातम में नित रम जावें।
पंच परमेष्ठि पद बाऽले, मुनिवर जाते हैं जहाँ ।।
ज्ञान-दर्शन चारित....

३. तारण तरण गुरु हैं ऐसे, इस युग के तीर्थंकर जैसे ।
अध्यात्म वाणी रचने बाऽले, गुरुवर जाते हैं जहाँ ।।
ज्ञान-दर्शन चारित....

(१५९) *तर्ज:-(बाबुल का ये घर बहना..........)*
ज्ञान पुंज आत्मा में, ज्ञान ज्योति जलाना है ।
सत शास्त्रों के अध्ययन से, पाया ज्ञान का खजाना है ।।
ज्ञान पुन्ज आतमा में.....

१. करूँ भेदज्ञान-तत्व निर्णय, मुझे सम्यक्त्व पाना है।
तारण त्रिवेणी से ऽ, त्रय रत्नों को वरना है ।।
ज्ञान पुंज आत्मा में...

२. श्रावकाचार पढ़करके, श्रावक आचार आया है ।
श्री न्यान समुच्चय सार, से, ज्ञान दृष्टि जगाना है ।।
ज्ञान पुंज आत्मा में...

३. मुझे आतम-शुध्दातम ही, परमातम बनना है ।
श्री उपदेश शुध्द सार में, गुरु तारण का कहना है ।।
ज्ञान पुन्ज आतमा में...

४. ममल भावों में डूब जाऊँ, चौबीसठांणा से बच करके।
आयु बंध त्रिभंगी है, हर दम आत्मस्थ रहना है ।।
ज्ञान पुन्ज आतमा में...

५. सिध्द शून्य स्वभावी हैं, छदमस्थ वाणी से जाना है।
खातिका विशेष,नाममाला, पढ़ के निज में समाना है।।
ज्ञान पुन्ज आतमा में...

(१६०) *तर्ज:-(जीना तो है उसी का, जिसने ये राज जाना......)*
जीना तो है उसी का,संयम का पहने बाना।
है काम आदमी का-२, मुक्ति की राह जाना ।।
जीना तो है उसी का....

१. छल और कपट से मत कर, धन की बढ़ोतरी तू।
यह धन पड़ा रहे ऽ गा, दुश्मन बने ज़माना ।।
जीना तो है उसी का....

२. कर दान चारों,विधि से, जाये ना कोई खाली।
यह धन सदा रहे ऽ गा, नौकर सा जाना-माना ।।

जीना तो है उसी का....

३. सेवा करो सभी की, और मन में करुणा लाना।
इस व्रत को ज्ञानियों ने, है वैयाव्रत बखाना ॥
जीना तो है उसी का....

४. सम्यक्त्व शुध्द पाओ, दस धर्म को निभाओ।
अति शीघ्र टूट जाये, कर्मों का ताना-बाना ॥
जीना तो है उसी का....

(१६१)

तर्ज़:-(अच्छा सिला दिया तूने मेरे प्यार का......)

तारण गुरु की वाणी मन में ध्याने आया हूँ।
अपने सारे कर्मों को खिपाने आया हूँ ॥
तारण गुरु की वाणी...

१. पाये मैंने देव-गुरु और भी अनेक।
लेकिन वो तो निकले सब कुगुरु-कुदेव ॥
सांचा देव-गुरु-धर्म, पाने आया हूँ।
अपने सारे कर्मों को खिपाने आया हूँ ॥
तारण गुरु की वाणी...

२. घंटा-घड़ियाल-पूजा-जप-तप-व्रत।
देते नहीं सम्यक बिन, कोई कुछ फल ॥
जिनवाणी का सार अपनाने आया हूँ।
अपने सारे कर्मों को खिपाने आया हूँ ॥
तारण गुरु की वाणी...

३. आज मैंने जाना प्रभु तुम सम सब।
आत्मा के गुण को आराधना है अब ॥
धर्म अहिंसा मय, फैलाने आया हूँ।
अपने सारे कर्मों को खिपाने आया हूँ ॥
तारण गुरु की वाणी...

४. व्यवहारे परमेष्ठि हैं, देव-गुरु बस।
निश्चय अपनी आत्मा है, कर्मों को नश ॥
रत्नत्रय की सरिता, नहाने आया हूँ।
अपने सारे कर्मों को खिपाने आया हूँ ॥
तारण गुरु की वाणी...

(१६२) *तर्ज़:-एक परदेशी मेरा दिल ले गया........)*

तारण हार आत्मा का, ज्ञान मिल गया,
हमको बताने गुरुतार मिल गया।
तारण हार आत्मा का..............

१. हम थे अज्ञानी भूले भटके,
मिथ्यातम में कहाँ न अटके।
सत श्रुत ज्ञान हमें गुरु दे दिया,
हमको बताने गुरुतार मिल गया ॥
तारण हार आत्मा का..............

२. शुध्द उपयोगी बना ध्यान में,
शुध्दातम हूँ स्वयं ज्ञान मे।
अनुभव प्रमाण मुक्ति धाम मिल गया,

हमको बताने गुरुतार मिल गया ।।
तारण हार आत्मा का..............

३. एक लगन इक इच्छा मन माहीं,
द्रव्य मोक्ष हम शीघ्रति पाहीं।
यही सत्प्रयास मेरा अब से बढ़ गया,
हमको बताने गुरुतार मिल गया ।।
तारण हार आत्मा का..........

(१६३) *तर्ज- (एक परदेशी मेरा............)*

आतम को विचार रहे आतम में मगन,
आतम शरण भूत मोहे चेतन की लगन।
वाही को विचार रहे वाही में मगन,
आतम शरण भूत मोहे आतम की लगन।

१. तत्व की जिज्ञासु मेरी आत्मा जी सुन लो,
आत्मार्थी हो, स्वात्मा की धुन लो।
वाही का मनन रहे, वाही का चिंतन ,
आतम शरण भूत मोहे आतम की लगन ।।
आतम शरण भूत मोहे वाही की लगन ।।
आतम को विचार रहे......

२. अहो साध्य-सिध्दि तेरी तुझमें मिलेगी,
पर्याय दृष्टि से तो अशान्ति रहेगी।
वियोगी ही मिले सारे संयोगी अगन,

आतम शरण भूत मोहे वाही की लगन ।।
आतम को विचार रहे......

३. हे जीव-आत्मा, ज्ञायक प्रभु तुम हो,
निरपेक्ष-ज्ञानमय, अनुभव गोचर तुम हो।
पर्यायों का परिणमन, देखो रे आत्मन,
आतम शरण भूत मोहे वाही की लगन ।।
आतम को विचार रहे......

(१६४) *तर्ज:- (एक परदेशी मेरा ....)*

हम भूल जायें सबको, स्वयं के लिये,
स्वात्मा का चिंतन हो,अनुभव लिये ।।

१. पर का बहुमान किया बार-बार हमने,
अब, चिदानन्द चैतन्य का सम्मान करने।
अवसर मिला है, अवलोकन के लिये ,
स्वात्मा का चिंतन हो, अनुभव लिये ।।
हम भूल जायें ....

२. सुखी-दुखी माना मैने संयोगी जन में,
मैं निरपेक्ष सुखी, अपने मगन में।
अन्तर दृष्टि होने का उपाय कीजिये,
स्वात्मा का चिंतन हो, अनुभव लिये ।।
हम भूल जायें ....

३. अहो निज की महिमा से अधिक और क्या हो,

ध्रुव के समर्पण में शान्ति और क्या हो।
अतीन्द्रिय आनन्द है पूर्णता लिये ,
स्वात्मा का चिंतन हो, अनुभव लिये ।।
हम भूल जायें ....

(१६५)

तर्ज:-(दुनियाँ में देव हजारों हैं.......)

दुनियाँ में शास्त्र हजारों हैं,
जिनवाणी जी का क्या कहना ।
जिनदेव की वाणी का क्या कहना,
गुरुदेव की वाणी का क्या कहना ।।

१. द्वादशांग भरा है कण-कण में,
स्याद्वाद मिलेगा क्षण-क्षण में।
अनेकान्त मयी की गंगा में,
स्व धर्म प्रवाह का क्या कहना ।।
जिनदेव की वाणी का क्या कहना,
गुरुदेव की वाणी का क्या कहना ।।
दुनियाँ में शास्त्र............

२. भेदज्ञान मिला है सबके हित,
तत्व निर्णय के चढ़ जाओ रथ।
सम्यक्त से पाओ रत्नत्रय,
वीतराग की वाणी का क्या कहना ।।
जिनदेव की वाणी का क्या कहना,

गुरुदेव की वाणी का क्या कहना ।।
दुनियाँ में शास्त्र............

३. तारण की वाणी में जिनवाणी,
अध्यात्म मयी अध्यात्म वाणी ।
सतगुरु की वाणी की नहीं शानी,
केवलज्ञानी की वाणी का क्या कहना
जिनदेव की वाणी का क्या कहना,
गुरुदेव की वाणी का क्या कहना ।।
दुनियाँ में शास्त्र............

४. तुम जियो और सब जीने दो,
तुम स्वयं को भगवन बनने दो।
अहिंसा से भरी है जिनवाणी,
महावीर की वाणी का क्या कहना ।।
जिनदेव की वाणी का क्या कहना,
गुरुदेव की वाणी का क्या कहना ।।
दुनियाँ में शास्त्र............

चिंतन मणी का नायक, चित्त में समाया ज्ञायक।
यह मोक्ष कल्प तरु है, बिन मांगे दे सुधालय ।।
भूल जाऊँ जग की परिणति, स्व में रमण ही इति श्री।
मैं आतमा का गायक, चिद्रूप स्व विधायक ।।

(१६६)

तर्ज:-(बार-बार तोहे का समझाये.......)

बार-बार वह शुभ दिन आये,डूबें ध्यान मंझार।
ज्ञान बिना आतम,रहना है बेकार ॥
कल-मल-जन-मन रंजन से अब, ऊब गया हर बार।
ज्ञान बिना आतम रहना है बेकार ॥

१. हो तटस्थ जब पाया मैंने, आनन्द अकथ अपार।
सौ-सौ जिव्हा थकित हुई हैं, वर्णन का नहीं पार ॥
बार-बार वह शुभ दिन...

२. तू ही आतम,परमातम है, जिनवाणी का सार।
वर्णन को सत,शास्त्र भरे हैं, चेतन का विस्तार ॥
बार-बार वह शुभ दिन...

३. दिव्य अलौकिक दर्शन तेरा, तीन लोक का हार।
गुरुवाणी से,नित-नित पाऊँ, स्वानुभूति का द्वार ॥
बार-बार वह शुभ दिन...

(१६७)

तर्ज:-(बार-बार तोहे का समझाये.......)

बहुत रचाये स्वांग अनन्ते, अब तो निज को सम्हार।
तू तो है ब्रह्माऽस्मि सोऽहं, सिध्दोऽहं अवतार ॥
नाम-रूप का काम नही है, छोड़ो यह संसार।
परमानंदी अगम-अथासी, ज्ञानी गुण भण्डार ॥
बहुत रचाये.......

१. समय-समझ-सामग्री पाई, सामर्थ का ऐतवार।
बन पुरुषार्थी,एक दिन होगा, मुक्ति महल अधिकार॥
बहुत रचाये.......

२. एक प्रहर,दो-तीन प्रहर और चत्रु प्रहर का ध्यान।
दो ही घड़ी में,पायेगा तू, विन्द स्थान महान ॥
बहुत रचाये.......

३. गुरु तारण की वाणी से जब, पाया निज का ध्यान।
आसन्न भव्य की,संज्ञा पाई, लो सम श्रेणी स्थान ॥
बहुत रचाये.......

(१६८)

''श्री सम्मेद शिखर जी''

तर्ज:-(कालिंदी के घांट-घांट पे देखू तेरी बाट.......)

शिखर जी का तीर्थ, तीर्थ से तीर्थंकर की रीत,
आत्मा पा जाना ॥

१. जिनवाणी आत्मा के, ज्ञान गुण बताये, ज्ञान गुण बताये।
हर आतम ही ईश,ईश ही होता है जगदीश, आत्मा पा जाना॥
शिखर जी का तीर्थ.......

२. पंच परम पद, तुझमें समाये, तुझमें समाये।
पंचानन्द के गीत, गीत ही आतम तेरे मीत, आत्मा पा जाना ॥
शिखर जी का तीर्थ.......

३. तेरा आतम, स्वयं प्रभू है, स्वयं प्रभू है ।
गुरु तारण के बोल,बोल से शुध्दातम में ड़ोल, आत्मा पा जाना।।
शिखर जी का तीर्थ.......

४. जियो और जीने दो,जीने देओ सबको, जीने देओ सबको ।
महावीर की बात,बात ही हमको है सौगात, आत्मा पा जाना।।
शिखर जी का तीर्थ.......

(१६९)

ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है, सम्मेद शिखर हमारा ।
शाश्वत धाम निराला है, सम्मेद शिखर हमारा ।।

१. बीस तीर्थंकर मोक्ष गये हैं, टोंक-टोंक पर मंदिर बने हैं।
शत-शत वंदन हमारा है, सम्मेद शिखर हमारा ।।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों .....

२. शाश्वत धाम निराला पर्वत, सम श्रेणी में बैठे प्रभुवर ।
तद गुण प्राप्ति का लक्ष्य हमारा है, सम्मेद शिखर हमारा ।।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों .....

३. आतम दर्शन भव दुख हरणं, श्रध्दा और आस्था सम्यक दर्शन।
गुरु तारण का नारा है, सम्मेद शिखर हमारा ।।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों .....

४. तारण भवन में आकर पाया, श्री संघ ने अमृत पिलाया ।
जिनवाणी शिरोधारा है, सम्मेद शिखर हमारा ।।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों .....

(१७०)

तर्ज:-(आपकी नजरों ने समझा.......)

सम्मेदाचल है अचल, निर्वाण भूमि तीर्थ है ।
तीर्थंकरों की मुक्ति से, यह बन गया महा तीर्थ है ।

१. इस का कण-कण है पवित्र, नन्त ज्ञानी जहाँ से मोक्ष गये ।
तीर्थंकरों की वाणी पा, वे भी महा तीर्थ बन गये ।।
आत्मा में शक्ति वह, गुरु वाणी तेरी मीत है ।
तीर्थंकरों की मुक्ति से, यह बन गया महा तीर्थ है ।।
सम्मेदाचल है अचल.....

२. मिल गयी अनुपम डगर, निज आत्मा के ध्यान की ।
पंथ तारण मुक्ति मग जो, स्वानुभव निर्वाण की ।।
हूँ अहं ब्रह्माऽस्मि सोऽहं, इसकी दृढ़ता रीत है ।
तीर्थंकरों की मुक्ति से, यह बन गया महा तीर्थ है ।।
सम्मेदाचल है अचल.....

३. उपकार है 'श्री संघ' का, गुरु वाणी सहज और साध्य की।
माता जिनवाणी अमोलक, की धरोहर बाँट दी ।।
पाना है त्रय रत्न सागर, तब ही मेरी जीत है ।
तीर्थंकरों की मुक्ति से, यह बन गया महा तीर्थ है ।।
सम्मेदाचल है अचल.....

शुध्दात्म की आराधना, आराधना का सार है ।
और ये सारा जगत, प्रपंच है निस्सार है ।।

(१७१)

तर्ज़ः-(आपकी नजरों ने समझा.......)

सम्मेदाचल से गये हैं, मोक्ष तीर्थंकर प्रभु।
दे गये हैं मुक्ति मग का, मंत्र हमको भी विभु ॥
सम्मेदाचल से गये हैं...

१. है अनादि ध्रुव की सत्ता, जान लो भवि मान लो।
शाश्वतं ध्रुव अत्मा का, सिध्द पद है ठान लो ॥
करना है पुरुषार्थ स्व में, ही रमणता का शुरु ऽ।
दे गये हैं मुक्ति मग का, मंत्र हमको भी विभु ॥
सम्मेदाचल से गये हैं...

२. बीस तीर्थंकर मोक्ष गये, और आगे भी प्रभु जायेंगे।
पूर्व में जितने गये, सबको नमन हम पायेंगें ॥
मैं भी बन जाऊँ स्वयं सिध्द, सारे कर्मों को हरुँ।
दे गये हैं मुक्ति मग का, मंत्र हमको भी विभु ॥
सम्मेदाचल से गये हैं...

३. थी लगन कबसे समाई, आज पूरण हो गई।
सिध्दों को वन्दन नमन कर, कृतकृत्य अब मैं हो गई ॥
बन जाओ सिध्दं स्वयं में, कहते हैं तारण गुरु।
दे गये हैं मुक्ति मग का, मंत्र हमको भी विभु ॥
सम्मेदाचल से गये हैं...

(१७२)

तर्ज़ः-(होंठो से छू लो तुम.......)

सम्मेद शिखर जी चलो, सिध्द क्षेत्र से भूषित है।
तजना है परता हमें, मिथ्यात्व ही दूषित है ॥

१. निर्वाण भूमि स्थल, सिध्द लोक अनन्त गये।
हैं भाव सहित वन्दन, परमातम पद जो पये ॥
पुरुषार्थ करो आतम, तू भी वह मूरत है।
तजना है परता हमें, मिथ्यात्व ही दूषित है ॥
सम्मेद शिखर जी........

२. भेदज्ञान औ तत्व निर्णय, दृढ़ता से नित्य करो।
वीतराग मयी आत्मन, ब्रह्मचर्य में रमण करो ॥
तारण पंथ की हो साधना, मुक्ति की सीरत है।
तजना है परता हमें, मिथ्यात्व ही दूषित है ॥
सम्मेद शिखर जी........

३. आराधन आत्मा का, स्वानुभूति ही नौका है।
संयोग मिले दुर्लभ, पुरुषार्थ का मौका है ॥
है देव-गुरु आत्मा, यही धर्म ये तीरथ है।
तजना है परता हमें, मिथ्यात्व ही दूषित है ॥
सम्मेद शिखर जी........

मैं और मेरा का, लगा हुआ है अंधेरा
इससे अनन्त संसार के भ्रमण में, पाया नहीं सबेरा

(१७३)

तर्ज़:-(ओ नाग कहीं जा बसियो रे..........)

ओ चेतन स्व में रहियो रे, निज रूप निरखियो रे ऽ।

१. अनुभव दर्पण प्रतिबिम्ब सिध्दं, देखा आतम हरषाया।
मुक्ति महल की इस सत्ता को, शाश्वत ध्रुव संज्ञा पाया।
अव तृप्त दशा में रहियो रे, नित आनन्द लहियो रे।
ओ चेतन स्व में ....

२. वर्तमान शुभ योग मिले हैं, बुध्दि-पुण्य उदय-स्वस्थ तन।
करना है पुरुषार्थ निरंतर, सम्यक दर्शन पाये मन ।।
फिर रत्नात्रय को गहियो रे, बन साक्षी रहियो रे।
ओ आतम स्व में ....

३. तू है त्रिकाली तू है निष्क्रिय, तू ही ज्ञायक तू अक्षय।।
तत्व निर्णय की दृढ़ता से बस, टल जायेंगे सारे भय।
शुध्दात्म की पूजा करियो रे, भेद ज्ञानी रहियो रे ।।
ओ चेतन स्व में ....

(१७४)

तर्ज़:-(क्या खूब लगती हो.........)

मुझे मिल गया है राज, भव सागर तरने का।
मेरा आतम है गुरु तार, अज्ञान को हरने का।।
फिर से कहो,कहते रहो, अच्छा लगता है।
अब जान लिया जैनागम, ही सच्चा लगता है।।
मुझे मिल गया है राज......

१. भ्रमणा ये रहेगी कब तक, बोलो कब तक।
मुझे अपना ऽ ज्ञान नहीं था तब तक ।।
यह समय समझने का ऽ, तत्व निर्णय करने का।
फिर से कहो,कहते रहो, अच्छा लगता है।
अब जान लिया जैनागम, ही सच्चा लगता है।।
मुझे मिल गया है राज......

२. गुरु तार दिये हैं जिन वच, श्री जिन वच।
मैने अपना ऽ, ध्यान किया है सच-सच ।।
श्री अगम अथासी को ऽ, समकित है वरने का।
फिर से कहो,कहते रहो, अच्छा लगता है।
अब जान लिया जैनागम, ही सच्चा लगता है।।
मुझे मिल गया है राज......

(१७५)

तर्ज़:-(कुल की परम्परा ....)

शाश्वत परम्परा का साज, सजाते रहना आतम।

१. मुझे मोक्ष सदा से भाया, मैंने आत्म धर्म अपनाया।
अब संयम को सरताज, बनाये रखना आतम ।।
शाश्वत परम्परा का....

२. सत देव-गुरु-धर्म पाया, मिली जिन वचनों की छाया।
गुरु तारण वाणी पे नाज, सदा ही रखना आतम ।।
शाश्वत परम्परा का....

३. जब अपने विचारों को देखा, मिली सत्ता शून्य सबेरा।
स्वातम के दिव्य प्रकाश, में डूबे रहना आतम ।।
शाश्वत परम्परा का....

४. मिली ज्ञान खजाने की कुंजी, गुरु तारण दे दी पूँजी।
श्री संघ का है उपकार, भेद ज्ञान में रहना आतम ।।
शाश्वत परम्परा का....

(१७६)

तर्ज :-(कुल की परम्परा और................)

शाश्वत परम्परा का साज, सजाते रहना आतम-२ ।

१. तू ही तो है अविनाशी, और नित्यानन्द स्वभावी।
अपनी ध्रुवता के भण्डार, में डूबे रहना आतम ।।
शाश्वत परम्परा......

२. मन चमत्कार जब देखे, अप्रभावी गुण तब लेखे।
अपनी सत्ता को आवाज, लगाते रहना आतम ।।
शाश्वत परम्परा......

३. गुरु तारण तरण से पाये, मन ओम नमः सिध्दं गाये।
अपनी शुध्दता का बहुमान, जगाते रहना आतम ।।
शाश्वत परम्परा......

(१७७)

तर्जः-(कुल की परंपरा का साज.........)

शाश्वत परम्परा का साज, सजाते रहना आतम।

१. जब पर में जावे मनवा, परता को माने कुनवा।
निजकी ध्रुवता का सिंगार, कराते रहना आतम ।।

२. हे शुध्द उपयोगी आतम, यह तन तो है पड़ौसी।
इससे नाते का जंजाल, मिटा ही देना आतम ।।
शाश्वत परम्परा का साज.........

३. गुरु देव हैं तारण स्वामी, अपूर्व हैं माँ जिनवाणी।
गुरुतार बताये सन्मार्ग, पै चलते रहना आतम ।।

४. सम्मेद शिखर जी पावन, वर्षाबास बना सुख साधन।
तू स्वयं सिध्द भगवान, को ध्याते रहना आतम ।।
शाश्वत परम्परा का साज.........

(१७८)

तर्जः-(कुल की परम्परा और.........)

नर जन्म मिला अनमोल, संभलते रहना चहिये।

१. मिलि बुध्दि विवेक की आँखें, खिलीं गुरु वांणी से पाँखें।
यह स्वर्ण-सुगंध सा योग, तो संचय करना चहिये ।।
नर जन्म मिला.........

२. श्री आगम आप्त मिले हैं, अति पुण्य सु योग मिले हैं।
सत धर्म का ले अवलम्ब, हे आतम तरना चहिये ।।
नर जन्म मिला.........

३. अति लिप्सा-कांक्षा-वांछा, को छोड़ो ले लो दीक्षा।
संसार संसरण जान, भोगो से बचना चहिये ।।
नर जन्म मिला.........

४. भेद ज्ञान और तत्व निर्णय, अभ्यास करुँ निशि वासर।
समकित का पाकर सेतु, मंजिल को पाना चहिये ।।
नर जन्म मिला.........

(१७९)

तर्ज़ः-(कुल की परम्परा और........)

निसई जी पावन धाऽम के, दर्शन करने चलिये ।

१. कण-कण में जहाँ गुरु वाणी, बिन्दु में सिंधु समानी।
समाधि सुख धाऽम के, दर्शन करने चलिये ।।
निसई जी पावन धाऽम........

२. करे बेतवा तट सम्बोधन, सामायिक अन्तर शोधन।
कर निर्मल निज परिणाऽम, सब दर्शन करने चलिये।।
निसई जी पावन धाऽम........

३. तप-संयम-ज्ञान त्रिवेणी, बनी ध्यान की अंतर छैनी।
प्रज्ञामयी आनन्द, के दर्शन करने चलिये ।।
निसई जी पावन धाऽम........

४. संसार शरीर विभावों, से हटने का हो उपक्रम ।
मुक्ति की होवे प्राप्ति, मन दर्शन करने चलिये ।।
निसई जी पावन धाऽम........

(१८०)

तर्ज़ः-(जाने वो कैसे लोग थे जिनके......)

बड़भागी वे लोग जिन्होने, सदगुरु शरण लिया ।
हमने भी बस अभिन्न भाव से, मन में बसा लिया ।।
बड़भागी वे लोग...

१. मेरे हिय की हर धड़कन में, गुरु,उपकार का सुमरण हो।
मेरे अंतर की सांसो में, गुरु नाम की रटना हो ।।
पुण्य पुंज के प्रशस्त पथ में, तुमने ज्ञान दिया ।
हमने भी बस अभिन्न भाव से, मन में बसा लिया ।।
बड़भागी वे लोग...

२. झूठे नाम की नहीं कामना, शुध्दातम शरणा ।
भव-भव में जिन शासन पाऊँ, तारण पंथ साधना ।।
शीतल सुखद ज्ञान की छैयां,वीतराग बन जाये जिया।
हमने भी बस अभिन्न भाव से, मन में बसा लिया ।।
बड़भागी वे लोग...

३. केवलज्ञान ही, आत्म ध्यान है, ऐसी सामर्थ है ।
यह तीर्थंकर , माँ जिनवाणी की महा प्रसादी है ।।
गुरु समर्पित भाव से तुमको, मैंने वन्दन किया ।
हमने भी बस अभिन्न भाव से, मन में बसा लिया ।।
बड़भागी वे लोग...

(१८१) कविता

तर्ज:-(कोई दीवाना कहता है........)

मेरे सदगुरु के चरणों में, ये मन मस्तक झुकाता है।
गुरु के ज्ञान का साया, मेरे चहुँओर रहता है।।

१. मन आतम ज्ञान का जोगी, फकीरी में भी हँसता है।
कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है।।
मेरे सदगुरु के चरणों में...

२. मिली मस्ती की जब हस्ती, कहां अब कौन बस्ती है।
रहे दुनियाँ में कोई जलवा, ये मन मरघट समझता है।।
मेरे सदगुरु के चरणों में...

३. सुनी जबसे तेरी महिमा, दिखा जबसे तेरा वैभव।
मेरी सांसों की सरगम में, बस तू ही तू मचलता है।।
मेरे सदगुरु के चरणों में...

(१८२) *तर्ज:-(अरे द्वार पालो............)*

अरे ज्ञान बालो ऽ, निजातम को ध्यालो ऽ।
गुरु तार वाणी का, वचन कह रहा है।।

१. अमृत को छोड़कर, कहाँ जा रहा है,
हलाहल का सागर, पीता जा रहा है।।
मोहासक्त बनकर, संसरण समर में,
यातनायें पाने, चला जा रहा है।
अरे ज्ञान बालो ....

२. प्रबुध्द तेरा आतम, जिनवर सा पावन,
पढ़ो तारण वाणी, समकित निमंत्रण
श्री संघ सत्संग, ज्ञान का उपार्जन,
तो सम्यक्त्व दर्शी, हुआ जारहा है।।
अरे ज्ञान बालो ....

(१८३)

तर्ज:-(जब तुम्हीं चले परदेश.........)

गुरु तारण तरण प्रणाम, हमें हो ज्ञान।
स्वयं का सारा, जागे पुरुषार्थ हमारा।।

१. यह तुमने बताया, मैं ईश्वर, अति हर्ष हुआ हे जगदीश्वर।
बढ़ें तारण पंथ ये प्राण, हमें निज ध्यान।।
स्वयं मय सारा, जागे पुरुषार्थ हमारा।।
गुरु तारण तरण प्रणाम.......

२. इस लक्ष्य में दक्ष रहूँ तत्पर, अब कर्म रुकें, होवे संवर।
यह निर्जर का सोपान, निरन्तर आतम हो गतिमान।।
स्वयं में सारा, जागे पुरुषार्थ हमारा।।
गुरु तारण तरण प्रणाम.......

३. गुरु आपकी वाणी है सम्बल, सो बना लिया निज का आलय
हे जीव तभी तेरी शान, बनो भगवान।।
स्वयं मय सारा, जागे पुरुषार्थ हमारा।।
गुरु तारण तरण प्रणाम.......

(१८४) *तर्जः- (जब तुम्हीं चले परदेश.....)*

जब किया निजातम नेह, मिला स्व ज्ञेय।
अतीन्द्रीय जाना, अनुभव में आन समाना ।।

१. मुझे पर से भिन्न स्वद्रव्य मिला,
तन-मन में आनन्द कमल खिला
स्व द्रव्य आज पहिचाना, अनुभव में आन समाना ।।
जब किया निजातम नेह..........

२. यह त्रिकाल वर्ती परिणमन,
क्रमबध्द अटल और निश्चित जान।
सम्बंध मेरा है कोई ना, अनुभव में आन समाना ।।
जब किया निजातम नेह..........

३. यह पुद्गल और यह द्रव्य शुध्द,
कर्ता पन से मैं चला विरुध्द।
करुँ ममल भाव की साधना, अनुभव में आन समाना।।
जब किया निजातम नेह..........

(१८५) *तर्जः-(चांद सी महबूबा हो मेरी कब,.........)*

ज्ञायक-ज्ञायक दिखता है मुझे,अंतर में ध्वनि होती है
सिध्द स्वरूपी आतम मेरी, सोऽहं में ही खोती है।

१. न परता है न चर्चा है न, मोह की परिणति यादें हैं।
ज्ञान मयी एक मूरत है जो, निज में निज को पाते है।
सोऽहं-सिध्दं-नित्यं की ही, ऐसी पूजा होती है।
सिध्द स्वरूपी आतम मेरी, सोऽहं में ही सोती है।

ज्ञायक-ज्ञायक दिखता....

२. जल से भिन्न कमल के जैसा, मुझमें उवन्नम खिलता है।
उदयाचल पर रवि रश्मि ज्यों, मुझमें सम्यक मिलता है।
नाथ निजानन्द चेतन मेरी, सोहं की ही ज्योति है।
सिध्द स्वरूपी आतम मेरी, सोऽहं का ही मोती है।
ज्ञायक-ज्ञायक दिखता....

(१८६) *"स्तुति"*

तर्ज :-(इन्साफ की डगर पे.........)

आद्यं अनादि शुध्दं, निज आत्मा प्रबुध्दं।
परमेष्ठि पद स्वरूपं, निज आत्मा प्रबुध्दं।

१. पर्याय कोई भी हो, परिणमन भी कैसा ही हो।
मैं ही तो देव देवं, निज आत्मा प्रबुध्दं ।।
आद्यं अनादि शुध्दं.......

२. केवलज्ञान या चतुष्टय, मुझमें विराजें सारे।
मैं तो हूँ केवल शुध्दं, निज आत्मा प्रबुध्दं ।।
आद्यं अनादि शुध्दं.......

३. त्रय रत्न का मैं सागर, शुध्दात्मा ही सोऽहं।
मैं ही तो मेरा सिध्दं, निज आत्मा प्रबुध्दं ।।
आद्यं अनादि शुध्दं.......

४. त्रिकाली ध्रुव की सत्ता, शाश्वत है गान मेरा।
जिन वच त्रिकाल सत्यं, निज आत्मा प्रबुध्दं ।।
आद्यं अनादि शुध्दं.......

(१८७)

"प्रार्थना"

आत्म बल-ज्ञान बल-वैराग्य बल, प्रदान कीजिये।
गुरु आप जैसे हम बनें, शक्ति दीजिये ।।

१. आत्मा की श्रध्दा और, आत्मा की शक्ति।
पहिचानूं पा जाऊँ, हो जाये तृप्ति ।।
गुरु आप जैसे संयम की, शक्ति दीजिये।
गुरु आप जैसा बन जाऊँ, शक्ति दीजिये ।।
आत्म बल......

२. ज्ञान-ध्यान तपोयुक्त, हो जाये जीवन।
त्याग और मौन मय, सदा रहे ये मेरा मन ।।
आत्मा और सिध्दों की, भक्ति दीजिये।
गुरु आप जैसा बन जाऊँ, शक्ति दीजिये ।।
आत्म बल......

०३ वीतराग भाव रहें मन में स्थापित।
व्रह्ममयी आकिंचन, आत्मा को ध्यावत ।।
समता-समाधि से, आत्मा प्रयाण कीजिये।
गुरु आप जैसे हम बनें, शक्ति दीजिये ।।
आत्म बल......

. निर्भय बनो .

(१८८)

रत्नत्रय माला

तर्ज:-(होठों से छू लो तुम.......................)

यह रत्नत्रय माला, निज नाथ करो धारण।
तुझमें है वह शक्ति, सिध्दों सी कर लो वरण ।।

१. प्रगटाओ निज गुण को, समकित से पूरित हो।
चारित्र हो ज्ञान मयी, परता का चकचूर हो ।।
त्रिदोष शमन करके, सुख कोष का हो आवरण।
तुझमें है वह शक्ति.......यह रत्नात्रय.......

२. मांगने से मिलती नहीं, तन-धन-जन शक्ति नहीं।
तू अपना खुद दाता, पुरुषार्थ का पुंज तूही ।।
एक बार तो धारण कर, मोक्षालय बढ़ते चरण।
तुझमें है वह शक्ति.......यह रत्नात्रय.......

३. जिसने भी धारी है, वे ही तो अरिहंत-सिध्द।
अनाम हुए नामी, एक संज्ञा मिली प्रबुध्द ।।
माला जी में आया है, बनो तारण तरण स्वयं।
तुझमें है वह शक्ति.......यह रत्नात्रय.......

अब कहाँ जाना ? कहीं नहीं जाना,
अपने स्व संवेदन में आना।
निज आत्मा को ध्याना,
और सब कुछ भूल जाना ।।

(१८९)

तर्ज:-(सावन का महिना.................)

यह रत्नत्रय की माला, होती है अनमोल ।
तन-धन-जन-मन शक्ति, नहीं देती इसका मोल ।।

१. समकित इसका, है पुरुषारथ,
ज्ञान चारित्र का, करता स्वागत।
श्रध्दा-भक्ति निज की,
मन मिटता ड़वाँड़ोल।।
तन-धन-जन...यह रत्नत्रय की...

२. जिस ने भी धारण, किया हृदय तल पर,
झूले निरंतर कंठ और वचन पर,
फिर देखोगे अपने, ज्ञायक को दिल खोल।
तन-धन-जन...यह रत्नत्रय की...

३. तू ही त्रिकाली, ध्रुव परमात्मा,
कहते गुरुवर तेरा शुध्द आत्मा।
त्रयलोक्य में तू ही भगवन,
है शाश्वत अब क्या बोल।
तन-धन-जन...यह रत्नत्रय की...

◆◆○◆◆◆○◆◆◆○◆◆◆○◆◆◆○◆◆◆○◆◆

मेरे घर आये भगवान, सजाई थाली भावों की।
श्रध्दा-विनय विवेक आचरण, पूजन का सामान।।

◆◆○◆◆◆○◆◆◆○◆◆◆○◆◆◆○◆◆◆○◆◆

(१९०)

तर्ज:-(साजन मेरा उस पार है.................)

रत्नत्रय माला अपार है, शब्दों से पाया नहीं पार है।

१. जीवन लगादो चाहे दाँव पर,
करना है धारण एक बार, पर।
यही तो भव का श्रंगार है,
शब्दों से पाया नहीं पार है।

२. जन्म अनन्ते बीते ज्ञान बिन,
अब तो ले लो सद ज्ञान मन।
किसका करो इन्तज़ार है,
शब्दों से पाया नहीं पार है।

३. इससे अच्छा अवसर और क्या,
ज्ञायक की महिमा का थाह पा।
डूबो निरंतर उसमें सार है,
शब्दों से पाया नहीं पार है।

(१९१) आये अत्मानन्द महाराज रे गुरुवाणी मिलेगी।

१. श्रावकाचार जी ग्रन्थ समझाये,
आचार-विचार और किरिया बताये ।
आत्मा से करो अनुराग रे ,
गुरुवाणी मिलेगी।
आये शान्तानन्द महाराज रे गुरुवाणी मिलेगी ...

२. भेदज्ञान तत्व-निर्णय बताये,
सम्यक दर्शन की प्राप्ति बताये।
लिया तारण तरण गुरु तार से,

जिनवाणी मिलेगी।

आये परमानन्द महाराज रे गुरुवाणी मिलेगी ...

३. वर्षावास का शुभ योग पाये,
प्रतिदिन ज्ञान की चर्चा सुनाये।
सबका हो कल्याण रे,
गुरुवाणी मिलेगी।

आये सुखानन्द महाराज रे गुरुवाणी मिलेगी ...

(१९२)

तारण पंथ को पा लिया, हमने जीवन सजा लिया-२।

१. सप्त व्यसन के त्याग बिन अधूरे, लेकिन अब हम हो गये पूरे।
क्रिया अठारा को पा लिया, हमने जीवन सजा लिया ॥
तारण पंथ को...........

२. भेदज्ञान की पाई गरिमा, तत्व निर्णय की जानी महिमा।
सम्यक दर्शन ध्या लिया, हमने जीवन सजा लिया ॥
तारण पंथ को...........

३. आत्मा मेरी सिध्द स्वरूपी, भाव-विभाव 'पर मान्यता' झूठी।
गुरु वाणी से ले लिया, हमने जीवन सजा लिया ॥
तारण पंथ को...........

४. त्रय रत्नों से सुसज्जित आतम, अनन्त चतुष्टय मय परमातम।
निज पद निधि को पा लिया, हमने जीवन सजा लिया ॥
तारण पंथ को...........

५. जन्म-जन्म शुध्दातम ध्याऊँ, तारण पंथ, जिन धर्म को पाऊँ।
निज श्रध्दा को दृढ़ किया, हमने जीवन सजा लिया ॥
तारण पंथ को...........

(१९३)

आतम की नैया है ज्ञान मय, लहराते चली जा रही है-२।

१. जित देखूँ उत जल ही जल है, बीच प्रफुल्लित खिला कमल है।
उस पर विराजे अनुभूतिमय, लहराते चली जा रही है ॥
आतम की नैया है.......

२. जित देखूँ उत आग लगी है, बीच सुमेरु स्वर्ण मयी है।
उस पर विराजे स्वानुभूति मय, लहराते चली जा रही है ॥
आतम की नैया है.......

३. जित देखूँ उत पवन झकोरे, उसमे हैं स्थिर, शुध्दातम मोरे।
शुध्द गुणों के कोष मय, लहराते चली जा रही है ॥
आतम की नैया है.......

४. जित देखूँ उत पद ही पद हैं, हर एक पद में शुध्दात्म तत्व है।
उसमें विराजे ओंकार मय, लहराते चली जा रही है ॥
आतम की नैया है.......

५. जित देखूँ उत सिध्द शिला है, शाश्वत का सुख धाम किला है।
उसमें विराजे परमात्म मय, लहराते चली जा रही है ॥
उसमें विराजे निजआत्म मय, लहराते चली जा रही है ॥
आतम की नैया है.......

मैं ही मेरी सिध्द सिला हूँ, मैं ही मेरा सिध्द प्रभु।
सिध्दि साधना हेतु आया, बन करके सिध्दार्थ प्रभु
....
आत्मा का सम्यक अनुभव-स्व शुध्द चैतन्य स्वाभाव मय

(१९४)

टंकोत्कीर्ण अप्पा निज में सदा समा जा,
पाऊँ अतीन्द्रिय आनन्द, देखूँ तेरा नजारा।
टंकोत्कीर्ण अप्पा......

१. ज्ञानी के ज्ञान की तुम, सर्वोत्कृष्ट प्रभा हो।
ध्यानस्थ होके पाया, तुम ईश हो हमारा ॥
टंकोत्कीर्ण अप्पा...

२. शुध्दात्म शून्य स्व गुण, अहो मेरा रत्नत्रय है।
स्वभाव से संयुक्त है, ध्रुव पद यही हमारा ॥
टंकोत्कीर्ण अप्पा...

३. गुरुदेव की कृपा का, मैंने प्रसाद पाया।
हर रोम में स्वीकृति से, महोत्सव का है नजारा ॥
टंकोत्कीर्ण अप्पा...

४. समयसार मयी हो आतम, समय को निकट लेआओ।
अशेष में समाहित, अभेद का प्रसारा ॥
टंकोत्कीर्ण अप्पा...

(१९५)

अगंना में झूल रहो पलना, गढ़ाशाह को ललना-२ ॥

१. धन्य बिलहरी भाग्य तुम्हारे-२, खेलें तारण तेरे अंगना।
गढ़ाशाह को ललना..............अगंना में झूल रहो॥

२. सेमरखेड़ी गुरु तप कीना-२, आतम ज्ञान प्रगटना।
गढ़ाशाह को ललना............अगंना में झूल रहो ॥

३. श्री सूखा जी विहार भूमि, अतिशय आनन्द बरसना।
गढ़ाशाह को ललना............अगंना में झूल रहो ॥

४. साधु समाधि निसई जी तुम्हारी, जंगल में मंगल सुहावना।
गढ़ाशाह को ललना............अगंना में झूल रहो ॥

५. आतम ज्ञान दियो जग तारण, पाऊँ तुम्हारी ही शरणा।
वीरश्री देवी को ललना...........अगंना में झूल रहो॥

(१९६)

अगंना में झूल रहो पलना, त्रिशला देवी को ललना-२ ॥

१. चैत्र सुदी तेरस को जन्मे, तीर्थंकर प्रभु सिध्द पद पाने।
आतम ज्ञान प्रगटना, त्रिशला देवी को ललना-२।
अगंना में झूल रहो........

२. अहिंसा मयी प्रभु धर्म बताया, जियो और जीने दो पाठ ढ़ाया
हर आतम प्रभु पावना, त्रिशला देवी को ललना-२।
अगंना में झूल रहो........

३. तेरा आतम स्वयं प्रभु है, अंतर आतम स्वयं गुरु है।
समवशरण दिव्य देशना, त्रिशला देवी को ललना-२।
अगंना में झूल रहो........

आतम प्रदेशों में विचरण करलोसुख सत्ता साम्राज्य जहाँ
कण कण में गुणमय को देखो शाश्वत का स्वराज्य जहाँ

(१९७)

अंगना में झूल रहो पलना, मरु देवी को ललना-२ ॥

१. छप्पन कुमारी देवी आईं, माता की सेवा निमगना।
मरु देवी को ललना......अंगना में झूल ....

२. नगरी अयोध्या कुबेर सजायो, आदि प्रभु जी जनमना।
मरु देवी को ललना......अंगना में झूल ....

३. धर्म तीर्थ का किया प्रवर्तन, ध्वनि जिनवाणी उचरना।
मरु देवी को ललना......अंगना में झूल ....

४. आप भये हैं सिध्द प्रभु जी, मारग सबको प्रगटना।
मरु देवी को ललना......अंगना में झूल ....

५. दोइ कर जोड़े विनती हमारी, पाऊँ तुम्हारी ही शरणा।
मरु देवी को ललना......अंगना में झूल ....

(१९८)

अगंना में झूल रहो पलना, कृष्णा देवी को ललना-२।

१. जन्म भूमि तुमरी बीसाबाड़ी, शिक्षा बरेली के अंगना।
कृष्णा देवी को ललना......अगंना में झूल ....

२. आत्म ज्ञान जब हृदय समायो, त्याग दिये पर संग ना।
कृष्णा देवी को ललना......अगँना में झूल ....

३. चौबीस वर्ष में ब्रह्मचर्य दीक्षा, तीव्र करी आत्म साधना।
कृष्णा देवी को ललना......अगंना में झूल ....

४. गुरु वचनो में जीवन समर्पित, बसंत भये ब्रह्मानन्द ना।
कृष्णा देवी को ललना......अगंना में झूल ....

५. जिनवाणी की महिमा सुनायी, जन-मन भये आनन्दमा।
कृष्णा देवी को ललना......अगंना में झूल ....

(१९९)

दरबार में सदगुरु तारण के, हर भेद मिटाये जाते हैं।
चढ़ ज्ञान की पावन नौका पर, भव सागर से तर जाते हैं।
गुरु तार की पावन वाणी से, हर भेद मिटाये जाते हैं।
चढ़ ज्ञान की पावन नौका पर, भव सागर से तर जाते हैं।
दरबार में सदगुरु...............

१. बड़ भागी हैं वे भव्य जिन्हे, श्री सदगुरु वाणी का संवल है।
होकर के निरालम्ब अपने में, हर पल जो समाये जाते हैं ॥
दरबार में सदगुरु...............

२. यह वाणी श्री जिन तारण की, अव्यक्त-अनिर्वच अति पावन।
आत्मार्थी जिज्ञासु बन करके, चर्या की शमा लिये जाते हैं ॥
दरबार में सदगुरु...............

३. हे आत्मन यह शुभ अवसर है, करो भेद ज्ञान-तत्व निर्णय को
सब मोह मिटादो निज मन से, चैतन्य के दर्शन पाते हैं ॥
दरबार में सदगुरु...............

(२००)

अन्तर शोधन किया करो, इतना तो जिया किया करो।
पर भावों से बचा करो, इतना तो जिया किया करो ।।
अन्तर शोधन ....

१. तेरे पुण्य उदय चल आये, तारण पंथ में जन्म को पाये।
तारण पंथी रहा करो, इतना तो जिया किया करो ।।
अन्तर शोधन ....

२. चारों कषायों से लो निवृत्ति, मोह राग की मेटो सृष्टि।
एकत्व चिन्तन किया करो, इतना तो जिया किया करो ।।
अन्तर शोधन ....

३. मानव जीवन मिला किसलिये,आत्म कल्याण को करने केलिये
तो पुरुषार्थ को नित्य करो, इतना तो जिया किया करो ।।
अन्तर शोधन ....

४. गुरु वाणी के वचनों पे चलना, भेदज्ञान तत्व निर्णय करना।
सम्यक दर्शन प्राप्त करो, इतना तो जिया किया करो ।।
अन्तर शोधन ....

५. मैं आत्मा हूँ यह तन नाहीं, मैं ना किसी का मेरा कुछ नाहिं।
परमामृत इस औषधि को, रोज नियम से लिया करो ।।
अन्तर शोधन ....

(२०१)

तारण वाणी को साधुवाद, जिसने मुझे बनाया नाथ।
मैं ही स्व का स्व सम्राट, अहा धन्य है,
जिनवाणी का मर्म अनुभव गम्य है ।।

१. मैं कर्मों का दास बना था, भूल के अपना वैभव।
गुरुवाणी उदवोध मिला तो, पाया अपना शैशव ।।
फिर तो वृध्दिगत पुरुषार्थ, करता पूर्ण लक्ष्य को प्राप्त।
निज में रम्य है, जिनवाणी का मर्म अनुभव गम्य है ।।
तारण वाणी को.......

२. आज असीमित आनन्द पाया, सिध्द रूप निज लखकर।
पावन सुरति का सम्बोधन है, 'परमामृत' को चखकर।।
अब तो लगन लगी हर बार, आतम हो जा एकाकार।
तू ही ब्रह्म है, जिनवाणी का मर्म अनुभव गम्य है ।।
तारण वाणी को.......

३. गुरु वाणी से प्राप्त हुई है, श्रीजिनवर की वाणी।
ऐसा दुर्लभ योग मिले कब,पंचम काल में प्राणी ।।
बना 'श्री संघ' सहकार, कर निज सामर्थ का ऐतवार।
प्रभुवर तू स्वयं है, जिनवाणी का मर्म अनुभव गम्य है।।
तारण वाणी को.......

(२०२)

मैं भक्त हूँ तुम्हारी, मंदिर तुम्हारा है मन।
इस मेरे मन में पाऊँ, निज आत्म तेरा दर्शन ।।

(१) मैं तो तड़फ रही हूँ, तुमको तरस नही है ।
ध्यानस्थ हो के करती, कर्मों का होम हवन ।।
इस मेरे मन में पाऊँ, निज आत्मा का दर्शन ।
मैं भक्त हूँ तुम्हारी, तुम ही तो मेरे भगवन ।।

(२) राग-द्वेष-कूड़ा-करकट, फेकूं निकाल बाहर ।
अब स्वच्छ मन में आओ, आनन्द के सघन घन ।।
इस मेरे मन मे पाऊँ, निज आत्म तेरा दर्शन ।
मैं भक्त हूँ तुम्हारी, मंदिर तुम्हारा है मन ।।

(३) सब त्यागा तेरे खातिर, चाहूँ न रंच भर कण ।
मैं रो पड़ूंगी अब तो, मेरे प्राण प्रिय अभिन्नतम ।।
इस मेरे मन में पाऊँ, निज आत्म तेरा दर्शन ।
मैं भक्त हूँ तुम्हारी, तुम ही तो मेरे भगवन ।।

(४) तुम एकमेक सत्ता, हम एकमेक ईश्वर ।
जो दर्श दे छिपे हो, आ जाओ पूर्णता बन ।।
इस मेरे मन मे पाऊँ, निज आत्मा का दर्शन ।
मैं भक्त हूँ तुम्हारी, तुम ही तो मेरे भगवन ।।

(५) सांसों में तुम समाओ, प्राणों में तुम दिखाओ ।
लो अर्चना के अर्ध्य से, प्राणेश नित्य नमन ।।
इस मेरे मन में पाऊँ, निज आत्मा का दर्शन ।
मैं भक्त हूँ तुम्हारी, तुम ही तो मेरे भगवन ।।

(२०३)

इक अर्ज मेरी सुनलो, जग तार जाने मैया।
मझधार में फंसा हूँ, भव पार चाहूँ मैया।।
इक अर्ज मेरी सुनलो, जिनवाणी मेरी मैया।

१. तुमने अनेकों तारे, पापी अधम उबारे।
मैं हूँ अधम जनों का, सरताज मेरी मैया।।
मझधार में फंसा हूँ, भव पार चाहूँ मैया।
इक अर्ज मेरी सुनलो, जिनवाणी मेरी मैया।।

२. मैं जानता नहीं था, कैसा है प्यार तेरा।
जीवन का भार तुम पर, तारण तरण खिवैया।।
मजधार में फंसा हूँ, भव पार चाहूँ मैया।
इक अर्ज मेरी सुनलो, जिनवाणी मेरी मैया।।

३. अच्छा हूँ या बुरा हूँ, तेरा ही लाल हूँ माँ।
मुझे पंथ सत बतादो, मेरी बाहें थामो मैया।।
मझधार में फंसा हूँ, भव पार चाहूँ मैया।
इक अर्ज मेरी सुनलो, जिनवाणी मेरी मैया।।

४. लाखों गुनाह मेरे, काविल नही क्षमा के।
करुणा-क्षमा बहाओ, मुझे बाल जानो मैया।।
मझधार में फंसा हूँ, भव पार चाहूँ मैया।
इक अर्ज मेरी सुनलो, जिनवाणी मेरी मैया।।

(२०४)

सरगम सुनी जब ज्ञान की-२, मन निज में खो गया।
चर्चा सुनी जब ध्यान की, मन शीतल हो गया ।।

१. अब हटो बचो हे आत्मा, सारे विकल्पों से।
फिर मौन की ले शरणा, मन मेरा सो गया ।।
सरगम सुनी जब...

२. मेरा नहीं कुछ भी यहाँ, यह भाव जग गया।
मुझे करना है कुछ भी नहीं, उत्कर्ष हो गया ।।
सरगम सुनी जब...

३. हे भेदज्ञानी आत्मा, करो ज्ञान में विचरण।
इस आत्म वैभव बाग का, त्रय रत्न मिल गया ।।
सरगम सुनी जब...

४. तारण तरण की वाणी से, हम पाये जिनवाणी।
तारण तरण है आत्मा, उद्घाटन हो गया ।।
सरगम सुनी जब...

(२०५)

रहे प्रतिष्ठित ओम, नयन और मन के विस्तृत व्योम-२

१. शून्यागार सुहाना मंदिर, ओम रूप परमेष्ठी मंड़ित ।
प्रक्षालित ज्ञान सोम, नयन और मन के विस्तृत व्योम।।
रहे प्रतिष्ठित ओम........

२. शून्यास्थ है स्वानुभूति संवेदन, स्व-पर का यथार्थ विवेचन।
परका तर्पण होम, नयन और मन के विस्तृत व्योम ।।

३. नमन करुँ मैं वीतराग जो, नमन करुँ पथ दर्श गिरा को।
नमन निजातम ओम, नयन और मन के विस्तृत व्योम।।
रहे प्रतिष्ठित ओंम........

(२०६)

निज अनुभूति संग, मिला मुझे अकथनीय आनन्द ।।

१. पर घर में, मैं भ्रमता रहा हूँ , सबको अपना मान रहा हूँ।
मोह के जकड़े फन्द, माना मैंने अकथनीय आनन्द ।।
निज अनुभूति संग.....

२. भाव-विभाव को समझा अपने, उनसे अलग हुआ नहीं सपने।
खूब सहे दुख द्वन्द, माना मैंने अकथनीय आनन्द ।।
निज अनुभूति संग.....

३. कुगुरु-कुदेव-कुधर्म न जाने, पटक-पटक सिर भिक्षा मांगे।
अबतो छूटा मित्थ्यातम का रंग, मिला मुझे अकथनीय आनन्द
निज अनुभूति संग.....

४. आत्म देव-गुरु-धर्म पिछाने, वीर प्रभू की देशना जाने ।
भोर हुई रवि संग, मिला मुझे अकथनीय आनन्द ।
निज अनुभूति संग.....

५. तारण गुरु की वाणी से अब, आत्म जगी,अनुभूति हुई तब ।
देव बसे निज अंग, मिला मुझे अकथनीय आनन्द ।।
निज अनुभूति संग.....

६. अर्क स्वभावी आतम मेरा, उर्ध्व गमन सिध्द लोक बसेरा ।
सिध्द सम शुध्द अखण्ड, मिला मुझे अकथनीय आनन्द ।।
निज अनुभूति संग.....

(२०७)

((यथार्थ चित्रण))

कैसो बनो है जग वा ऽ सी मोहे, देख के आवत हाँसी।
कैसो बनो है संसा ऽ री मोहे, देख के आवत हाँसी।

१. शत्रु हमारे सुत बन आये, लाड़ लड़ाये गोद खिलाये ।
मोह की बांधी गल फाँ ऽ सी मोहे, देख के आवत हाँसी ।।

२. मात पिता तो क्षण न सुहाये, सास-ससुरजी,अतिशय भाये।
पत्नि बनाये उसे दा ऽ सी मोहे, देख के आवत हाँसी ।।

३. बच्चों के बीच में नौकर जैसा, फिर भी हँसत है चित्र के जैसा।
रोटी मिलत हैं बा ऽ सी मोहे, देख के आवत हाँसी ।

४. कौन कहाँ तक कथा बखाने, आतम हित की सीख न माने।
ज्ञानी कहें तो उदा ऽ सी मोहे, देख के आवत हाँसी ।

५. सबकी ममता लगे बटोरे, लौट गये दोउ नैन कटोरे ।
खुशी मनाये घर बा ऽ सी मोहे, देख के आवत हाँसी ।

६. जो बिन जाने बने सयाने, बनो विज्ञानी स्व पर जाने ।
थोड़ी सी रह गई श्वां ऽ सी मोहे, देख के आवत हाँसी ।

ॐ नम: सिध्दम् में बसा मेरा आतम ।
मेरी आतम में बसा हैं, ॐ नम: सिध्दम् ।।
सांसो की ड़ोर, जो चल रही हैं प्रतिदिन ।
बंद होबे जब भी, कहकर ॐ नम: सिध्दम् ।।

(२०८)

जाप करत में नींद आय, और बात करे भग जाय।
रे मन,आलस में दिन जाय, रे मन.............

१. वृथा प्रलाप बंध बहु करता, आतम हित की सीख न धरता।
बना प्रमादी हाय, रे मन आलस में दिन जाय ।।
जाप करत में ......

२. पशु-पक्षी भी बोलन लागे, नींद में खोया ले खुर्राटे ।
उठते आठ बजाय, रे मन आलस में दिन जाय ।।
जाप करत में ......

३. बिस्तर में ही चाय पीय कर, 'मूड फ्रेश' पेपर को पढ़कर।
देखें,टी.वी. आँख गड़ाय, रे मन आलस में दिन जाय ।।
जाप करत में ......

४. चैत्यालय के नाम से छड़कें, सत संगति के मौका बरकें।
बातें बड़ी बनाय,रे मन आलस में दिन जाय ।।
जाप करत में ......

५. रोज मरत हर एक को देखें, फिर भी अपनी कबहुँ न सोचें।
कौन गति कब पाय, रे मन आलस में दिन जाय ।।
जाप करत में ......

६. पंद्रह प्रकार प्रमाद को त्यागो, अब भी श्रावक के व्रत पालो।
तारण पंथ की साधना करके, सारे दु:ख नशाय।।
रे मन,आलस में दिन जाय...........जाप करत में ......

(२०९)

' लोक गीत '

तू ही मेरी पार लगैया, जिनवर वाणी मैया।
पार करो ऽ पार करो नैया-२ ।।

१.कौन बैठा है माता तेरी नाव में, कौन पहुँचायेगा मुक्ति गांव मे
आतम जामें बैठन हारो, तारण खेवे नैया ।।
पार करो-२ नैया..............तू ही मेरी पार लगैया...

२.मैंने नाव उपल की बनाई थी, सारे जन्मों की राशि गंवायी थी।
बार-बार भव सागर डूबे, पार न पायो मैया ।।
पार करो-२ नैया..............तू ही मेरी पार लगैया...

३.दु:ख दारुण जनम ऐसे बीते, घृत डाल जले आग जैसे ।
कर्मों की बहु तपन सही है, धर्म करत है छैयाँ ।।
पार करो-२ नैया..............तू ही मेरी पार लगैया...

४.क्रोध-मोह ने डाला है डेरा, चारों गतियों में कीना बसेरा ।
राग-आग की दाह मेटके, शीतल नीर पिलैया ।।
पार करो-२ नैया..............तू ही मेरी पार लगैया...

५.पंच परमेष्ठी बैठे हैं जामें, मैं भी बैठूंगा माँ तेरी नाव में ।
जोभी इसमें बैठ गये हैं, मोक्ष पुरी पहुँचैया ।।
पार करो-२ नैया..............तू ही मेरी पार लगैया...

भव भंजन मुक्ति वरण, शुध्दातम जिन देव।
प्रथम नमूं मैं आपको, अरिहंत-सिध्द स्वयमेव।

(२१०)

' रसिया '

मुक्ति मंगल देश बसाओ रसिया, मुक्ति मंगल।

१. राग-द्वेष को इंधन जारो-२।
ध्यान की आग लगाओ रसिया, मुक्ति मंगल ।।
मुक्ति मंगल देश.......

२. समता रंग ले त्याग की रोली-२।
ज्ञान की होली खेलो रसिया, मुक्ति मंगल ।।
मुक्ति मंगल देश.......

३. संयम की पिचकारी भर के-२।
ज्ञान को रंग बरसाओ रसिया, मुक्ति मंगल ।।
मुक्ति मंगल देश.......

४. कर्म रहित निज पद को पाओ-२।
आतम ध्यान लगाओ रसिया, मुक्ति मंगल ।।
मुक्ति मंगल देश.......

५. जिनवाणी और जिन प्रभु साँचे-२।
चरणन शीश नवाओ रसिया, मुक्ति मंगल ।।
मुक्ति मंगल देश......

ममल भाव को करूँ नमन, शुध्दातम में सदा रमण।
निज आतम ही मुझे शरण, मिट जायेगा जन्म मरण ।।

(२११)

होली

धीमी-धीमी उड़े री गुलाल, चलो रे मन मंदिर में।
चलो रे मन मंदिर में, चलो रे मन मंदिर में॥
धीमे-धीमे उडे री...

१. राग-द्वेष की होली जली है-२।
वीतराग की फाग, चलो रे मन मंदिर में॥
धीमी-धीमी उड़े री...

२. भेदज्ञान मय सत्ता पाई-२।
तत्व निर्णय बरसात, चलो रे मन मंदिर में॥
धीमी-धीमी उड़े री...

३. सम्यक दर्शन गले लगाया-२।
जय,तारण तरण जुहार, चलो रे मन मंदिर में॥
धीमी-धीमी उड़े री...

४. समता रंग संयम पिचकारी-२।
क्षमा भाव भये आज, चलो रे मन मंदिर में॥
धीमी-धीमी उड़े री...

भव रोग का मेटन हारा है,
आत्मा का चिन्तन न्यारा है।
गुरुतार का एक ही नारा है,
भगवान स्वयं तू प्यारा है॥

(२१२)

होली

जंगल में मनाई फाग, मंगल गा-गा कर-२।

१. तत्व मंगल से शुरु हुए सब, नश गये सबके राग।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

२. भेदज्ञान के मंगल गाये, तत्व निर्णय के साथ।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

३. सम्यक दर्श के मंगल गाये, विभावों ने खाई मात।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

४. ज्ञान शिविर में ध्यान लगाये, मौन की हुई बरसात।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

५. ज्ञान ध्यान और मौन साधना, मंगल हुआ प्रभात।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

६. रत्नत्रय के मंगल गाये, चतुष्टय की महिमा धार।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

७. शान्तानन्द ध्रुव धाम विराजे, निर्वाण नाथ के साथ।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

८. हर दम आनन्द बरस रहो है, मुक्तिश्री के साथ।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

९. गुरु वाणी के मोती पाये, श्री संघ सहकार।
मंगल गा-गा कर .....जंगल में मनाई फाग....

(२१३) ('शिक्षा')

हाय हेल्लो छोड़ो, जय तारण तरण बोलो-२

१. सुबह-शाम जब आपस में हम, जय तारण तरण की कहते हैं।
बालक जन भी देख बड़ों का, अनुसरण ही करते हैं।
इसीलिये तो,भाई-बहन तुम- जय तारण तरण बोलो।
हाय हेल्लो छोड़ो, जय तारण तरण बोलो ।।

२. गुरु आम्नाय में तारण स्वामी, मुक्ति पथ दरसाते हैं।
वर्ध्दमान के बाद, धर्म उत्थान मार्ग पर लाते हैं।
इसीलिये सब श्रध्दालु जन- जय तारण तरण बोलो।
सुप्त मन के द्वार खोलो।
हाय हेल्लो छोड़ो जय तारण तरण बोलो ।।

३. भये अनन्ते सिध्द और आगे भी जो होवेंगे।
तारण तरण कहाये वे सब, तारण पंथ संजोवेंगे।
इसीलिये सब महामानव तुम- जय तारण तरण बोलो।
अध्यात्म वाणी खोलो।
हाय हेल्लो छोड़ो, जय तारण तरण बोलो ।।

(२१४) *होली*

सिध्द स्वरूप की आई सुरत जब, मन में मची है फाग।

१. राग-द्वेष की होली बनाई, श्रध्दा-भक्ति की आग।
सिध्द स्वरूप की.....

२. चिन्तन-मनन की रोली लगाई, ध्यान से रंग लई आत्म।
सिध्द स्वरूप की.....

३. समता भाव के पान सुपारी, समदर्शी सिर नाय।
सिध्द स्वरूप की.....

४. ऐसी होली खेलूं नित-नित, शुध्दातम को ध्याय।
सिध्द स्वरूप की.....

५. तारण पथ चल सम्यक पाऊँ, निज आतम के काज।
सिध्द स्वरूप की.....

(२१५)

आतम विरह अब सहा नहीं जाये,
संसार में अब रहा नहीं जाये।

१. चारित्र मोहनीय कर्म ये कैसा,
खूंटे से बांधे है पशु के जैसा।।
इससे निवृत्ति का अवसर आये,
संसार में अब रहा नहीं जाये।। आतम विरह अब ...

२. छोडूँ सकल परिग्रह आडम्बर,
मुनिव्रत धारुँ बनूं मैं दिगम्बर।
शुध्दात्मा की लगन ललचाये,
संसार में अब रहा नहीं जाये।। आतम विरह अब ...

३. आतम तुम्हारी शक्ति महान है,
केवलज्ञान गुणों की तू खान है
कर ले पुरुषार्थ तो सिध्द बन जाये,
संसार में अब रहा नहीं जाय, आतम विरह अब ...

(२१६)

व्यंग्य

आँख में पड़ गया जाला, नाक से बहता नाला।
बुध्दि में जड़ गया ताला, क्या सोच करे तू लाला।

१. जब तक तन था स्वस्थ, भोगों में रहता मस्त।
पीता था प्रतिदिन हाला, क्या सोच करे तू लाला।

२. कान थे जब तक चंगे, गानों में रहे निमग्ने।
अब कहते बहरा बाला, क्या सोच करे तू लाला।

३. हाथ पांव थे कर्रे, आये दिन लड़ते-मरते।
ले लकड़ी फिरता साला, क्या सोच करे तू लाला।

४. वाणी से देता गाली, करनी थी निशदिन काली।
भोजन के पड़ रहे लाला, क्या सोच करे तू लाला।

५. सोने ना देवे बुढ्ढ़ा, क्यो खों-खों करता मुर्दा।
छिद रहे व्यंग्य के भाला, क्या सोच करे तू लाला।

६. जिन परिजन बना घमंडी, बे हो रहे तुझ पर चण्डी।
हाय-दीन बना बेचारा, क्या सोच करे तू लाला।

७. सब देखो आँख पसारा, है धर्म सदा ही सहारा।
हो जा आतम में मतवाला, क्या सोच करे तू लाला।

८. है समय अभी भी चेतो, तत्व निर्णय से बस देखो।
यह भेद ज्ञान सुख शाला, क्या सोच करे तू लाला।

••••••••••••••••

(२१७)

गजल

तर्ज:-(जिन्दगी को खुशी चाहे कम दीजिये............)

जिन्दगी में सुकर्म, चाहे कम कीजिये,
धर्म ध्यानी बनो और जप कीजिये ।।

१. आज लिक्खेगें हम, स्वात्म ज्ञाने कथा।
भेदज्ञान में डुबा कर कलम दीजिये ।।
जन्दगी में ....

२. स्वात्मा से करो, आज सच्ची वफा।
तत्व निर्णय करो, समता रस पीजिये ।।
जन्दगी में ....

३. तोड़ो पुण्य पाप की, सारी बेड़ी व्यथा।
गुरु तारण की, वाणी को,लख लीजिये ।।
जन्दगी में ....

४. आयु बीते,रुके नही, एक पल को भी।
अपनी मूर्च्छा को दस्तक जरा दीजिये ।।
जन्दगी में ....

५. रहे वैराग्य वर्धन में, मन की दशा।
धर्म लक्षण जो दस हैं, ग्रहण कीजिये ।।
जन्दगी में ....

(२१८)

गजल

तर्ज:-(याद आई-याद आई, फिर तुम्हारी......)

शामआई -शाम आई, जिन्दगी की शाम आई।
ऐसा लगता है मुझे तो ऽ -२, पा जाऊँ जग से रिहाई ।।
शामआई -शाम आई...

१. तीनों पन यूँ ही गये, और हो गया यह वृध्द तन।
मोह-माया-क्रोध-तृष्णा, के सघन छाये हैं घन ।।
बन विरागी संत वाणी, कह रही तेरी भलाई।
कह रही तेरी भलाई..........शामआई-२...

२. हो गया विश्वास निज का, जिन वचन ही सत्य हैं।
पंच परमेष्ठीस्वयं का, स्वानुभव ही दृश्य है ।।
कर पदार्पण स्वात्म में, निज आत्मा निज में समाई ।।
आत्मा निज में समाई.........शामआई-२...

३. अब न बीते एक पल, भेदज्ञान-तत्व निर्णय के बिन।
हो गया स्वाध्याय मेरा, बन गया स्वानुभव में जिन ।।
है क्षमा चाहूँ क्षमा, वैराग्य वृत्ति रास आई।
वैराग्य वृत्ति रास आई..........शामआई-२...

अहंकार का लाक्षागृह तोड़ो, तो ब्रह्म स्वरूप दिखेगा।
इसी भाव से प्रेरित मन, मार्दव धर्म सीखेगा।।

(२१९)

भारत वसुन्धरा पर, जब आत्म ज्ञानी प्रगटे।
धरती से आसमाँ तक, शुध्दात्म ज्ञान लहरे ।।

१. यह आत्म तत्व अदभुत, अनुपम विलक्षण पाया।
हर जीव राशि में यह, परमात्मा समाया ।।
इस सत्य ध्रौव्य तत्व को, केवल ज्ञानी कह सके रे।
धरती से आसमाँ तक.........भारत वसुन्धरा....

२. श्री आदिनाथ प्रभु से, महावीर स्वामी तक ने।
चौबीसी नन्तानन्त ने, अरिहंत प्रभु अनन्ते ।।
हर ज्ञानी इसके बल से, सिध्द पद को गह सके रे।
धरती से आसमाँ तक.........भारत वसुन्धरा....

३. मैं हूँ अखण्ड-अतुलित, अनुपम सुखों की राशि।
मुझमें अनन्त चतुष्टय, शिव शान्ति नगरी वासी ।।
भेदज्ञान-तत्व निर्णय, सम्यक्त्व का है बल रे।
धरती से आसमाँ तक.........भारत वसुन्धरा....

४. तारण तरण प्रभु के, भारत चरण पखारे।
(अध्यात्म योगियों के, भारत चरण पखारे।)
ओमकार ध्वनि को सुनकर, पावन हुई धरा रे ।।
शंखनाद एक स्वर से, अनन्त ज्ञानियों का है रे।
धरती से आसमाँ तक.........भारत वसुन्धरा....

(२२०)

बेतवा

सब कोई हरषे,बेतवा तरसे, मैं कब पाऊँगी तारण को।
मेरे परम प्रिय तारण को।.......सब कोई हरषे.....

१. बर्षों की साध ललक बन आई,
बेतवा ने तारण को बालक सा पाई।
गोदी में पाये,भव हरणा को,
मेरे परम प्रिय तारण को॥ सब कोई हरषे..........

२. परमानन्द उपकार तुम्हारा,
तन मन से बालक नम्र हमारा।
तीन बार गोद खिलाने को,
मेरे परम प्रिय तारण को॥ सब कोई हरषे..........

३. अति आनन्द हृदय मेरे उपजा,
परमानन्द में तारण डूबा।
देती आशीष तरण बन जाने को,
मेरे परम प्रिय तारण को॥ सब कोई हरषे..........

४. कल-कल स्वर में कहती है बेतवा,
तीनो टापू हैं स्वयमेवा।
आत्म ध्यान तर जाने को,
मेरे परम प्रिय तारण को॥
पा लिया मैंने तारण को,
मेरे परम प्रिय तारण को॥ सब कोई हरषे..........

(२२१)

अब तो निज में जा ऽ न, तू यहाँ का मेहमान॥

१. बचपन में तू जान न पाया, खेल कूद में ही सुख पाया।
यौवन में तू जाने कैसे, सुत-तिय-धन में बसता जैसे॥
एक घड़ी तो मा ऽ न, तू यहाँ का मेहमान॥
अब तो निज में जा ऽ न......

२. आया बुढ़ापा टिकट मिला है, जिन्दगी का अन्त सिलाहै
बीत गये हैं, जन्म अनन्ते, मकड़ी से ताने ही बुनते॥
हर घड़ी यह जा ऽ न, तू यहाँ का मेहमान॥
अब तो निज में जा ऽ न......

३. एक बार तो निज में आओ, गुरु वाणी पर श्रध्दा लाओ।
शेष समय को शीघ्र सुधारो, भेदज्ञान से समकित धारो॥
होवेगा कल्या ऽ ण, तू यहाँ का मेहमान॥
अब तो निज में जा ऽ न, तू यहाँ का मेहमान।

(२२२)

शुध्दातम के भक्त ज्ञानी जन, ज्ञान में झूलें।
ज्ञानी जन ज्ञान में झूलें॥

सर्वत्र दीखे आत्म की झांकी, हर आतम है प्रभु सी बांकी।
जान न पाये अज्ञानी, ज्ञानीजन ज्ञान में झूलें-२॥
शुध्दातम के भक्त...........

भेदज्ञान में सिध्द रूप सम, तत्व निर्णय से शान्ति भूप हम।
सत्ता सम्यक पानी, ज्ञानीजन ज्ञान में झूलें-२॥
शुध्दातम के भक्त...........

त्रय रत्नों की दिन-दिन वृध्दि, महाव्रतों से आतम सिध्दी।
स्वानुभूति में आनी, ज्ञानीजन ज्ञान में झूलें-२ ।।
शुध्दातम के भक्त...........

गुरु वाणी से नाता जोड़ा, तारण पथ जीवन रथ मोड़ा।
मोक्ष महल हमें जानी, ज्ञानीजन ज्ञान में झूलें-२ ।।
शुध्दातम के भक्त...........

(२२३)

गज़ल

गुरु वाणी मिली मुझको ऽ, मेरा दिल हरषाया है।
भव सागर में केवल ऽ, एक नाव नज़र आया है।

१. यूँ तो खड़े जहाज़, पर-सब पत्थर के हैं।
खुद डूबेंगे एक दिन ऽ, और सब को डुबाया है।

२. भेदज्ञान दिया गुरु ने ऽ, तत्व निर्णय पर चलना।
खुद मुक्ति के मार्ग चले, और सब को बताया है।

३. सब पतित बनें पावन ऽ, पायें आनन्द-परमानन्द।
ये राज़ गुरु तुमने, दिल खोल लुटाया है।

४. तेरी श्रध्दा नैया है ऽ, तू तेरा खिवैया है।
तेरा ज्ञान बना पतवार, तुझे पार लगाया है।

५. तू आतम शुध्दातम ऽ, अज्ञान से है मातम।
तू बन जाये परमातम, यह मंत्र बताया है।

गुरु वाणी मिली मुझको ऽ, मेरा दिल हरषाया है।

(२२४)

'अर्क भूले नर्क' आतम क्यों सहो।-२

१. ध्यान तेरा क्यों विमुख है, द्रव्य दृष्टि छोड़ कर।
आत्मा के रूप-गुण, आनन्द सुख मय तुम लहो ।।
अर्क भूले नर्क आतम...

२. जा रही है ज़िन्दगी और तुम तमाशा देखते।
सत् देव और सत् धर्म, तुमको फिर मिलेगा कब कहो।।
अर्क भूले नर्क आतम...

३. मोह की अंधियारी में तुम, हो मगन क्यों भूलते।
जाग जाने पर सबेरा, जब कहो तब ही कहो ।।
अर्क भूले नर्क आतम...

४. धन्य गुरु तारण तरण, समझा रहे इस बात को।
अब न देरी एक पल की, हम करें न तुम करो ।।
अर्क भूले नर्क आतम...

५. मेरी आतम सिध्द रूपी, ज्ञान गुण ज्ञायक सदा।
करलो श्रध्दा और अनुभव, में सदा आतम रहो ।।
अर्क भूले नर्क आतम...

क्रोध में शोले बरसते हैं, ईर्षा में धुन्ध सुलगती है।
माया का चक्कर छलछिद्र भरा, लोभी की लार टपकती है ।।
समता का सागर शान्ति भरा, भेदज्ञान में ज्ञान का अमृत है।
सद्गुरु के वचन प्रमाण भरे, निज आतम ज्ञान दुख हर्ता है ।।

(२२५)

जल्दी-जल्दी करो मेरे मन ऽ, आयु का भरोसा नहीं सुन।

१. काल अनादि से किया नहीं तुमने,
इस भव को भी व्यर्थ किया तुमने
शेष समय सार्थक चुन ऽ, आयु का भरोसा नहीं सुन ।।
जल्दी-जल्दी करो मेरे मन...

२. पुण्य उदय नरभव जिनवाणी,
श्री संघ,सत्संग सुखदानी ।
गुरु वाणी को गुन ऽ, आयु का भरोसा नहीं सुन ।।
जल्दी-जल्दी करो मेरे मन...

३. भेद ज्ञान-तत्व निर्णय हर पल,
आत्म ज्ञान और ध्यान में तत्पर ।
इनकी रहे बस धुन ऽ, आयु का भरोसा नहीं सुन ।।
जल्दी-जल्दी करो मेरे मन...

४. गुरु मंत्र,नमोकार सतत जप,
तन से ममत निवार, तपो तप ।
मोह का त्यागो घुन ऽ, आयु का भरोसा नहीं सुन ।।
जल्दी-जल्दी करो मेरे मन...

५. जिसका जैसा जो कुछ होना,
तू न किसी का कोई,तेरा नहीं होना ।
दृढ़ता की बाजे रुन-झुन ऽ, आयु का भरोसा नहीं सुन।।
जल्दी-जल्दी करो मेरे मन...

६. सूर्य-चन्द्र की गति चाहे बदले,
तेरी श्रध्दा(दृढ़ता)कभी न बदले ।
तू है शक्ति का पुन्ज ऽ, आयु का भरोसा नहीं सुन ।।

जल्दी-जल्दी करो मेरे मन...

७. यह भव सारे भव को नश दे,
मिथ्या-माया-मोह को तज दे ।
करना है उपक्रम ऽ, आयु का भरोसा नहीं सुन ।।
जल्दी-जल्दी करो मेरे मन...

!!!!!

(२२६) आनन्द स्त्रोत बह रहा-२, जो मेरे पास है ।
करती हूँ उसका पान, मैं जो मेरा खास है ।।

१. सुई अर्क-अर्क विन्द में-२, मेरा निवास है ।
मैं हूँ स्वयं स्वयंभू, जो मेरा नाथ है ।।
आनन्द स्रोत बह रहा...

२. त्रिकाली ध्रुव की सत्ता-२, ही मेरा गात है ।
जय-जय-जयम-जयम का, उठता निनाद है ।।
आनन्द स्रोत बह रहा...

३. मैं हूँ अहं ब्रह्माऽस्मि-२, का शंखनाद है ।
मैं शुध्द-बुध्द-सोऽहं, का ब्रह्मवाद है ।
आनन्द स्रोत बह रहा...

४. मेरी जिनय जिनेली में-२, जिन देव साथ है ।
मैं ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता, मेरा ज्ञायक स्वाभाव है ।।
आनन्द स्रोत बह रहा...

५. तारण गुरु की वाणी-२, का वरद हस्त प्राप्त है ।
श्री संघ हैं सहकारी, जिनवाणी मात है ।।
आनन्द स्रोत बह रहा...

(२२७)

अंताक्षरी (१)

:: शुरू करो अंताक्षरी, लेकर प्रभु का नाम।
नाम रूप को भूल जा, आतम एक समान ।।०१।।

न. नश्वर है यह जगत सब, नश्वर पुद्गल रूप ।
शाश्वत है एक आत्मा, यही ज्ञान का रुप ।।०२।।

प. पवन झकोरा दे गई, ले गई मेघ उड़ाय ।
आयु-काया विनश गयी, आज यहाँ कल जाय ।।०३।।

य. यही सुमरण यही भजन है, यही चिंतन यही धाम।
'पर से नाता तोड़ दे', 'वस्तु रूप सौं काम' ।।०४।।

म. ममता-माया-मोह तज, इनकी बांधी डोर ।
यूँ फिरता है जगत में, कहत न आवे छोर ।।०५।।

र. रंक-राव-पशु-देव बन, फिरो अनन्ती बार ।
दुर्लभ सम्यक न मिल्यो, कियो न नेक विचार ।।०६।।

र. रत्न-राज-गज-बाज धन, हैं दुपहर की धूप ।
जब तक पल्ले पुण्य है, पुण्य गये बेरुप ।।०७।।

प. पाया दुर्लभ मनुज तन, पाया दुर्लभ ज्ञान ।
बारह भावन चिंतवन, सतगुरु सीख सुजान ।।०८।।

न. नरभव में श्री जिन वचन, फिर कब हो यह योग।
चेत-चेत चेतन अरे, धन्य हुआ संयोग ।।०९।।

ग. गई बहुत थोड़ी रही, रही की चिन्ता राख ।
एक समय के ध्यान से, बन जाये शिव साख ।।१०।।

ख. खमण मास बहु कीजिये, खोजो ग्रन्थ पुराण ।

आतम रूप न ज़ानिये, कैसे हो कल्याण ।।११।।

ण. णमोकार को जान ले, हिय उपजेगा ज्ञान ।
ध्याले ध्याता ओम को, बन जा रे भगवान ।।१२।।

न. नदी नाव से आ मिले, अब विछड़न की रैन ।
ये तेरे कब कौन थे, तू इनका नहीं होन ।।१३।।

न. नहीं टले कर्मन व्यथा, समता भाव सहाई ।
संबर होवें कर्म तब, निर्जर में सुखदाई ।।१४।।

ई. एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध ।
ध्यान करो निज आत्म का, दृढ़ हो संयम साध ।।१५।।

ध. धर्म- धर्म सब कोई कहे, जाने न धर्म का मर्म।
वस्तु रूप ही धर्म है, निश्चय से शिव शर्म ।।१६।।

र्म. मृत सा जीवन ढो रहा, बना फिरे अज्ञान ।
ज्ञान संजीवनी फूंक दे, जागें सोये प्रान ।।१७।।

न. नमन करो जिनराज को, और न दूजा देव ।
मन-वच-तन दृढ़ता धरो, रत्न त्रय लख लेव ।।१८।।

व. बहना-माता-सुत-त्रिया, पाल,विचारे नाता।
ब्रह्मचर्य लघु रूपता, एक देश में आता ।।१९।।

ता. तारण स्वामी के वचन, भव-जल खेवन हार।
'विजय' नमन हृदय धरण, हो जायें भव पार ।।२०।।

एक मात्र इच्छा मेरी, एक कामना।
पाऊँ पद परम इष्ट प्रगटे सिध्द पना ।।

(२२८)

अंताक्षरी (२)

अन्त में अक्षर आय जो, उस पर बोलिये आप।
अंताक्षरी तो वह सुखद, जिसमें निज गुण गाय ॥०१॥

य. यह जग तो है स्वप्न सा, रहना है दिन चार।
ज्ञान बिना चौरासी लख, भव बीते अनन्ते बार ॥०२॥

र. त्रृषभ नाथ से महावीर तक, या चौबीसी अनन्त।
हर आतम-परमात्मा, कही सभी भगवन्त ॥०३॥

न. नन्त चतुष्टय का धनी, करी न अपनी संभाल।
पर को अपना मान कर, भ्रमत फिरा बेहाल ॥०४॥

ल. लखो निजातम शक्ति को, पाओ भेद विज्ञान।
तत्व निर्णय की राह चल, मिले सम्यक दर्श महान ॥०५॥

न. नदी नाव संयोग सब, अब बिछड़न की बार।
रमूँ सदा निज भाव में, सम्यक ज्ञान अपार ॥०६॥

र. रमता जोगी बहता पानी, नही सदा एक ठाँव।
आत्म रमण निज कीजिये, क्या स्थिति क्या गाँव ॥०७॥

व. वह दिन प्रभु कब आयेगा, त्यागूँ सकल जहान।
अष्ट कर्म को नष्ट कर, पाऊँ पद निर्वाण ॥०८॥

ण. णमोकार सा मंत्र नही, परमेष्टि से पद।
परमेष्ठि के पद चलो, भव सिंधु हो गौ पद ॥०९॥

द. दान-दया सब कीजिये, पुण्य होय फल दाय।
धर्म करे पुण्य यौं मिले, गल्ला भूसी लाय ॥१०॥

य. ये मिथ्या की भ्रन्तियाँ, ये संकल्प विभाव।
ये मेरे कोई नही, मैं तो ज्ञायक भाव ॥११॥

व. बसूं सदा अंतर में अपने, शान्त निराकुल भाव में।

'ॐ नम: सिध्दं' को जपकर,
निज स्वाभाव सत्कार में ॥१२॥

में. मैं आतम शुध्दातम हूँ, अक्षय सुख का भण्ड़ारी।
अजर-अमर-अविनाशी चेतन,
मोक्ष महल का अधिकारी॥१३॥

र. रिध्दि-सिध्दि या सम्पदा, उदय जन्य संयोग।
मलिन भाव अज्ञान है, आकिंचन सुख भोग ॥१४॥

ग. गर्व तजो आठों सदा, गये सभी गर्व बान।
अगम-अगोचर आत्मा, कर अमृत रस पान ॥१५॥

न. नमन करुँ जिनराज को, गुरु पद पंकज पाऊँ।
देव-गुरु-धर्म आत्मा, जिनवर कथन सुनाऊँ ॥१६॥

ऊँ ॐकार में विश्व है, ॐकार परमेश।
ॐकार मय आत्मा, शुध्द दृष्टि लख लेव ॥१७॥

व. वस्तु स्वभाव धर्म जानलो, यही मुक्ति का पंथ।
अब तक सत्य न मान कर, भोगे दु:ख अनन्त ॥१८॥

नन्त. नन्ता नन्त प्रदेसी है, ज्ञानानन्द चैतन्य।
मैं परिपूर्ण विज्ञान घन, अन्तर आत्मा धन्य ॥१९॥

न्य. न्यान विन्यानी दिव्य प्रकाशी, चेतन परमानन्द विलासी।
अक्षय सुख का पूर्ण खजाना,
निरावरण ज्योति का वासी ॥२०॥

सी. सिध्द स्वरुपी अरस अरूपी, निर्विकल्प चैतन्य मूर्ति।
स्व आश्रय का धनी आत्मा,
स्वानुभूति की लगी सुरति ॥२१॥

त. तुम तो शुध्द गुणों की ढ़ेरी, प्रज्ञामयी ध्रुव आतम मेरी।
गुरुवर दिया ज्ञान का दीपक,

जिससे बजी ज्ञान की भेरी ।।२२।।

री. रीपु वर्ग से करी मिताई, जन्म अनन्ते धरते हैं।
कुगुरु-कुदेव-उपल नावड़िया, डूवें और डुबाते हैं।।२३।।

है. है वैराग्य ज्ञान की धारा, चैतन्य वाटिका न्यारी।
अक्षय सुख भंण्डारी आतम,
शुध्दातम है मेरी प्यारी ।।२४।।

र. राग करुँ या द्वेष करुँ, मैं किससे और क्यों ।
सब आतम परमात्मा, मैं भरमाऊँ क्यों ।।२५।।

य. यह जग तो क्षणभंगुर है, नश्वर हैं सब भोग।
देह अपावन है सदा, बसें छियान्नवे हजार रोग ।।२६।।

ग. गुरु करो तुम जान कर, पानी पीजे छानकर।
सदगुरु तारण वाणी को, उर धारो श्रध्दान कर ।।२७।।

र. रत्नत्रय की महिमा निराली,
पिलाती आनन्द की प्याली।
ममल स्वभावी आतम की,
स्वानुभूति में छलके लाली ।।२८।।

ल. लखी वीतरागी मुद्रा तेरी,
अनुभूति में पाई है आतम मेरी।
तत्वनिर्णय से हर पल संभलता रहे,
भेदज्ञान मे आतम रहे ।।२९।।

हे. हे आतम विश्राम लो, जग से लगी थकान।
अन्ताक्षरी के खेल में, ज्ञान गहो बुध्दिमान ।।३०।।

(दोनो पार्टी):- खतम न हो अन्ताक्षरी, ज्ञान में ऐसी शक्ति।
तजो सभी परभाव को, करो आत्म की भक्ति ।।

(२२९) धर्म पहाड़ा (दूनियाँ)

'दो'

दो एकम दो, दो दूनी चार, गुरु तारण की जय जयकार।
दो तिया छः, दो चौके आठ, सत्य अहिंसा का पढ़ना पाठ।
दो पंजे दस, दोई छिंग बारा, आतम तीन लोक से न्यारा।
दो सत्ते चौदह, दो अट्ठे सोला, जीव नित्य है नश्वर चोला।
दो नम अठारा, दोई धम बीस, बन्दौं तीर्थंकर चौबीस।

'तीन'

तीन एकम तीन, तीन दूनी छह, निज आतम की जय जय कह।
तीन तिरका नो, तीन चौके बारा, तारण पंथ मुक्ति का द्वारा।
तीन पांचे पंद्रह, तीन छिंग अठारा, आत्म ज्ञान भव पार उतारा।
तीन सत्ते इक्कीस, तीन अट्ठे चौबीस, हर आतम ही है जगदीश।
तीन नम सत्ताईस, तीन धम तीस, पंच परमेष्ठी पद में शीश।

'चार'

चार एकम चार,चार दूनी आठ, करना नष्ट,कर्म हैं आठ ।।
चार तिया बारह,चार चौके सोलह, मैं आत्मा हूँ,ज्ञानी बोला ।।
चार पंजे बीस,चार छिंग चौबीस, हर आत्मा है,अपना ईश ।।
चार सत्ते अट्ठाईस,चार अट्ठे बत्तीस, तारण पंथ मोक्ष का दीप ।।
चार नम छत्तीस, चार धम चालीस, करो भलाई,लो आशीष ।।

'पांच'

पांच एकम पांच,पांच दूनी दस, भेद विज्ञान करो नित बस ।।
पांच तिया पंद्रह,पांच चौके बीस, बैर मिटाओ, करना प्रीत ।।
पचम पच्चीस,पांच छक्के तीस, तारण पंथ है मुक्ति की रीत ।।
पांच सत्ते पैंतीस, पांच अट्ठे चालीस, विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस ।।
पांच नम पैतालीस, पांच धम पचास, जिन वच का हो हृदय में बास ।।

'छह'

छह एकम छह, छह दूनी बारा, जैन धर्म पाँऊ,बारम्बारा ।
छह तिया अठारा, छह चौके चौबीस, तीर्थंकर होते चौबीस ।
छह पंजे तीस, छह छिंग छत्तीस, आचार्यों के गुण छत्तीस ।
छह सत्ते व्यालीस, छहअट्ठे अड़तालीस, भक्ताम्मर के पद अड़तालीस ।
छह नम चउअन, छह धम साठ, आत्मा के गुण हैं बड़े विराट ।

'सात'

सात एकम सात, सात दूनी चौदह, अध्यात्म वाणी में,ग्रंथ हैं चौदह ।
सात तिया इक्कीस, सात चौके अट्ठाईस, साधु जी पालें मूलगुण अट्ठाईस।
सात पंजे पैंतीस, सात छिंग व्यालीस, मैं ही भगवन मैं मेरा ईश ।
सात सतैयाँ उनन्चास, सातु आठु छप्पन, मिटे ना मर्यादा रहे बड़प्पन ।
सात नम त्रेसठ, सात धम सत्तर, गुण पूजा में गुण हैं पचहत्तर ।

'आठ'

आठ एकम आठ, आठ दूनी सोलह, ज्ञानी बालक ने क्या बोला ।
आठ तिया चौबीस, आठ चौके बत्तीस, पुद्गल के गुण हैं बस बीस ।
आठ पंजे चालीस, आठ छिंग अड़तालीस, अरिहंतों के गुण हैं छियालीस।
आठ सातु छप्पन, आठ अठईयाँ चौंसठ, धारो विनम्रता छोड़ो हट ।
आठ नम बहत्तर, आठ धम अस्सी, मिथ्या भावों की काटो रस्सी ।

'नौ'

नौ एकम नौ, नौ दूनी अठारा, जैन धरम है सबसे प्यारा ।
नौ तिया सत्ताईस, नौ चौके छत्तीस, टालो सामायिक के दोष बत्तीस ।
नौ पंजे पैंतालीस, नौ छिंग चौवन, कभी न किसी से करना अनबन ।
नौ सत्ते त्रेसठ, नौ आठ बहत्तर, ज्ञान की नौका से भव को तर ।
नौ नम इक्यासी, नौ धम नब्बे, जय तारण तरण करो तुम सबसे ।

.'दस'

दस एकम दस, दस दूनी बीस, अपना आतम अपना ईश ।
दस तिया तीस, दस चौके चालीस, मात पिता को नबाओ शीश ।
दस पंजे पचास, दस छिंग साठ, घाति अघाति नाश करो आठ ।
दस सत्ते सत्तर, दस अट्ठे अस्सी, देख तेरे निज गुण की हस्ती ।
दस नम नब्बे, दस धम सौ, निज शुध्दातम हृदय वसो ।

(२३०)

पुनः दर्शन,पुनः दर्शन, निजातम राम का होवे ।
मिली आनन्द की बगिया, उसी में रात दिन खोवे ।।

१. यही थे जीवन के वे क्षण, नहीं कोई शानी है उनकी ।
सहज आनन्द का झूला, उसी में मस्त हो सोवे ।।
पुनः दर्शन,पुनः दर्शन...

२. सुरति का बाँध कर सेतु, मनन-चितंन में जो डूबे ।
मिली जिनराज की वाणी, निरंतर जन्म संजोवे ।।
पुनः दर्शन,पुनः दर्शन...

३. सहज शान्ति धरातल पर, तपस्या त्याग मय होवे ।
बनाया लक्ष्य का बिन्दु, जो मुक्ति शीघ्र ही देवे ।।
पुनः दर्शन,पुनः दर्शन...

विजय श्री मेरे हाथो में, कभी न मेरी हार हैं ।
मैं सिध्दोहं, मैं परमातम, गुरुवाणी का सार हैं ।।

(२३१)

मैं द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव-भव से हूँ परे ऽ।
नित्य ज्ञानानन्द का, ज्ञेय हूँ अरे-२ ॥

१. पाया है सहजता की समाधि का शुध्द स्रोत।
अविछिन्न धारा से हुई मैं ओत-प्रोत ॥
आत्म अनुभूति है-२, शब्दों से परे।
नित्य ब्रह्मानन्द का, ज्ञेय हूँ अरे ॥
मैं द्रव्य-क्षेत्र-काल...

२. गुरु तार की सुवाणी, जिनवाणी मेरी मीत।
आस्था की दृढ़ता से, आत्मा की प्रीत ॥
आत्म ज्ञान-ध्यान ले-२, भव सिंधु को तरे।
नित्य आत्मानन्द का, ज्ञेय हूँ अरे ॥
मैं द्रव्य-क्षेत्र-काल...

३. शान्ति तल की शीतलता,शिव का है प्रतीक।
स्वात्म धाम पाने की, एक मात्र रीत ॥
स्वानुभूति सामर्थ्य-२, कर्मों को हरे।
नित्य शान्तानन्द का, ज्ञेय हूँ अरे ॥
मैं द्रव्य-क्षेत्र-काल...

शाकाहारी-शुध्द आहारी, सदाचारी-धर्म धारी। आत्म ज्ञानी पंड़ित आचारी, आत्म ध्यानी मोक्ष अधिकारी ॥

(२३२)

मोहे लागी रे निजातम प्रीत, और कोई क्या जाने।
क्या जाने,क्या जाने, दुनियाँ वाले क्या जाने ॥
मोहे लागी निजातम प्रीत, और कोई क्या जाने।

१. जबसे जाना तबसे माना-२,
आतम है जगदीश और कोई क्या जाने।

२. सद्गुरु तारण पंथ बताया-२,
मिला भेदज्ञान का दीप, और कोई क्या जाने।

३. समता-शान्ति अनेकान्त का-२,
तत्व निर्णय है सीप, और कोई क्या जाने।

४. हर आतम में भगवन पाया-२,
चलो महावीर की रीत, और कोई क्या जाने।

५. ॐकार ध्वनि 'ज्ञान मात्र हूँ'-२,
जिन आगम प्रणीत, और कोई क्या जाने।

६. सरल-सुबोध समझ गुरुवाणी -२,
श्री संघ तेरे मीत, और कोई क्या जाने।

७. आतम श्रध्दा ज्ञान ध्यान से-२,
टूटे भव की भीत, और कोई क्या जाने।

८. चिदानन्द का मौन चिन्तवन-२,
'विजय'यही तुम्हारी जीत, और कोई क्या जाने।

९. आनन्द का सागर लहराया-२,
निकले स्वतः स्व गीत, और कोई क्या जाने।
मोहे लागी रे निजातम प्रीत, और कोई क्या जाने।

(२३३)

मृत्यु महोत्सव भारी, मनाओ परिजन सारे।
मिटाओ दुनियांदारी, तुम्हारा यही कर्तव्य है ॥

१. कहने सुनने की सोचना नहीं है,
मृत तन से नाता तोड़ना यहीं है ॥
आत्मा अमर अविकारी, नई गति धारी,
जहाँ के बांधे कर्म अब हैं ॥ मृत्यु महोत्सव भारी.....

२. मोह ममता को छोड़ना सही है,
ज्ञानी का उदबोध यही है ॥
अपनी विचारो पारी, करो तैयारी,
तुम्हारा यही कर्तव्य है। मृत्यु महोत्सव भारी.....

३. सब पर सम भाव, करुणा बरसे,
अपनी आत्मा का लक्ष्य अमर ले ॥
करदो विदा मुझे मन से, टूटेगा राग तन से,
तुम्हारा यही कर्तव्य है। मृत्यु महोत्सव भारी.....

४. सब से उत्तम क्षमा हमारी,
सब जीवों पर क्षमा है भारी ॥
माता जिनवाणी, करो क्षमा मुझको,
कि तुमसे विनती करबध्द है ॥ मृत्यु महोत्सव भारी....

५. श्री संघ से क्षमा औ प्रणामी,
ब्रह्मानन्द और सब हैं नामी ॥
समझाई गुरु वाणी, बनाया स्व का स्वामी,
सभी को सदा उपलब्ध है ॥ मृत्यु महोत्सव भारी.....

(२३४)

'विदाई'

हमने ले ली है सबसे विदाई, जय तारण तरण मेरे भाई।

भूलें स्वाभाविक होती ही रहतीं. मैं भी भूलों के घेरे में बहती।
चाची-बहना-बहू-बेटी-भाभी, सारी भूलें, क्षमा करना भाई॥
हमने ले ली है..............जय तारण तरण सबसे भाई ...
उत्तम दान क्षमा मुझको देना, उत्तम भाव क्षमा मेरे लेना।
सभी जीव क्षमा करना भाई, मेरी बिनती सुनो मेरे भाई ॥
हमने ले ली है..............जय तारण तरण सबसे भाई ...
पंच परमेष्टी से है क्षमा नित, जिनवाणी क्षमा कर माँ हितमित।
निज आतम क्षमा है सुख दाई। जय तारण तरण सबसे भाई ॥
हमने ले ली है..............जय तारण तरण सबसे भाई ...
जबतक मोक्ष न जाऊँ, जिन धर्म ही पाऊँ ।
जिनवाणी, निजातम ही ध्याऊँ ।
पाऊँ रत्नत्रय जन्म, धन्य हो जाई, जय तारण तरण मेरे भाई ॥
हमने ले ली है..............जय तारण तरण सबसे भाई ...
मोह त्यागो करो आत्म चिंतन, आना जाना तो पर्यायी है क्रम।
कोई रोना नही और, रानी-आलोक भाई ॥
जय तारण तरण सबसे भाई ...हमने ले ली है...
मृत्यु महोत्सव का होवे शुभारंभ,
साक्षी भाव से ज्ञायक का दर्शन।
मैंने सबसे बहुत स्नेह पाई, जय तारण तरण सबसे भाई ॥
हमने ले ली है..............जय तारण तरण सबसे भाई ...

(२३५)

तर्ज:-(एहसान तेरा होगा हमपर,.........)

मेहमानी मेरी हो गई यहाँ पर,
जो सच है उसको कहने दो।
मुझे ज्ञातव्यता अब हो गई है,
मुझे ज्ञान का ज्ञाता रहने दो।
मेहमानी मेरी हो...........

१. मात-पिता-सुत-बन्धु-सखा-तिय,
सबसे क्षमा हम लेते हैं।
बिछुड़ने का हमारे गम न करो,
इस जग की रीति को चलने दो।
मेहमानी मेरी हो.........

२. तुम भी भूलो भूलें हमारी,
जानी और अनजानी को।
हे आत्म चलो अब स्थिर हो,
निज शुध्दातम में रहने दो।
मेहमानी मेरी हो........

ज्ञान के आलोक में देखो जरा उठकर,
आत्म ज्ञान का रवि आ गया है ऊपर।
नही तो फिर पछताओगे।
काल की नदिया में, बह जायेगा यह सुअवसर।

(२३६)

दरशन दे देना, गुरु मुझे दर्शन दे देना।
आँखें बंद करुँ या खोलूँ, मुझको दर्शन दे देना ॥
गुरु मुझे दर्शन दे देना ॥

१. अब तक जो अपराध हुए हैं, क्षमा करो गुरु तारण।
तुमतो परम दयालु गुरुवर, मेरे हो भव तारण ॥
तेरा मेरा एक रूप मैं देख सकूँ, वह, दर्पण दे देना।
गुरु वह दर्पण दे देना, आँखें बंद करुँ या ....॥

२. जिनवर कथित धर्म भव तारण, तुमने ही दरसाया।
तारण पंथ ही मुक्ति का मारग, सब, जड़वाद हटाया ॥
सम्यक दर्शन प्रगट करुँ मैं, वह बल दे देना।
गुरु मुझे वह बल दे देना, आँखें बंद करुँ या ....॥

३. गुरु वाणी से ज्ञान मिला है, स्व का पाया संबल।
गुरु तुम परम हितैषी, देते, आशीषों का अम्बर ॥
तारण पथ पर चलूँ सदा मैं, वह वर दे देना।
गुरु मुझे वह वर दे देना, आँखें बंद करुँ या ....॥

(२३७)

जग से लगे थकान, अरे तो करो भेदविज्ञान।
प्रभु के मुखारविन्द की वाणी, कंठ कमल गुरु तार समानी।
तू तो ज्ञान सिंधु भगवान, अरे तो करो भेद विज्ञान ॥
जग से लगे थकान......

जिन वचनो में शंका न करना, दोष पच्चीस सम्यक्त के हरना।
तब हो ध्रुव पहिचान, अरे तो करो भेद विज्ञान ।।
जग से लगे थकान......

दैनिक जीवन की हर किरिया में, भेद ज्ञान तत्व निर्णय मन में।
रहे सदा विद्यमान, अरे तो करो भेद विज्ञान ।।
जग से लगे थकान......

(२३८)

दर्शन दे देना, निजातम दर्शन दे देना।
आँखें बंद करूँ या खोलूँ, मुझको दर्शन दे देना ।।

१. काल अनन्ते बीत गये पर, तुम से मिल न पाया ।
अब तो मिलन हमारा होगा, शरण तुम्हारी आया ।।
शत-शत नमन हमारे, मेरी विनती सुन लेना ।
निजातम विनती सुन लेना, आँखें बंद करूँ या.....

२. जिनवाणी की श्रध्दा करके, आत्म ज्ञान मन लाया ।
णमोकार के गुण आराधूँ, गुरु तारण बतलाया ।।
भव सागर तर जाऊँ, मुझको बह वल दे देना ।
निजातम वह बल दे देना, आँखें बंद करूँ या.....

३. पर्यायी परिणमन से हट कर, अपना रूप निहारूँ ।
आतम-शुध्दातम-परमातम, को मैं सतत विचारूँ ।।
मैं तो ज्ञायक ज्ञान स्वभावी, चेतन, निज मय कर लेना।
निजातम निज मय कर लेना, आँखे बंद करूँ या.....

(२३९)

जग से लगे थकान, अरे तो करो भेद विज्ञान।

१. गुरु तारण की वाणी पाई, श्री संघ सहकारी भाई।
मिला जिनवाणी का ज्ञान।
अरे तो, करो....

२. यह वाणी परमामृत देती, जन्म-जरा-मृत्यु भव-भय हरती।
श्रध्दा से करो पान।
अरे तो, करो....

३. तारण पंथ है मुक्ति का मारग, तत्व निर्णय बना इसका प्रेरक।
मिले सम्यक दर्श सोपान।
अरे तो, करो....

४. यही जन्म हो शायद आखिरी, एक-एक पल का मूल्य है भारी।
करलो, निज आतम का ध्यान।
अरे तो, करो....

मैंने सीढ़ियां लगा दी हैं, शुध्दात्मा तेरी याद की।
पलक पाँवडे बिछादिये हैं, यही है मेरी वन्दगी ।।
....
मुझे संसार से भागना नही, जागना है ।
क्योंकि-जो जागे सो पाये ।।

(२४०)

जग से लगे थकान, अरे तो करो भेद विज्ञान।

१. त्रय शल्यों को मार खदेड़ो, समता-शान्ति से अब रहलो।
छूटें बंध निदान, अरे तो करो भेद विज्ञान॥
जग से लगे थकान...

२. केवलज्ञानी की वचन वर्गणा, सबके तन में है शुध्दात्मा।
करलो अब पहिचान, अरे तो करो भेद विज्ञान॥
जग से लगे थकान...

३. किये संसरण हुए आक्रमण, सुख-दुःख और आश्रव के घर्षण।
झुलसे मोह-माया में प्राण, अरे तो करो भेद विज्ञान॥
जग से लगे थकान...

४. मेरा पर से कैसा नाता, इस चिंतन से मिटे असाता।
मैं तो स्वयं सिध्द भगवान, अरे तो करो भेद विज्ञान॥
जग से लगे थकान...

(२४१)

जग से लगे थकान,अरे तो करो भेद विज्ञान।

१. ऊब गया हो मन भोगों से, तन-धन-जन और भव-रोगों से।
मिला न कोई निदान,अरे तो करो भेद विज्ञान॥
जगसे लगे थकान......

२. जीवन है मकड़ी के जाले, भाव विभाव हैं गहरे नाले।
किया शुभाशुभ पान,अरे तो करो भेद विज्ञान॥
जग से लगे थकान......

३. जबसे जाना तबसे माना, आतम ने अपना हित ठाना।

मिला गुरुवाणी से ज्ञान,अरे तो करो भेद विज्ञान॥
जग से लगे थकान......

४. भेदज्ञान और तत्व निर्णय से, श्रध्दा-भक्ति-विनय-ध्यान से।
हुआ सम्यक दर्श महान,अरे नित करो भेद विज्ञान॥
जग से लगे थकान......

(२४२)

विसरे न मन से विसारे, निज शुध्दातम हमारे।

१. करण लब्धि जब चलकर आई, सम्यक दर्शन को ले आई।
आनन्द अतीन्द्रिय धारे, निज शुध्दातम हमारे॥
विसरे न मन से.......

२. पावन घडी थी निर्मल क्षण थे, निराकार में हम खो गये थे।
शब्दातीत कह हारे, निज शुध्दातम हमारे॥
विसरे न मन से.......

३. पुनः-पुनः दर्शन करो आत्मा, यही पुरषारथ करो स्वातमा।
अनन्त शक्ति-गुण धारे, निज शुध्दातम हमारे॥
विसरे न मन से.......

(२४३)

अहो परमानन्द विलासी, हे आतम निज गुण राशि।

१. तुम शुध्द-वुध्द-अविरुध्द एक-२, पर परिणति से अप्रभावी।
हे आतम निज गुण राशि, अहो परमानन्द ....

२. चैतन्य-चिदानन्द-चित्प्रकाश-२, शुध्दोऽहं स्वानुभव वासी।
हे आतम निज गुण राशि, अहो परमानन्द ....

३. तुम-ज्ञायक-ज्ञाता-ज्ञान सूर्य-२, तुम मोक्ष पुरी के वासी।
हे आतम निज गुण राशि, अहो परमानन्द ....

४. मैं निरावरण चैतन्य ज्योति-२, बाकी है सब जड़ राशि।
हे आतम निज गुण राशि, अहो परमानन्द ....

५. हे चित् स्वभाव भावाय नम:-२, एकाकी-एकत्व निवासी।
हे आतम निज गुण राशि, अहो परमानन्द ....

(२४४)

चलो मन करो वहाँ विश्राम,
जहाँ पर शान्ति निराकुल धाम।
जहाँ पर शान्ति निराकुल धाम,
जहाँ पर शान्ति निराकुल धाम॥
चलो मन करो वहाँ विश्राम......

१. जग की करली बहुत गुलामी, दौड़ धूप और हापा धामी।
मन से बन्द करो सब काम, जहाँ पर शान्ति निराकुल धाम॥
चलो मन करो वहाँ विश्राम......

२. शान्ति मौन एकान्त सम्हालो, ज्ञेय विचारो की जड़ थामो।
पाये मन सच्चा आराम, जहाँ पर शान्ति निराकुल धाम॥
चलो मन करो वहाँ विश्राम......

३. मन मस्तिष्क में गजब की शक्ति, इससे करलो निज की भक्ति।
फिर देखो अंजाम, जहाँ पर शान्ति निराकुल धाम॥
चलो मन करो वहाँ विश्राम......

४. भाव-विभाव-विचारों को देखो, ये मेरे नही, ज्ञायक लेखो।
पाओ शून्य सत्ता आयाम, जहाँ पर शान्ति निराकुल धाम॥

(२४५)

करुँ निज शुध्दातम सत्कार, यही है जीवन का आधार।

१. मिला ज्ञान जिन गुरु से हमको, जैनागम कहता प्रभु निज को।
निज आतम सर्वाधार, यही है जीवन का आधार॥
करुँ निज शुध्दातम.......

२. अब न रहा मैं देव-नारकी, न तिर्यंच-मनुष्य गति वासी।
मैं तो पूर्ण शुध्द निराकार, यही है जीवन का आधार॥
करुँ निज शुध्दातम.......

३. निज प्रभुता से बढ़के न कोई, स्वानुभूति में स्वातम खोई।
चिदानन्द चमत्कार, यही है जीवन का आधार॥
करुँ निज शुध्दातम.......

४. शुध्द चिद्रूपोऽहं को देखा, सम्यक दर्शन की शुभ वेला।
आतम, अंतर दृष्टि पसार, यही है जीवन का आधार॥
करुँ निज शुध्दातम.......

(२४६)

जीवन है पानी की बूंद कब मिट जाये रे,
होनी-अनहोनी, कब घट जाये रे। जीवन है...........

१. दिया लिया तेरे साथ रहेगा, बिना दिये क्या जाता।
दीन दुखी की सेवा करले, दानी दाता कहाता॥
पाप-पुण्य का उदय जीवन में कब आ जाये रे।
होनी-अनहोनी कब घट जाये रे,
जीवन है पानी की बूंद.......

२. मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन हैं तीर ।
एक सुने वीधे हृदय, एक मिटावे पीर ।।
मीठी वाणी बोल रे मनवा, सुयश फैलाये रे।
होनी-अनहोनी कब घट जाये रे,
जीवन है पानी की बूंद.......

३. पुण्य कार्य तो बहुत किये हैं धर्म से नाता जोड़ ।
निज आतम के नित चिंतन से सम्यकदर्शन होय ।।
आतम की अनुभूति ही, मोक्ष दिलाये रे ।
होनी-अनहोनी कब घट जाये रे,
जीवन है पानी की बूंद.......

४. गुरु वाणी के वचन सुधारस, जिनवाणी का ज्ञान ।
श्रध्दा भक्ति से यह अमृत, पीना आतम राम ।।
भेदज्ञान तत्व निर्णय एक दिन, भगवान बनाये रे ।
होनी-अनहोनी कब घट जाये रे, जीवन है....

(२४७)

पर्यायों के पार देख ले, तेरा ही ध्रुव धाम है ।
तू ही शाश्वत ध्रुव सत्ता है, चिदानन्द तेरा नाम है ।।

१. तू ही त्रिकाली,पर द्रव्य अभावी, समयात्मक तेरा नाम है
दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है, स्वाश्रय तेरा ठाँव है ।।
पर्यायों के पार.....

२. यह मानुष पर्याय, सुकुल और सहज मिली जिनवाणी।
अब भी पार भये नहि भव से , सुमणि उदधि समानी ।।

महा समर्थ श्री जिनवाणी, तू ही जिन गुण धाम है ।
तू ही शाश्वत ध्रुव सत्ता है, चिदानन्द तेरा नाम है ।।
पर्यायों के पार.....

३. तत्व ज्ञान के रसिक गुणीजन, करते ज्ञान और ध्यान है।
स्व संवेदन आत्म धर्म है, इसका ही बहुमान है ।।
सोऽहं-सिध्दोऽहं-अनुभूति, यही हमारा कल्याण है ।
तू ही शाश्वत ध्रुव सत्ता है, चिदानन्द तेरा नाम है ।।
पर्यायों के पार....

(२४८)

''लोरी''

तर्ज:-(तू तो सो जा बारे वीर.........)

तुम तो जागो महावीर, आतम जागो महावीर।
मोह की निद्रा के झूला झूले, हो रहे काय अधीर ।।
तुम तो जागो ....

१. वर्षाबास का योग बना है, श्री संघ सत्संग ।
मृत्युन्जय है गुरुवाणी रस, यही भवोदधि तीर ।।
तुम तो जागो ....

२. सम्यकदर्शन प्राप्त करन की, आई मंगल बेला ।
ध्यान लगाले चित्प्रकाश का, यही तुम्हारी जीत ।।
तुम तो जागो ....

३. वर्तमान के वर्ध्दमान हो, स्वयं सिध्द भगवान ।
निज की श्रध्दा, दृढ़ पुरुषारथ, प्रक्षालन का नीर ।।
तुम तो जागो ....

(२४९)

"लोरी"

तर्ज:-(हिन्दु न बनेगा न,मुसलमान बनेगा.........)

अरिहंत बनेगा तू ,श्री सिध्द बनेगा।
जिनधर्म का बालक है तू जिनराज बनेगा।।

१. सातों व्यसन को त्याग, मूलाचार धरेगा ।
तत्व निर्णय पर चले, तारण पंथ वरेगा ।।
गुरुवर प्रदत्त ज्ञान से, भेद ज्ञानी बनेगा ।
जिनधर्म का बालक है तू जिनराज बनेगा ।।
अरिहंत बनेगा तू ....

२. अणुवृत को धरेगा, तू महाव्रत को धरेगा ।
सम्यक्त-ज्ञान-दर्शन, चारित्र वरेगा ।।
निज स्वानुभूति दर्श से, वसु कर्म हनेगा ।
जिनधर्म का बालक है तू जिनराज बनेगा ।।
अरिहंत बनेगा तू ....

३. तेरा केवली है स्वपद, परमानन्दी रहेगा ।
अनन्त चतुष्टय का धनी, शाश्वत में रमेगा ।।
तू शुध्द है स्वयं में, सिध्दात्म बनेगा ।
जिनधर्म का बालक है तू जिनराज बनेगा ।।
अरिहंत बनेगा तू ....

हैरान हूँ परेशान हूँ, यह तो हर कोई कहता है।
मैं ज्ञान हूँ गुणखान हूँ, यह कोई-कोई कहता है।।

(२५०)

तर्ज:-(लोरी.........)

तुम तो जागो बारे वीर, तुम तो जागो बारे वीर।
वीर ही बनेगा मेरा, जग में महावीर।।

१. मोह की निद्रा सोये अब तक, काल अनादि खोय।
स्व पर निर्णय करो निजातम, तब भुनसारो होय।।
तुम तो जागो बारे वीर...

२. दश धर्मो का पालन करना, निज आतम को धोय।
स्वयं सिध्द परमात्मा, तुम काहे पर में खोय।।
तुम तो जागो बारे वीर...

३. सम्यक दर्शन-ज्ञान-चरण-तप, चौआराधन ध्याय।
यथाख्यात चारित्र धर, महाव्रति हो जाय।।
तुम तो जागो बारे वीर...

४. केवलज्ञान सुधाकर पाया, अनन्त चतुष्टय लाय।
विन्दस्थान तुम्हारा है बेटा, मुक्ति श्री मिल जाय।।
तुम तो जागो बारे वीर...

किसकी करें फिकर, किसका करें विचार।
जब मेरा कोई नहीं, तो मन राखो शान्ति अपार।।

(२५१)

मैया वीरश्री तेरो लाल, जगत को तारण हारो है ।।

१. जिनवर वाणी सबको सुनाई, भेदज्ञान तत्व निर्णय पाई।
आत्म धर्म को पाल, यही जग मंगलकारो है ।।
मैया वीरश्री तेरो लाल....

२. अणुव्रत धारो, निज स्वभाव से, वीर वाणी के सत्प्रभाव से।
सबका हो कल्याण, श्री गुरु तुम उच्चारो है ।।
मैया वीरश्री तेरो लाल....

३. चौदह ग्रंथों की अदभुत महिमा, उनमें बताई स्व की गरिमा।
स्वानुभूति रस पान, गुरु मोहे सबसे प्यारो है ।।
मैया वीरश्री तेरो लाल....

(२५२)

सत्संग वाली नगरी में चलो रे मना-२

१. इस नगरी में ज्ञान की गंगा,-२ नित अवगाहन पाओ रे मना।
सत्संग वाली नगरी....

२. इस नगरी में ब्रम्हानन्द बिराजें,-२ गुरु वाणी धन पाओ रे मना।
सत्संग वाली नगरी....

३. इस नगरी में बजत नगाड़े,-२ अनहद ध्वनि सुख पाओ रे मना
सत्संग बाली नगरी....

४. इस नगरी में बहनें आईं,-२ संयम मय हो जाओ रे मना।
सत्संग बाली नगरी....

५. इस नगरी में धर्म की वर्षा,-२ सम्यकदर्शन पाओ रे मना।
सत्संग बाली नगरी....

!..!..!..!..!

(२५३)

ज्ञानोदय तीर्थ में स्नान करेंगें,
अभेद रत्नत्रय का हम पान करेंगे ।।

१. निर्विकल्प ज्ञान में ही, निर्विकल्प ध्यान है ।
चैतन्य सत्ता का बोध जीवन दान है ।
आत्मा को निश्चय का दान करेंगे ।
अभेद रत्नत्रय का हम पान करेंगे ।
ज्ञानोदय तीर्थ में ...

अमिट छवि बनी रहे स्वानुभव महान की ।
चिंतन-मनन में, भाव मोक्ष प्राण की ।
सुरति में,जयम्-जय का गान करेंगे ।
अभेद रत्नत्रय का हम पान करेंगे ।
ज्ञानोदय तीर्थ में ...

३. गुरुवर की वाणी में ज्ञानामृत की बरसा ।
मोक्ष पथ प्रदायकम् , सुमंगलम की चर्या ।
समता-समाधि से, हम, प्रयाण करेंगे ।
अभेद रत्नत्रय का हम पान करेंगे ।
ज्ञानोदय तीर्थ में ...

(२५४)

धन्य हुए हम आज, जयतु जैनागम पाकर के।

१. सर्व श्रेष्ठ सर्वोच्च महाना, वस्तु स्वभाव धर्म हम जाना।
जिनेश्वर वचन प्रभाकर से, जयतु जैनागम पाकर के।।

२. नेत्र तीसरा खुला हमारा, ज्ञान ज्योति प्रगटी तम हारा।
भेदज्ञान दिवाकर से, जयतु जैनागम पाकर के ।।

३. गुरुवाणी अनमोल खजाना, मिला विरासत में हम जाना
सिध्द कुल बालक से, जयतु जैनागम पाकर के ।।

४. तू तेरा सम्राट है ज्ञानी, शहंशाह मुक्ति धाम का स्वामी।
मिले छवि सम्यकदर्शन से, जयतु जैनागम पाकर के।।
धन्य हुए हम आज जयतु जैनागम पाकर के ।

!!!!!

(२५५)

सेमरखेड़ी का दरवार, देखा इन नयनो से आज।

१. मामा लक्ष्मण सिंघई के घर में, तारण स्वामी बड़े हुए।
कोई मुश्किल उन्हे रोक न पाई, आतम गुण से मढ़े हुए।।
उनकी तपो भूमि का साज, देखा इन नयनो से आज।
सेमरखेड़ी का दरवार..........

२. लघुवय में गुरू सम्यक पाया, हम सब को वह मार्ग बताया
जिसपर चल पहुँचे सिध्दराज, देखा इन नयनो से आज।
सेमरखेड़ी का दरवार..........

३. मंदिर शोभित मन आनन्दित, ध्यान गुफा में मन कर केन्द्रित
धन्य धन्य गुरूराज, देखा इन नयनो से आज।
सेमरखेड़ी का दरवार..........

४. हे गुरू तुमरे चरण नमामि, जिन वचनो के तुम हो दानी।
मैं भी हो जाऊँ भव पार, देखा इन नयनो से आज।
सेमरखेड़ी का दरवार..........

(२५६)

तर्ज:-(तुम्ही मेरे मंदिर ....)

क्षमा है हमारी, सभी पर क्षमा है ,
क्षमा दान देना, क्षमा हम पे करना।

१. हुए अपराध जो, निशदिन हमसे।
जाने-अनजाने या, हों प्रमाद वश से।।
अपनी सरलता से, क्षमा सब करना।
पुण्य और यश का, सेहरा पहनना।।
क्षमा है हमारी.....

२. बैर मन में बांधे, भव-भव जावे।
दुर्गतियों में, दु:ख पहुँचावे।।
क्षमा सब पे करना, क्षमा धारी भगवन।
धर्म आत्मा का, पहला और अन्तिम।।
क्षमा है हमारी.....

३. भेदज्ञान करना, तत्व निर्णय धरना।
कौन है पराया, कौन जग में अपना।।
सब जीव आत्मा, हैं शुध्द आत्मा।
बनें परमात्मा, यही भाव रखना।।
क्षमा है हमारी.....क्षमा है हमारी.....

(२५७)

चिद्रूप चिदानन्द सागर, स्वानुभव में विराजो आकर।

१. जबसे देखा है मैने रुप अखंण्ड़,
मिथ्यातम तो हुआ है खण्ड़-खण्ड़
मैं तो हूँ तुम्हारा ही चाकर, स्वानुभव में विराजो आकर॥
चिद्रूप चिदानन्द ....

२. ओंमकार में पांचो परमेष्ठि हैं,
ओंमकार मयी आतम श्रेष्ठी है।
ओंमकार का सुमरण प्रियकर, स्वानुभव में विराजो आकर॥
चिद्रूप चिदानन्द ....

३. आतम में पांचो आनन्द हैं,
पायेंगे वही जो मुक्ति पथ हैं।
जिनवाणी जी अति हितकर, स्वानुभव में विराजो आकर॥
चिद्रूप चिदानन्द ....

४. निज प्रभुता है तारण वाणी में,
गुरुतार सुवाणी कल्याणी में।
यही सत-शिव-सुन्दर-सुखकर, स्वानुभव में विराजो आकर॥
चिद्रूप चिदानन्द ....

विश्व भ्रमण तेरे आगे खड़ा, तू कैसा पड़ा।
जब जागे तब हुआ सबेरा, आगम का यह पंथ नवेरा।
तारण पथ पर होजा खड़ा, तू कैसा पड़ा।

(२५८)

जगती के तारण हार तुम्हारी जय हो जय हो।

१. ज्ञानी भी बोले जय जय, अज्ञानी जन भी जय जय।
शुध्दातम सरकार, तुम्हारी जय हो जय हो॥

२. धरती से अम्बर गूंजे, सागर से पर्वत गूंजे।
निज आतम सरताज, तुम्हारी जय हो जय हो॥

३. शास्त्रों में जय जय होवे, मंदिर में जय जय होवे।
नित्यानन्द का ताज, तुम्हारी जय हो जय हो॥

४. स्वस्तिक केशरिया बोले वीणा के तार बोले।
मधुरम मधुर है आवाज, तुम्हारी जय हो जय हो॥

५. आप्त और आगम की जय हो, सदगुरु तारण की जय हो
हम को है तुम पर नाज, तुम्हारी जय हो जय हो॥

६. सिध्दोहं पद की जय हो, सोहं की विधा जय हो।
हम को दिया है गुरु वह राज, तुम्हारी जय हो जय हो॥

(२५९)

तन मन है पुलकित आनन्द से,
चैतन्य चिदानन्द के चिंतवन से।

१. चितप्रकाशी के अविरल दोहान से,
ध्रुव धाम के तुम मन मोहन से।
भेद ज्ञान के शुभ सम्बोधन से,
चैतन्य चिदानन्द के चिंतवन से॥ तन मन है.............

२. सत-शिव का मनन सुन्दर तम है,
उपमायें सभी तुच्छ और कम हैं।
गुण वर्णत हूँ नेति-नेति से,
चैतन्य चिदानन्द के चिंतवन से ।।
तन मन है.................

३. शुध्दातम की बस लगन लगी,
और ध्यान में आकर थमी-थमी ।
एकत्व-एकाकी, एकाग्रता से,
चैतन्य चिदानन्द के चिंतवन से ।।
तन मन है.................

(२६०)

निज गुण तो सदा स्वाधीना, पाओगे नित्य नवीना।

१. तैंतीस सागर चर्चा चलती है,
सुर जिव्हा कभी न थकती है।
पाते हैं सौख्य प्रवीणा, पाओगे नित्य नवीना।

२. जिसने भी ध्याया निजता को,
पाया है अपनी प्रभुता को।
रहते हैं सदा लवलीना, पाओगे नित्य नवीना।

३. सुख अनुपम-अकथ-अपरमित है,
मोक्ष तत्व सदा से शोभित है
प्रगटाओ प्रभु स्वय चेतना, पाओगे नित्य नवीना।

:=:=:=:==:==:=:=:=:=:==:==:=:==:=:=:

(२६१)

तर्ज:-(साजन मेरा उसपार है........)

जिन गुण सम्पत्ति मुझे प्राप्त हो, जिनवर वचन सदा साथ हो ।

१. जिसके लिये जीवन पाया है, दाँव पर उसको लगाया है।
पौरुष सबल, उच्च प्राप्त हो, जिनवर वचन सदा साथ हो।
जिन गुण सम्पत्ति.........

२. आर्ष वचन मिले आप्त के, यही तो मेरे भव विनाश के।
आस्था और दृढ़ता अति प्राप्त हो, जिनवर वचन सदा साथ हो
जिन गुण सम्पत्ति.........

३. सप्त भयों का विनाश हो, वीतरागी आतम नाथ हो।
अवल वली जिन वच प्राप्त हो, जिनवर वचन सदा साथ हो।
जिन गुण सम्पत्ति.........

४. निज की ही प्रभुता विकास हो, शुध्दं शुध्द प्रभा साथ हो।
सुन्न सत्ता मय वे क्षण प्राप्त हो, जिनवर वचन सदा साथ हो।
जिन गुण सम्पत्ति.........

(२६२)

तर्ज:-(सावन का महीना ....)

तेरी जिन गुण सम्पत्ति, प्रगटाओ चेतन नाथ।
तुझमे भरी लवालब, तेरे शीतल थल के साथ ।।

१. तुझमें अपरमित ज्ञान गुण खजाना,
तू ही तो सब से श्रेष्ठ और महाना।
पाओगे वह धरातल, जो शान्ति तल का गात।
तुझमे भरी लवालब, तेरे शीतल थल के साथ ।।

तेरी जिन गुण सम्पत्ति....

२. तू ही है अक्षय, तू ही ब्रह्म ज्ञानी।
कहते हैं एक मत, सभी भेद ज्ञानी।
अब क्या रह गया बाकी, हे संकट मोचन नाथ।
तुझमे भरी लवालब, तेरे शीतल थल के साथ।।
तेरी जिन गुण सम्पत्ति....

३. तीन जगत का, मही भूप आतम।
कहाँ पड़े दल-दल में, पाला मोह-मातम।
हे सिध्द स्वरुपी शुध्दं, मिला सुन्दर सुखद प्रभात।
तुझमें भरी लवालब, तेरे शीतल थल के साथ।।
तेरी जिन गुण सम्पत्ति....

(२६३)

तर्ज:-(बसो मेरे नैनन में नंदलाल...........)

चेतन है अविकार, मिला मुझे आनन्द अपरंपार।

१. अनुभव कहता सबसे न्यारा, तीन लोक में सार।
मिला मुझे आनन्द अपरंपार ......चेतन है अविकार..

२. अब तक जिसको भूले थे हम, ऐक मेक हुआ प्यार।
मिला मुझे आनन्द अपरंपार ......चेतन है अविकार..

३. जिन वाणी से पाया मैने, अपना रुप शून्यागार।
मिला मुझे आनन्द अपरंपार ......चेतन है अविकार..

४. मैं अब उस में पूर्ण समांऊ लगन लगी बारम्बार।
मिला मुझे आनन्द अपरम्पार ......चेतन है अविकार..

(२६४)

तर्ज:-(साजन मेरा उस पार है.........)

आतम तुम्हे नमस्कार है, सत्ता तुम्हारी स्वीकार है।

१. सर्वो परी हो तीनो लोक में, जान लिया तुम्हे ज्ञान में।
जिनवर वचन शिरोधार्य है, सत्ता तुम्हारी स्वीकार है।
आतम तुम्हे नमस्कार है.....

२. भेद विज्ञान में बसे हो तुम, करते रहें तत्व निर्णय हम।
वस्तुस्वरुप से निर्भार है, सत्ता तुम्हारी स्वीकार है।
आतम तुम्हे नमस्कार है.....

३. चेतन तुम्ही ज्ञायक-ज्ञान हो, ज्ञेय में मेरे विद्यमान हो।
ज्ञाता तुम्हारा जानन हार है, सत्ता तुम्हारी स्वीकार है।
आतम तुम्हे नमस्कार है.....

४. जब से पाया है तुम्हे ज्ञान मय, ध्यान के लक्ष्य महान में।
सोहं-सिध्दोहं ब्रह्म वाक्य है, सत्ता तुम्हारी स्वीकार है।
आतम तुम्हे नमस्कार है.....

श्मशान में बैठे हैं हम सब,
क्योंकि-हर एक के माथे पर लिखा है-
कब तक ?
फिर भी मोह से ग्रसित हैं हम सब,
बस भेदज्ञान नहीं है जब तक।

(२६५)

तर्ज:-(मैं का करुं राम मुझे ....)

मैं करता हूँ प्रणाम, गुरूतार मिल गया।-२
गुरूतार मिल गया, तारणहार मिल गया ।।
मैं करता हूँ प्रणाम....

१. तारण वांणी ही तो मेरी, माता जिनवांणी है।
जिनवांणी मिली श्री, ध्रुव की कहानी है ।।
आतम ज्ञान मिला है, सच्चा धर्म मिल गया।
मैं करता हूँ प्रणाम....

२. अब तक गये जो भी सिध्द लोक, आगे जायेंगे।
उनको बताया गणधर, स्वानुभव वे पायेंगे ।।
भव से तरने को ही तारण, पंथ मिल गया।
मैं करता हूँ प्रणाम....

(२६६)

समाता हर्ष नही मन मैं, हृदय के कोने-कोने में।

१. मिले श्री सदगुरू के वयना, हुई निज आतम की अर्चना।
हुआ प्रक्षाल मन अंगना, ज्ञान रवि अक्षय होने में ।।
समाता हर्ष नही मन मैं.........

२. मिटे वच भेद वर्ग सारे, उदित उवंकार से हारे।
भेद विज्ञानी पल न्यारे, श्रध्दा के सक्षम होने मे ।।
समाता हर्ष नही मन मैं.........

३. अहो जिनवांणी माँ मेरी, श्री गुरूवच अभय भेरी।
अहा मैं पागया सर्वस्व, निमिष निज ध्यान होने में।
समाता हर्ष नही मन मैं.........

(२६७)

तर्ज:-(सावन का महिना ....)

सबसे सुनहरे पल का, नित सुमरण करती मैं।
बार-बार उसे पाऊँ, यह चिंतन करती मैं ।।

१. दुखों से भरा है, संसार सिंधु।
इनसे मोड़ि दृष्टी, पाना मोक्ष बिन्दु ।।
उसी लगन में डूवी, आनन्दित होति मैं।
बार-बार उसे पाऊँ, यह चिंतन करती मैं ।।
सबसे सुनहरे पल का....

२. आत्मा का नाम ही, सुख की है गागर।
आत्मा के ज्ञान गुण, मिले महासागर ।।
नि:शल्य निस्पृह होकर, अवगाहन करती मैं।
बार-बार उसे पाऊँ, यह चिंतन करती मैं ।।
सबसे सुनहरे पल का....

३. गुरूतार वांणी, माता जिनवांणी।
तुम्ही मेरे तारक, नित प्रति प्रणामि ।।
तुमरी प्रसादी का ही, रस पान करती मैं।
बार-बार उसे पाऊँ, यह चिंतन करती मैं ।।
सबसे सुनहरे पल का....

जागो उठो चेत जाओ अभी,
कहते आचार्य भगवन्त सबसे यही।
मुक्ति का मार्ग अनादि से है,
तारण पंथ मिला, गुरूवर से सही ।।

(२६८)

गजल

निज आत्म ज्ञान से ही, मेरा अज्ञान हट गया।
किश्ती में मेरी आके, समन्दर सिमट गया।।-२

१. मैं शुध्दता का सागर, मैं शुध्दता का घट।
मैं शुध्दता की गागर, मैं शुध्दता का पट ।।
इस ज्ञान से ही मैं तो, भगवान बन गया।
कश्ती में मेरी आके, समन्दर सिमट गया।।-२
निज आत्म ज्ञान से........

२. मैं पूर्ण ज्ञान गम्य हूँ, परिपूर्ण ब्रह्म हूँ।
मैं ब्रह्मा विष्णू शंकर, भेद ज्ञान रम्य हूँ।।
स्वनुभूति के गगन में, मेरा ब्रह्म मिल गया।
कश्ती में मेरी आके, समन्दर सिमट गया।।-२
निज आत्म ज्ञान से........

३. मैं ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता, ज्ञायक हूँ ज्ञान मय।
स्वाभाव से विभाव पर, करता सदा विजय।।
मैं सिध्द प्रभू सिध्दं, ब्रह्मास्मि बन गया।
कश्ती में मेरी आके, समन्दर सिमट गया।।-२
निज आत्म ज्ञान से........

श्रध्दा सीप में भर आत्मा का नाम,
मोती से जान, ज्ञान गुण की पहिचान,
यही भव तरने की, सबसे पहली उड़ान।।

(२६९) *लोक गीत*

जिनवाणी मैया प्रणाम, अब हम घरे चले।
संसारी हैं गृहस्थी वाले, हम को दो सद ज्ञान।।
अब हम घरे चले.....

१. मिथ्या-माया मोह नशावें, क्रोध कषायों को दूर भगावें।
तेरी भक्ति का मिले पान, अब हम घरे चले।।
जिनवाणी मैया प्रणाम...

२. दर्शन को चैत्यालय आवें, स्वाध्याय से ज्ञान वढ़ाबें।
करलें आत्म कल्याण, अब हम घरे चले।।
जिनवाणी मैया प्रणाम...

३. भेदज्ञान-तत्व निर्णय पालें, सम्यक दर्शन ही उर धारें।
अन्त लहें निर्वाण, अब हम घरे चले।।
जिनवाणी मैया प्रणाम...

४. घर में रहकर घर से न्यारे, आत्म ध्यान में क्षण जायें सारे।
दो माँ यह वरदान, अब हम घरे चले।।
जिनवाणी मैया प्रणाम...

---ooo---ooo---ooo---

"मौन सर्वोत्तम भाषण है"
"वाणी वीणा बने, मन की पीड़ा हने"

(२७०)

अब किसको क्या सुनाना, अब किसको क्या बताना।
चुप शान्त हो के बैठो, स्व संवेदन में आना॥

१. क्यों शक्ति का ह्रास हो, समय काल का न ग्रास हो।
अब जल्दी-जल्दी लूटो, अनन्त गुण का सुख खजाना॥
अब किसको क्या सुनाना....

२. मेहमान बनके आया, स्वामित्व क्यों जमाया।
संसार के समर से, एक दिन तो कूच करना॥
अब किसको क्या सुनाना....

३. गुरु से प्रसाद पाया, आतम में मन लगाया।
निज आत्म ज्ञान भाया, अब और क्या है पाना।
अब किसको क्या सुनाना....

४. निज में लगन बढ़ाले, यह वक्त जा रहा है।
छोड़ो सभी आसक्ति पहनो विरक्ति बाना॥
अब किसको क्या सुनाना....

५. मौनी समाधि धारो, एकाग्रता संवारो।
सम्यक्त प्राप्त करके, निज ध्यान में समाना॥
अब किसको क्या सुनाना....

६. असंख्यात कर्म निर्जर, एक-एक समय में होगें।
भव-तीन-पांच-सात-दस, मुक्ति महल रबाना॥
अब किसको क्या सुनाना....

जय तारण तरण
उत्तम क्षमा

नोट :- (गारी अब तक बहुत गांई हैं,
अबसे गाना ज्ञान की गारी।
शिक्षा हो सद ज्ञान की जिसमें,
अब गाने की तुमरी बारी)

ज्ञान गारी (०१)

तर्ज:-(गारी.........)

चौका की चार शुध्दी ध्यान में धरियो।
तुम तो चतुर सुजान मोरे लाल॥

१. द्रव्य शोध कर बीन के लइयो।
तब तुम भोजन बनइयो मोरे लाल॥
चौका की चार शुध्दि............

२. जहाँ तुम भोजन बनाओ प्यारी बहना।
क्षेत्र रहे शुध्द शान्त मोरे लाल॥
चौका की चार शुध्दि............

३. काल विचार अति अस्त न भोर।
मन की तृष्णा घटइयो मोरे लाल॥
चौका की चार शुध्दि ....

४. भाव रहें शुभ शुध्द तुम्हारे।
फिर देखो नौनिहाल मोरे लाल॥
चौका की चार शुध्दि ....

ज्ञान गारी (०२)

तर्ज:-(अहो मेरे सज्जन आये.........)

अहो मेरे श्री संघ-२ आये,
सो आठ दिना शिक्षण शिविर लगे।
अहो तारण पंथ बताये-२,
सो हम तारण पंथी भये।।

१. अहो ब्रह्मानन्द-२ जी, फूलना सुनाई।
सो आनन्द मगन झूला झूल रहे।। टेक ।।

२. अहो आत्मानन्द-२ जी ने, क्रिया अठारह बताई।
सो हम सब पाल रहे।। टेक ।।

३. अहो शान्तानन्द-२ जी ने, लेश्या बताई।
सो भाव सुर्निमल होत भये।। टेक।।

४. अहो परमानन्द-२ जी, त्रिवेणी सुनाई।
सो सम्यक्त की रुचि गाढ़ भये।। टेक।।

५. अहो पंडित जी ने २, मोक्षमार्ग बताये।
सो सबने ही राह लये।। टेक।।

६. अहो उषा-सरला २, बहन जी ने।
छह छह ढ़ाल दये।। टेक।।

७. अहो ज्ञान भोजन बनाये २।
सो सबने आनन्द रस पान किये।। टेक।।

ज्ञान गारी (०३)

तर्ज:-(गारी.........)

बेटा-बेटी ब्याहे तुम्हारे, अब अपनी सुध लेओ मोरे लाल।

१. काल चक्र कब सिर पर आये,
इसका नहीं विश्वास मोरे लाल।

२. चार कषायों को अब हम समझे,
इनकी घटति घटइयो मोरे लाल।

३. मोह महा रिपु जग दु:ख कारण,
पर से ममता हटइयो मोरे लाल।

४. मिथ्यात्व पाले जग भटकाये,
पंच परमेष्ठी पिछानो मोरे लाल।

५. निश्चय से आतम देव हमारो,
तू तो स्वयं भगवान मोरे लाल।

६. संसार बिच रहें कमलन जैसे,
हम न किसी के न कोई मोरे लाल।

७. षट आवश्यक पालन करियो,
पंच अणुव्रत धारो मोरे लाल।

८. तारण पंथ धार तरण बन जाओ,
हम अपने तारणहार मोरे लाल।

९. सुख-दु:ख में हम कबहुँ न भूलें,
समता सम्यक पायें मोरे लाल।

बेटा-बेटी ब्याहे तुम्हारे, अब अपनी सुध लेओ मोरे लाल।

ज्ञान गारी (०४)

तर्जः-(अंगना कैसे के बुहारुँ.........)

मनवा कैसे के बुहारुँ, मोहे श्री संघ बतलाय।

१. क्रिया अठारह धारो बहना, जनम सफल हो जाय।
तारण पंथ की करो साधना, मुक्ति मार्ग खुल जाय॥
मनवा कैसे के ....

२. गुरु वाणी का अध्ययन करलो, आगम आप्त बताय।
फूलनाओं में डूबे चेतन, अनुभव माणिक पाय॥
मनवा कैसे के ....

३. छह लेश्या को जान के भविजन, भाव अशुभ बह जाय।
शुभ और शुध्द में रहें निरंतर, ममलह ममल को पाय॥
मनवा कैसे के ....

४. मोक्ष मार्ग है परम प्रकाशक, बढ़ते-चढ़ते जांय।
छह ढाला को संग में लेकर, मोक्ष महल को पांय॥
मनवा कैसे के ....

ज्ञान गारी (०५)

(दैनिक क्रिया)

तर्जः-(अंगना कैसे के बुहारुँ............)

अंगना ऐसे जतन बुहारुँ, कोई जीव कहीं मर न जाय।

१. भोर भये उठ जाग बावरे, आलस दूर भगाय।
अपने आतम की सुध लेओ, जीवन बीता जाय॥
अंगना ऐसे जतन बुहारू, कोई जीव कहीं मर न जाय।

२. दर्शन-सामायिक फिर प्रतिक्रम, जाप करो मन लाय।
मनुआ भटके,माला सटके, यह तो ढोंग दिखाय॥
अंगना ऐसे जतन बुहारुँ, कोई जीव कहीं मर न जाय।

३. घर धन्धे का काम करो पर, क्षण-क्षण राग हटाय।
जल-कमलन से रहो सदा तुम, आतम प्रीत बढ़ाय।
अंगना ऐसे जतन बुहारुँ, कोई जीव कहीं मर न जाय।

४. श्रध्दा,क्रिया,विवेक संम्हालो, श्रावक तभी कहाय।
इस जग में दुर्लभ है नरतन, जन्म सफल कर जाय॥
अंगना ऐसे जतन बुहारुँ, कोई जीव कहीं मर न जाय।

५. वीर वचन पर चलो बहिन तुम, गुरु रहे समझाय।
आतम-परमातम तब होगी, कर्म भस्म हो जाय॥
अंगना ऐसे जतन बुहारुँ, कोई जीव कहीं मर न जाय।

ज्ञान गारी (०६) *तर्जः-(गारी........)*

आतम की महिमा इनने बताये, मेरे सदगुरु आये।

१. हम तो थे गुरु निपट अज्ञानी,
मिथ्या भावों में परिणति जानी।
आतम परमातम है तुमने बताये, मेरे सदगुरु आये॥
आतम की महिमा.......

२. अपने विचारों को देखो सभी नित,
एक समय की पर्याय हैं सब

अहा शून्य में सत्ता,को हम पाये, मेरे सदगुरु आये ।।
आतम की महिमा.......

३. धन्य गुरु तुम तारण तरण हो,
ब्रह्मानन्द से श्री संघ सब हो।
तारण तरण हम भी,बनने आये, मेरे सदगुरु आये ।।
आतम की महिमा.......

ज्ञान गारी (०७)

तर्जः-(गारी.........)

बागों में आम केरा किनने लगाये, मेरे सद्‌गुरु आये।

१. उनके श्री मुख से सुनी जिनवाणी,
गुरुवाणी सुन मन आनन्द पाये।
मेरे सद्‌गुरु आये...............बागों में आम ...

२. सम्यक दर्शन प्राप्त करन को,
भेदज्ञान तत्व निर्णय बताये।
मेरे सद्‌गुरु आये...............बागों में आम ...

३. मैं आत्मा हूँ यह तन नाहीं,
चिंतन करो बार बार समझाये।
मेरे सद्‌गुरु आये...............बागों में आम ...

ज्ञान गारी (०८) *तर्जः-(गारी.........)*

ॐ नमः सिध्दं की महिमा बताये, मेरे सद्‌गुरु आये ।।

१. ॐ नमः सिध्दं मंत्र बलशाली,
जो जपे मुक्ति के पथ पर जाय।
मेरे सदगुरु आये..............

२. ॐ नमः सिध्दं में परमेष्ठि प्रभु हैं,
सिध्द स्वरूप निज शुध्दातम पाय।
मेरे सदगुरु आये..............

३. सिध्द नमन-शुध्दातम नमन है,
पंच परमेष्टी को ज्ञान कराय।
मेरे सदगुरु आये..............

४. ॐ नमः सिध्दं,श्री गुरु मंत्र है,
ॐ नमः सिध्दं,सांसों में समाय।
मेरे सदगुरु आये..............

५. अब पुरुषारथ की हमरी है बारी,
मंत्र जपो और ध्यान लगाय।
मेरे सदगुरु आये..............

ज्ञान गारी* (०९) *तर्जः-(गारी.........)

घर घर में अलख गुरु तुमने जगाये, मेरे सदगुरु आये

१. जब जे सद्‌गुरु चैत्यालय आये-२, ज्ञान की गंगा इनने बहाये।
मेरे सद्‌गुरु आये ....घर-घर में........

२. जे श्री सद् गुरु जन हित चाहें, शिक्षण शिविर तब इनने लगाये।
मेरे सद्गुरु आये ....घर-घर में........

३. जब जे सद्गुरु सामायिक बैठे, ज्ञान-ध्यान-तप बल इनने बढ़ाये।
मेरे सद्गुरु आये ....घर-घर में........

४. अब जे सद्गुरु बार बार आवें, मुक्ति का मारग सबको बताये।
मेरे सद्गुरु आये ....घर-घर में........

५. जब जे सद्गुरु प्रवचन दे रहे, शुध्दातम महिमा इनने बताये।
मेरे सद्गुरु आये ....घर-घर में........

६. श्री संघ सब संयम धारी, सम्यकदर्शन इनने बताये।
मेरे सद्गुरु आये ....घर-घर में........

:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖

ज्ञान गारी (१०)

तर्ज:-(गारी.........)

नगरी में तोरण हमनें लगाये (बंधाये)
मेरे श्रीसंघ आये /नगरी में ....

१. कबसे प्रतीक्षा, थी गुरू तुमरी।
आज मनोरथ पूरण पाय, मेरे श्री संघ आये।।
नगरी में............

२. ज्ञान ध्यान और स्वाध्याय की महिमा।
तीन समय की सामायिक पाय, मेरे श्री संघ आये।।
नगरी में............

३. प्रासुक जल और शुध्द आहार लिये।
रसना इन्द्रिय से राग घटाय, मेरे श्री संघ आये।।
नगरी में............

४. वर्षावास के थे वे सुखद क्षण।
जिनवाणी अमृत सबने ही पाय, मेरे श्री संघ आये।।
नगरी में............

५. गुरूवाणी की महिमा अपरिमित।
भेद ज्ञान उर भवियन लाय, मेरे श्री संघ आये।।
नगरी में............

:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖:⊖

ज्ञान गारी (११)

तर्ज:-(गारी.........)

गारी न समझो भविजन इसको , तुमरी बात है तुम जानो।
सप्त व्यसन को तजो मेरे भैया(मेरी बहनो), इनसे हानि बड़ी मानो।।

१. जुआं खेलना निंद्य कर्म है, घर को बैरी उजाड़ जानो।
२. माँस भक्ष त्रस जीव घात कर, राक्षस की गिनती में आनो।
३. मद्य पिये मतवाला होय फिर, अपयश बुध्दि,भ्रष्ट जानो।
४. वैश्या को संग कबहुँ न करियो, एकदेश ब्रह्मचर्य ठानो।
५. नरक बीच में जांये शिकारी, आतम सबकी सम जानो।
६. चोरी से घर कबहुँ न भर है, बिना दिये द्रव्य न लेनो।
७. पर स्त्री को नमन जु करियो, माता भगिनी सुता जानो।

ज्ञान गारी (१२)

तर्ज:-(गारी.........)

गारी गइयो सदा आतम ज्ञान की,गारी सुनो बहुमान की।
देव गुरु है अपना आतम, धर्म तीर्थ कहलाये।
भेदज्ञान तत्व निर्णय करके, सम्यक दर्शन पाये ।।
गारी गइयो तुम आतम ध्यान की, गारी सुनो बहुमान की...
गारी गइयो सदा आतम ज्ञान की...
छह अनायतन तजियो बहिना, षट आवश्यक पालो ।।
स्वाध्याय-संयम और तप कर, निज आतम को ध्यालो।
गारी गइयो तुम सच्चे श्रध्दान की, गारी सुनो बहुमान की...
गारी गइयो सदा आतम ज्ञान की...
संस्कार का पहला लक्षण, चैत्यालय नित जाओ।
अपने बेटा-बेटी को तुम, संस्कार दे जाओ ।।
गारी गइयो तुम जीवन महान की, गारी सुनो बहुमान की...
गारी गइयो सदा आतम ज्ञान की...
भोजन भजन और दिनचर्या में, आत्म ज्ञान हो सन्मुख।
स्वाध्याय और सत्संग करके, मिटें विकल्पों के दुःख।
गारी गइयो तुम सच्चे सुख खान की, गारी सुनो बहुमान की...
गारी गइयो सदा आतम ज्ञान की...
सप्ततत्व की श्रध्दा करके, सम्यक दर्शन पाओ।
जिन वाणी और निज आतम की, दृढ़ता श्रध्दा लाओ ।।
गारी गइयो तुम चेतन भगवान की, गारी सुनो बहुमान की...
गारी गइयो सदा आतम ज्ञान की...

नोट :- (बन्ना बन्नी दादरे सोहरे, गाओ तो कुछ ऐसे हों।
समझदारी का परिचय देवें, वृथा पाप के बंध न हों ।।)

बन्ना-बन्नी

१. मंदिर चलो बन्नी जी क्या देर दार है,
शहनाई बाजे द्वार तुम्हारा इंतजार है।
माथे बन्नी के बैंदी, किलफों से बहार है,
शहनाई बाजे द्वार तुम्हारा इंतजार है।
मंदिर चलो बन्नी जी............................

२. बन्नी जपना सदा नमोकार, यही तो तेरे जीवन का श्रगांर।
गुरु मंत्र जपो बारम्बार, यही तो तेरे जीवन का श्रगांर ।।
माथे में बन्नी बेंदी पहिनना, जाओगी तुम ससुराल।
यही तो तेरे माथे का श्रगांर, बन्नी जपना सदा ....

३. तेरे जीवन में आये बहार, चलो रे बन्ना तारण तरण दरबार।
पहली क्रिया हो चैत्यालय दर्शन,
बाद में सेहरा और झूमर को धारण ।।
सुख-शान्ति मिलेगी अपार,
चलो रे बन्ना सदगुरु के दरबार।
तेरे जीवन में आये बहार,
चलो रे बन्ना तारण तरण दरबार।..........

४. हमने मनाये गुरुतार, तुमने मनाये महावीर।
डालो बन्नी डालो माला, शादी की यह रीत।।
बेंदी लाया तेरे लिये मैं, किलफें भी ले आया।
संग बाराती आये मेरे, तेरे द्वारे आया।
पहनो बन्नी डालो माला, शादी की यह रीत।।
हमने मनाये गुरुतार, तुमने मनाये महावीर........

दादरे - सोहरे

मैं जन्मी हूँ, कि जैन कुल में, परम सौभाग्य है मेरा।
न जाने कौन तप कीना, न जाने कौन व्रत कीना।।
कि पाया धर्म जिन गुरु का, कि पाया ज्ञान आतम का।
सासु जी भोजन मैं बनाऊंगी, सभी को मैं जिमाऊंगी।।
तुम्हारी आशीष छाया में, सुखी जीवन सजाऊंगी।
मैं जन्मी हूँ, कि जैन कुल में, परम सौभाग्य है मेरा ....

अंगना तुम्हारे पलना होगा, तारण तरण सा ललना होगा।
सासु जी आवें चरुआ चढ़ावें, आशीष देकर नजरें उतारें।।
बेटा तुम्हारा ज्ञानी होगा, तारण तरण सा ललना होगा।
अंगना चच्चा के पलना होगा........तारण तरण सा ......

इति शुभम्